मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 61 | अंक : 05 | नवम्बर, 2020 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

अप्प दीपो भवः

एक बार तथागत बुद्ध के प्रमुख शिष्य आनंद ने व्यथित होकर उनसे कहा था, ''गुरुदेव! किसी को अपने कर्त्तव्यपालन की चिन्ता नहीं है। सब स्वयं को अच्छा बताकर दूसरों को दोष दे रहे हैं। आखिर क्या होगा भगवन्!''

आनन्द की बात सुनकर बुद्ध मुस्काए और उन्होंने शिष्य की पीठ सहलाते हुए उससे कहा ''अप्प दीपो भवः।'' यह बौद्ध दर्शन का महत्त्वपूर्ण सूत्र वाक्य है जिसका अर्थ है अपने दीपक स्वयं बनो। मैं (I) का परिष्कार हम (WE) का परिष्कार है और यह हम (WE) ही सारा संसार है। हम दूसरो को दोष न देखकर स्वयं का परिष्कार कर लें। दूसरो के कर्त्तव्य क्या हैं, यह उन्हें न बताकर मेरे स्वयं के कर्त्तव्य क्या हैं यह समझकर जिस दिन काम करना शुरू कर देंगे, उस दिन संसार का भला हो जाएगा। तेरापंथ धर्मसंघ सम्प्रदाय में अणुव्रत अभियान चलता है जिसमें छोटे-छोटे संकल्प लेकर सुधार की बात कही गई है। आचार्य तुलसी रचित अणुव्रत गीत में आता है-

सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा,
तुलसी अणु व्रत सिंहनाद सारे जग में पसरेगा,
मानवीय आचार-संहिता में अर्पित तन-मन हो,
संयममय् जीवन हो।

व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से समूचा संसार... यह श्रृंखला है। इस प्रकार सुधार की शुरूआत व्यक्ति से होती है। व्यक्ति का सुधार ही राष्ट्र का सुधार है।

महात्मा बुद्ध का यह संदेश हम शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वालों को ग्रहण करना चाहिए। एक-एक शिक्षक यदि स्वयं दीपक बन जाए अर्थात अपने कर्त्तव्य को भलीभांति समझकर उसका पालन करने लग जाए तो स्कूल, समाज व देश/प्रदेश सब का मंगल हो जाए। इसमें कोई संशय नहीं है। मैं शिक्षक की गरिमा व महिमा का प्रबल पक्षधर हूँ। इसे आप देखते ही हैं। मुझे वेदना तब होती है, जब मुझे यह विदित होता है कि कई शिक्षक समय पर स्कूल नहीं जाते, पूरे समय वहाँ नहीं रुकते अथवा वांछित कर्त्तव्य का पालन नहीं करते। मित्रों, याद रखिए, कर्त्तव्य का अनुगमन करने वाले का सिर ऊँचा रहता है। समझदार को इशारा ही काफी होता है। मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि आपको अपना सर कभी नीचा न करना पड़े। आपकी गरिमा और महिमा उत्तरोतर बढ़े, मैं यही चाहता हूँ।

कोविड-19 महामारी के कारण बनी परिस्थितियों के मध्य हमें शिक्षा का आलोक फैलाना है। शिक्षक स्वयं खूब पढ़े और अपने शिक्षण, लेखन एवं वाणी कौशल को निखारे। समाज बहुत आशा एवं विश्वास के साथ गुरुजन आपकी ओर देख रहा है। इसे सार्थक करने के लिए आपको कड़ी मेहनत एवं शब्द साधना करनी होगी। विभाग शीघ्र ही एक व्यापक निरीक्षण अभियान चलाएगा जिसमें विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों को देखा-परखा जाएगा।

इस माह 14 नवम्बर एक साथ तीन खुशियां लेकर आ रहा है-रोशनी व उल्लास का त्यौहार दीपावली, हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू का जन्मदिन और बाल दिवस। गुरु नानक जयन्ती इस माह 30 नवम्बर को है। इन सभी मुबारक उत्सव/पर्वों के लिए आपको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"शिक्षक स्वयं खूब पढ़े और अपने शिक्षण, लेखन एवं वाणी कौशल को निखारे। समाज बहुत आशा एवं विश्वास के साथ गुरुजन आपकी ओर देख रहा है। इसे सार्थक करने के लिए आपको कड़ी मेहनत एवं शब्द साधना करनी होगी।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 61 | अंक : 5 | कार्तिक, २०७७ | नवम्बर, 2020

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- e-कक्षा : भविष्योन्मुखी पहल 5

आलेख

- आधुनिक भारत के निर्माता : पं. जवाहरलाल नेहरु 6
  कमल नारायण शर्मा
- चाचा नेहरु के जीवन से जुड़े दिलचस्प किस्से 7
  मेघाराम चौधरी
- ऑनलाइन शिक्षा : उपयोगिता एवं महत्त्व 8
  गोविन्द सिंह डोटासरा
- शिक्षा राष्ट्र निर्माण की शाश्वत प्रक्रिया 10
  प्रकाश वया
- ज्योति पर्व का स्वच्छता संदेश 12
  शबनम भारतीय
- राष्ट्रीय एकता में भाषाओं का योगदान 13
  डॉ. गिरीशदत्त शर्मा
- सफलता एक पथ 14
  सुनिता पंचारिया
- 'जीवन की सीख' क्रिकेट के शांति दूत से 15
  आत्माराम भाटी
- भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की महत्त्वपूर्ण जानकारी : **चन्द्रभूषण शर्मा** 17
- रंगों के रहस्य 19
  मनोज कुमार यादव
- लड़कियों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण 20
  सुमन यादव
- हरित पाठशाला और स्काउटिंग 22
  अजय सिंह राठौड़
- पढ़ना लिखना जिनके लिए नितनेम था 30
  ओमप्रकाश सारस्वत
- समावेशी शिक्षा का महत्त्व 31
  स्नेहलता शर्मा
- शिक्षा में प्रवर्धक उपकरणों का उपयोग 32
  डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यार्थी 33
  मानाराम जाखड़
- सकारात्मक विचार 35
  मंजु शर्मा
- गिजुभाई का बाल शिक्षा में योगदान 36
  रानू सिंह

कविता

- साथ सभी हम निकलेंगे 9
  किशन गोपाल व्यास

रपट

- राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 23
  योगेन्द्र कुमार शर्मा

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- बाल शिविरा 37–38
- शाला प्रांगण 44–48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 39–43

- बीज हूँ मैं....
  लेखक : डॉ. दिलीप कुमार पारीक
  समीक्षक : **डॉ. हेमंत कुमार**
- पळकती प्रीत
  रचनाकार : डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित
  समीक्षक : **डॉ. रामरतन लटियाल**
- दो घूंट पाणी
  लेखक : डॉ. देवकिशन राजपुरोहित
  समीक्षक : **बी.के. व्यास सागर**
- डिंगल रसावळ
  लेखक : दीपसिंह भाटी 'दीप' रणधा
  समीक्षक : **डॉ. गजादान चारण**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

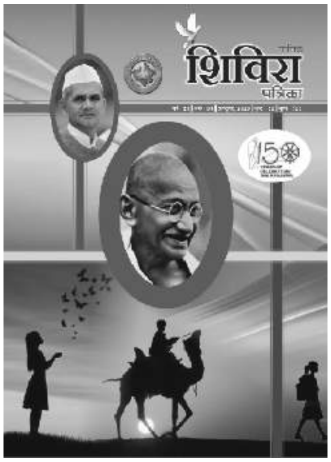

▼ चिन्तन

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत्।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्।।

भावार्थः एक-एक क्षण गवाएं बिना विद्या पानी चाहिए और एक-एक कण बचा करके धन इकट्ठा करना चाहिए। क्षण गंवाने वाले को विद्या कहाँ और कण को क्षुद्र समझने वाले को धन कहाँ?

पाठकों की बात

- माह अक्टूबर, 2020 का शिविरा अंक महात्मा गाँधी जी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी की जयन्ती के रूप में आकर्षक कलेवर के साथ प्राप्त हुआ। शिविरा पत्रिका राजस्थान शिक्षा जगत की अद्वितीय एवं शिखर पत्रिका है। मंत्री जी एवं निदेशक महोदय ने विपरीत परिस्थितियों में भी सतत प्रयत्न और आशान्वित होकर कर्त्तव्य पालन की सीख दी जो वाकई प्रेरणास्पद लगी। मातृभाषा में शिक्षण का आनन्द आलेख शिक्षाविद् ओमप्रकाश जी सारस्वत का बेहद अनुकरणीय एवं मार्गदर्शी लगा। प्रियंका पांडिया जी का जल-संरक्षण आधारित आलेख जल ही जीवन की सार्थकता एवं उपयोगिता को बखूबी समझा गया। सार्थक एवं ज्ञानकुंज सामग्री के प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को बहुत बधाई तथा दीपोत्सव की अग्रिम शुभकामनाएँ।

महेश आचार्य, नागौर

- शिविरा का माह अक्टूबर, 2020 का अंक आकर्षक आवरण के साथ समय पर प्राप्त हुआ। आवरण में महात्मा गाँधी व लाल बहादुर शास्त्री के चित्र राजस्थानी धरातल के साथ और अधिक आकर्षक बन पड़े हैं। माननीय मंत्री महोदय ने अपनों से अपनी बात एवं निदेशक महोदय ने दिशाकल्पः मेरा पृष्ठ के माध्यम से कर्त्तव्यपालन को प्राथमिकता देकर उत्साहवर्द्धन किया है। पूर्व सम्पादक श्री ओमप्रकाश सारस्वत का आलेख 'मातृभाषा में शिक्षण का आनन्द, ठाकराराम प्रजापत व महेश कुमार शर्मा के 'गाँधी दर्शन व संदेश' सुदेश कुमार यादव का 'डिजिटल लर्निंग', डॉ. रणबीर सिंह का 'नो बैग डे : संभावनाओं की उड़ान' बेहतर व प्रेरक रहे। शिविरा के स्थाई स्तंभों का अपना महत्त्व है जिसमें 'बाल शिविरा' एक नवाचार के रूप में बहुत अच्छा लगा। बालकों की शाला में नहीं आने के कारण शायद, बाल रचनाओं का अभाव रहता है। फिर भी संस्थाप्रधान, शनिवारीय बाल सभा के लिए ऑनलाइन रचनाओं का संकलन बालकों से प्राप्त कर भिजवाते रहें। नई पुस्तकों की समीक्षा एवं शाला प्रांगण, भामाशाह पत्रिका को पूर्णता प्रदान करते हैं। अविस्मरणीय सामग्री चयन के लिए प्रकाशन टीम को बहुत-बहुत बधाई।

भागीरथ जनागल, गंगाशहर, बीकानेर

- राजस्थान शिक्षा जगत की सिरमौर मासिक पत्रिका शिविरा अक्टूबर, 2020 प्राप्त हुई। सुन्दर कलेवर के साथ पठनीय सामग्री ने मन मोह लिया। साथ ही मंत्री महोदय श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा का अपनों से अपनी बात व निदेशक महोदय का दिशाकल्प में सतत प्रयत्न करते रहें के महत्त्वपूर्ण संदेश पढ़ने को मिले। नव प्रभात दुबे ने अपने आलेख 'साधारण मानव से महामानव तक के सफर' में महात्मा गाँधी के बारे में बखूबी चित्रण किया। मातृभाषा में शिक्षण व आनन्द, कक्षा-कक्ष वातावरण, सामाजिक समायोजन, पुस्तकालय की महत्ता व प्रबंधन, सामुदायिक बाल सभाओं का प्रभावी संचालन तथा भामाशाहों का सहयोग कैसे लें जैसे आलेखों का समावेश पत्रिका के शिक्षा जगत में उपस्थिति की सार्थकता को सिद्ध करती है। कालूराम मीना का विशेष आवश्यकता वाले साधक और शिक्षक, अब्दुल करीम खान का प्राथमिक शिक्षण व सुदेश कुमार यादव का डिजिटल लर्निंग की जरूरत व महत्त्व तथा डॉ. राजरानी अरोड़ा का सामाजिक समरसता की स्थापना में शास्त्रीय विचिन्तकों का योगदान पत्रिका की उपयोगिता व चिन्तन पटल लेखकों की प्राथमिकता सम्पादक मण्डल की सूझबूझ व पारंगतता को दर्शाता है। स्थाई स्तंभों में प्रकाशित सामग्री ने पत्रिका को पूर्णता प्रदान की है। सुधीजन पाठकों के लिए शैक्षिक नवाचारों में समाहित, शैक्षिक चिन्तन पर आलेखों के लिए प्रकाशन टीम को धन्यवाद।

अलका सिसोदिया, आबू रोड, सिरोही

सत्यमेव जयते

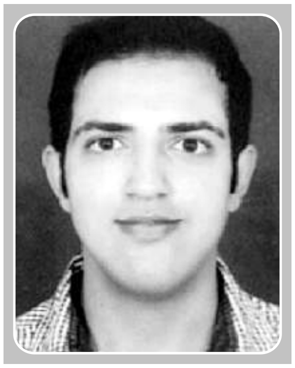

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"**e-कक्षा तथा अन्य माध्यमों से विद्यालयों को प्राप्त डिजिटल सामग्री का भरपूर उपयोग किया जावे। इस हेतु ICT लैब में उपलब्ध कम्प्यूटर की हार्ड डिस्क में इस अध्ययन सामग्री को सेव कर लें तथा इसका उपयोग ऑनलाइन तथा आवश्यकतानुसार ऑफ लाइन शिक्षण में उपयोग करें। डिजिटल शिक्षण के बढ़ते महत्त्व को देखते हुए विद्यालय में आईसीटी लैब, स्मार्ट कक्षा-कक्ष, स्मार्ट बोर्ड आदि को अपडेट रखें। स्मार्ट टी.वी. की व्यवस्था कर हार्ड डिस्क में सेव सामग्री को बच्चों को दिखाया जाए इनका अधिकाधिक उपयोग करने हेतु शिक्षक दक्ष हों।**"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

e-कक्षा : भविष्योन्मुखी पहल

नवम्बर माह में कृतज्ञ राष्ट्र अपने महान सपूत देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू, बच्चों के प्रिय चाचा नेहरू के जन्मदिवस 14 नवम्बर को बाल दिवस के रूप में मनाता है। संयोग से इस वर्ष दीपोत्सव का पर्व दीपावली भी इसी दिन है।

कोरोना महामारी से बनी विषम परिस्थितियों के कारण राजस्थान सरकार व शिक्षा विभाग ने इस वर्ष के राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का वर्चुअल आयोजन माननीय मुख्यमंत्री महोदय की गरिमामयी उपस्थिति में गुरुजनों का सम्मान व उनकी श्रेष्ठता को प्रोत्साहित कर शिक्षा विभाग गौरवान्वित महसूस करता है। इस शुभावसर पर माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने शिक्षा विभाग के शैक्षिक उन्नयनकारी नवाचार **e-कक्षा** व **नो बेग डे** के ब्रोशर का विमोचन करते हुए कोविड-19 के दौर मे भी शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों को गुणवत्ता युक्त शिक्षण से जोड़े रखने के प्रयासों की सराहना की, **e-कक्षा** व **नो बेग डे** की संकल्पना पर देश भर में राजस्थान के रचनात्मक सृजन व भविष्योन्मुखी पहल को प्रोत्साहन मिला है, यह हम सबके लिए सुखद है। e-कक्षा तथा अन्य माध्यमों से विद्यालयों को प्राप्त डिजिटल सामग्री का भरपूर उपयोग किया जावे। इस हेतु ICT लैब में उपलब्ध कम्प्यूटर की हार्ड डिस्क में इस अध्ययन सामग्री को सेव कर लें तथा इसका उपयोग ऑनलाइन तथा आवश्यकतानुसार ऑफ लाइन शिक्षण में उपयोग करें। डिजिटल शिक्षण के बढ़ते महत्त्व को देखते हुए विद्यालय में आईसीटी लैब, स्मार्ट कक्षा-कक्ष, स्मार्ट बोर्ड आदि को अपडेट रखें। स्मार्ट टी.वी. की व्यवस्था कर हार्ड डिस्क में सेव सामग्री को बच्चों को दिखाया जाए इनका अधिकाधिक उपयोग करने हेतु शिक्षक दक्ष हों।

मुझे आप सभी से यह तथ्य साझा करते हुए गर्वानुभूति हो रही है कि इंस्पायर अवार्ड मानक योजना में राजस्थान ने भारत में प्रथम स्थान प्राप्त किया है साथ ही भारत के टॉप 50 जिलों में से प्रथम 7 जिलों सहित 20 जिले राजस्थान के हैं। यह सब आप सम्माननीय गुरुजनों के सतत परिश्रम का ही सुपरिणाम है। इस गौरवमयी उपलब्धि पर मैं समस्त शिक्षा परिवार को बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सरकार की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की संकल्पबद्धता तथा श्रेष्ठ शैक्षिक माहौल की बदौलत हम भविष्य में श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम ऊँचाइयों को छुएँगे।

कोविड-19 के चलते अभी विद्यालयों में कक्षाओं का संचालन शुरू नहीं हो पाया है परन्तु शिक्षकों द्वारा जो ऑनलाइन शिक्षण कार्य कराया जा रहा है वह बहुत सराहनीय है। शीघ्र ही विद्यालयों में नियमित कक्षाएँ शुरू होंगी। आप सभी गुरुजनों से अपेक्षा है कि समयाभाव को देखते हुए आप सभी अपने श्रेष्ठ परिश्रम व लगन से छात्रों के अधिगम की कमी को पूरा करने का प्रयास करेंगे।

माह नवम्बर में आने वाले बाल दिवस, दीपोत्सव एवं गुरूनानक जयन्ती पर समस्त शिक्षा परिवार को मैं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

(सौरभ स्वामी)

बाल दिवस विशेष

आधुनिक भारत के निर्माता : पं. जवाहरलाल नेहरू

❐ कमल नारायण शर्मा

पण्डित जवाहरलाल नेहरु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेताओं में से एक थे। जो अपनी प्रशासनिक क्षमताओं तथा विद्वता के लिए विख्यात थे। इनका जन्म इलाहाबाद में 14 नवम्बर, 1889 ई. को 'आनन्द भवन' में हुआ था। वे पंडित मोतीलाल नेहरु और श्रीमती स्वरूप रानी के एकमात्र पुत्र थे। अपने सभी भाई-बहिनों में, जिनमें दो बहनें थी, जवाहरलाल नेहरु सबसे बड़े थे। उनकी बहन पण्डित विजयलक्ष्मी बाद में संयुक्त राष्ट्र की पहली महिला अध्यक्ष बनी।

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। 14 वर्ष की आयु में नेहरु ने घर पर ही कई अंग्रेज अध्यापिकाओं और शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त की। जवाहरलाल नेहरु एक समावृत भारतीय शिक्षक भी थे जो इन्हें हिन्दी और संस्कृत विषय पढ़ाते थे। 15 वर्ष की उम्र में 1908 में नेहरु एक अग्रणी अंग्रेजी विद्यालय इंग्लैण्ड के हैरो स्कूल में पढ़ने गए जहाँ वे दो वर्ष तक रहे। नेहरु का शिक्षाकाल किसी तरह से असाधारण नहीं था। हैरो से वह कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज गए, जहाँ उन्होंने तीन वर्ष तक अध्ययन करके प्रकृति विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उनके विषय रसायन शास्त्र, भूगर्भ विद्या और वनस्पति शास्त्र थे। केम्ब्रिज छोड़ने के बाद लंदन के इनर टेंपल में दो वर्ष बिताकर उन्होंने वकालत की पढ़ाई की और उनके ही शब्दों में परीक्षा उत्तीर्ण करने में उन्हें न कीर्ति, न अपकीर्ति मिली। भारत लौटने के चार वर्ष बाद मार्च 1918 में नेहरु का विवाह कमला कौल के साथ हुआ। वे दिल्ली में बसे कश्मीरी परिवार से थी। उनकी अकेली सन्तान इन्दिरा प्रियदर्शिनी का जन्म 1917 ई. में हुआ। बाद में वह विवाहोपरान्त नाम इन्दिरा गाँधी भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनी।

1912 ई. में वे बेरिस्टर बने और उसी वर्ष भारत लौटकर उन्होंने इलाहाबाद में वकालत प्रारम्भ की। वकालत में विशेष रुचि न थी और वे

भारतीय राजनीति में भाग लेने लगे। 1912 ई. में उन्होंने बाँकीपुर (बिहार) में होने वाले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। भारत लौटने के बाद नेहरु ने पहले वकील के रूप में स्थापित होने का प्रयास किया लेकिन इसमें इनकी विशेष रूचि न थी।

1918 ई. के लखनऊ अधिवेशन में वे सर्वप्रथम महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आए। गाँधी उनसे 20 वर्ष बड़े थे। दोनों में से किसी ने भी प्रारम्भ में एक दूसरे को प्रभावित नहीं किया। बहरहाल 1929 में कांग्रेस के ऐतिहासिक लाहौर अधिवेशन का अध्यक्ष चुने जाने तक नेहरु भारतीय राजनीति की अग्रणी भूमिका में नहीं आ पाए थे। इस अधिवेशन में भारत के राजनीतिक लक्ष्य के रूप में सम्पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की गई।

पं. नेहरु की वकालत में रुचि न होकर भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में थी। महात्मा गाँधी भी उन्हें राजनीति में लाना चाहते थे। नेहरु 1929 में लाहौर में हुए कांग्रेस अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। जवाहर लाल नेहरु ने सक्रिय होकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेना शुरू कर दिया जिसके फलस्वरूप 1920-22 के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और जेल भी गए। नेहरु ने कुल मिलाकर नौ वर्ष से अधिक समय तक जेल में रहे। 1936 में नेहरु पुनः कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।

सन् 1947 में भारत को आजादी मिली तो वे भारत के 'प्रथम प्रधानमंत्री' बने। प्रधानमंत्री बनने के बाद इन्होंने देश के सामने खड़ी चुनौतियों का मुकाबला कर स्वतंत्र भारत का निर्माण किया। इनके द्वारा स्वतंत्र भारत के निर्माण के लिए किए गए कार्यों के कारण इन्हें आधुनिक भारत के निर्माता कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पं. नेहरु ने देश के विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का सूत्रपात किया। इनकी नीतियों के कारण ही देश ने कृषि और उद्योग के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की।

नेहरु ने भारत की विदेश नीति को उदारता के साथ लिया और पड़ोसी देशो के साथ मधुर संबंध भी स्थापित किए। जवाहर लाल नेहरु बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। इस कारण बच्चे उन्हें चाचा नेहरु के नाम से पुकारते थे। बच्चों से अत्यंत प्रेम होने के कारण उनका जन्म दिवस 14 नवम्बर को सारे देश में **'बाल दिवस'** के रूप में मनाया जाने लगा।

सन् 1962 में चीन द्वारा अचानक भारत पर आक्रमण किए जाने के कारण नेहरु को बड़ा जबरदस्त सदमा लगा और इस सदमे के कारण 27 मई 1964 को उनका निधन हो गया। बच्चों का प्रिय चाचा और हर नौजवान दिलों की धड़कन हमेशा-हमेशा के लिए हमसे बिछड़ गया। पं. नेहरु के बताए रास्तों पर चलना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। वे एक महान देशभक्त, दूरदर्शी राजनयिक, नेता और बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व थे।

अध्यापक (सेवानिवृत्त)
1/131 हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी,
हनुमानगढ़ जंक्शन (राज.)
मो: 9414474636

नेहरू जयंती विशेष

चाचा नेहरू के जीवन से जुड़े दिलचस्प किस्से

❒ मेघाराम चौधरी

देश के प्रथम प्रधानमंत्री और बच्चों में चाचा नेहरु के नाम से लोकप्रिय पं. जवाहर लाल नेहरु का जन्म दिवस 14 नवम्बर, प्रतिवर्ष **बाल दिवस** के रूप में मनाया जाता है। नेहरु जी बच्चों से बेहद प्यार करते थे। नेहरु जी का जीवन हमारे लिए एक प्रेरणात्मक जीवन है। उनके जीवन से जुड़े अनेक ऐसे रोचक प्रसंग हैं जो हमें विनम्र, करुणा, सहानुभूति, आत्मनिर्भरता और शालीनता के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। कुछ प्रेरणात्मक प्रसंग इस प्रकार हैंः-

नेहरु की आत्मनिर्भरताः- जब नेहरु जी इंग्लैण्ड की हैरो स्कूल में पढ़ाई करते थे। एक दिन सुबह अपने जूतों पर पॉलिश कर रहे थे तब अचानक उनके पिता जी पं. मोतीलाल नेहरु वहाँ जा पहुँचे। जवाहरलाल को जूतों पर पॉलिश करते देख उन्हें अच्छा नहीं लगा। उन्होंने तत्काल नेहरुजी से कहा- क्या यह काम तुम नौकरों से नहीं करवा सकते? जवाहरलाल ने उत्तर दिया- जो काम मैं खुद कर सकता हूँ, उसे नौकरों से क्यों कराऊँ? नेहरु जी का मानना था कि इन छोटे-छोटे कार्यों को स्वयं करने से ही व्यक्ति आत्मनिर्भर बनता है और आत्मनिर्भरता प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

शिष्टाचार पर नसीहतः- बात उन दिनों की है जब पं. जवाहरलाल नेहरु लखनऊ की सेंट्रल जेल में थे। लखनऊ सेंट्रल जेल में खाना तैयार होते ही मेज पर रख दिया जाता था। सभी सम्मिलित रूप से खाते थे। एक बार एक डाइनिंग टेबल पर एक साथ सात आदमी खाने के लिए बैठे। तीन आदमी नेहरुजी की तरफ और चार आदमी दूसरी तरफ। एक पंक्ति में नेहरु जी थे और दूसरी में चन्द्रसिंह गढ़वाली। खाना खाते समय शक्कर की जरूरत पड़ी। जिस बर्तन में शक्कर थी वह कुछ दूर था। चन्द्रसिंह गढ़वाली ने सोचा-आलस्य करना ठीक नहीं है। अपना ही हाथ जरा आगे बढ़ा दिया जाए। चन्द्रसिंह ने हाथ बढ़ाकर बर्तन दीजिए कहा तो नेहरु जी गुस्से के मारे तमतमा उठे। फिर तुरन्त ठण्डे भी हो गए

और फिर सब को समझाने लगे- हर काम के साथ शिष्टाचार आवश्यक है। भोजन की मेज का भी अपना एक सभ्य तरीका और शिष्टाचार है। यदि कोई मेज पर सामने से दूर हो तो पास में बैठे व्यक्ति को कहना चाहिए- कृपया इसे देने का कष्ट करें। शिष्टाचार के मामले में नेहरुजी ने कई लोगों को नसीहत प्रदान की थी। ऐसे थे जवाहरलाल नेहरु।

नेहरुजी की विनोदप्रियताः- एक बार एक बच्चे ने ऑटोग्राफ पुस्तिका नेहरुजी के सामने रखते हुए कहा- साइन कर दीजिए। बच्चे ने ऑटोग्राफ देखे और नेहरुजी से कहा- आपने तारीख तो लिखी ही नहीं। बच्चे की इस बात पर नेहरुजी ने उर्दू अंकों में तारीख डाल दी। बच्चे ने इसे देखकर कहा- यह तो उर्दू में है। नेहरुजी ने कहा-भाई तुमने साइन अंग्रेजी शब्द कहा तो मैंने अंग्रेजी में साइन कर दिए। फिर तुमने उर्दू शब्द का प्रयोग किया तो मैंने तारीख उर्दू में लिख दी। ऐसा था नेहरुजी का बच्चों के प्रति विनोदप्रियता का लहजा।

जब चाचा नेहरु बच्चे थेः- जवाहरलाल नेहरु के बाल्यकाल की एक घटना है। उनके घर पिंजरे में एक पालतू तोता था। पिता मोतीलालजी ने तोते की देखभाल का जिम्मा अपने माली को सौंप रखा था। एक बार नेहरुजी स्कूल से वापस आए तोता उन्हें देखकर जोर-जोर से बोलने लगा। नेहरुजी को लगा कि तोता पिंजरे से आजाद होना चाहता है। उन्होंने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। तोता आजाद होकर एक पेड़ पर जा बैठा और नेहरुजी की ओर देखकर कृतज्ञ भाव से कुछ कहने लगा। उसी समय माली आ गया। उसने नेहरुजी को डाँटा- यह तुमने क्या किया? मालिक नाराज हो जाएंगे। बालक नेहरु ने कहा-सारा देश आजाद होना चाहता है। तोता भी आजाद होना चाहता है। आजादी सभी को मिलनी चाहिए।

चाचा नेहरु और गुब्बारे वाला बच्चाः- एक बार जब नेहरु जी तमिलनाडु के दौरे पर गए तब जिस सड़क से वे गुजर रहे थे, वहाँ के कई लोग साइकिलों पर खड़े होकर तो कई दीवारों पर चढ़कर नेहरुजी को निहार रहे थे। प्रधानमंत्री की एक झलक पाने के लिए हर आदमी इतना उत्सुक था कि जिसे जहाँ समझ आया वहाँ खड़े होकर नेहरुजी को निहारने लगा। इस भीड़भाड़ वाले इलाके में नेहरुजी ने देखा कि दूर खड़ा एक गुब्बारे वाला पंजों के बल खड़ा डगमगा रहा था। ऐसा लग रहा था कि उसके हाथों के तरह-तरह के रंग-बिरंगी गुब्बारे मानों पंडितजी को देखने के लिए डोल रहे हों। जैसे वे कह रहे हों हम तुम्हारा तमिलनाडु में स्वागत करते हैं। नेहरुजी की गाड़ी जब गुब्बारे वाले तक पहुँची तो वे गाड़ी से उतरकर गुब्बारे खरीदने के लिए आगे बढ़े। गुब्बारे वाला हक्का-बक्का रह गया। नेहरुजी ने अपने तमिल जानने वाले सचिव से कहकर सारे गुब्बारे खरीदवाए और वहाँ उपस्थित सारे बच्चों को वे गुब्बारे बंटवा दिए। ऐसे प्यारे चाचा नेहरु को बच्चों के प्रति बहुत लगाव था। नेहरुजी के मन में बच्चों के प्रति विशेष प्रेम और सहानुभूति देखकर लोग उन्हें चाचा नेहरु के नाम से सम्बोधित करने लगे। जैसे-जैसे गुब्बारे बच्चों के हाथों तक पहुँचे, बच्चों ने चाचा नेहरु-चाचा नेहरु की तेज आवाज से वहाँ का वातावरण उल्लास और उमंग से गुंजायमान कर दिया। तभी से वे चाचा नेहरु के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चिड़िया,
गिड़ा, बाड़मेर (राज.)
मो: 9414397767

शिक्षण अधिगम के विकल्प

ऑनलाइन शिक्षा : उपयोगिता एवं महत्त्व

❒ गोविन्द सिंह डोटासरा

वर्तमान युग सूचना, सम्प्रेषण एवं प्रौद्योगिकी (Information, Communication and Technology/ICT) का अद्भुत युग है। इंटरनेट ने क्रान्ति ला दी है। हमारी जेब में रखे एक मोबाइल में दुनिया भर की जानकारी है। इस इंटरनेट का उपयोग पढ़ने-पढ़ाने में बहुत प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। इसे ऑनलाइन स्टडी कहा जाता है। वस्तुत: यह दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) का ही एक स्वरूप है। इसमें शिक्षक और विद्यार्थी आमने-सामने नहीं होते बल्कि वे एक दूसरे से काफी दूर होते हैं। उन दोनों को परस्पर मिलाने का काम इंटरनेट करता है। इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा का कार्य बहुत तैयारी के साथ सम्बन्धित विषय के अनुभवी एवं निष्णात शिक्षकों के द्वारा किया जाता है। अत: यह ऑनलाइन शिक्षा (शिक्षण एवं अधिगम/TL) बहुत प्रभावी होता है। ऑनलाइन एज्यूकेशन को ई-एज्यूकेशन (E-education) भी कहा जाता है।

शिक्षण व अधिगम के वैकल्पिक साधनों में ऑनलाइन शिक्षण अधिगम सर्वोपरि है। इसका महत्व उससे होने वाले निम्न फायदों से स्पष्ट हो जाता है-

i. ऑनलाइन शिक्षा में पाठ तैयार करने तथा उसे प्रस्तुत करने के लिए योग्यतम (अनुभवी एवं परिश्रमी) शिक्षकों को चुना जाता है।

ii. ये चुनीन्दा शिक्षक-शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर आराम से अपने पाठ की पाठयोजना व प्रस्तुतिकरण की रुपरेखा बना सकते हैं। चूंकि उन्हें सीधे ही कक्षा-कक्ष में विद्यार्थियों के सामने नहीं आना होता, अत: वे अच्छे से अच्छा (Better One) पाठ लेकर स्क्रीन पर आ सकते हैं।

iii. ऑन लाइन शिक्षा में पाठ प्रस्तुत करने वाले शिक्षकों को वर्षों पढ़ाने का व्यावहारिक अनुभव होता है, वे विभिन्न बुद्धि स्तर (IQ) के छात्र/छात्राओं से वर्षों रू-ब-रू हुए होते हैं, अत: विभिन्न स्तर के छात्र-छात्राओं को ध्यान में रखकर वे एक औसत पाठ तैयार कर

सकते हैं।

iv. परम्परागत कक्षा-कक्ष शिक्षण-अधिगम प्रणाली की सीमा यह है कि यदि विद्यार्थी किसी दिन आया नहीं है अथवा थोड़ी देर के लिए अनुपस्थित रह लेता है तो वंचित रहे अधिगम से उसे वंचित ही रहना पड़ता है जबकि ऑनलाइन शिक्षा में वह पाठ सदा-सदा के लिए रिकार्ड हो जाता है। ऐसे में अनुपस्थित रहे विद्यार्थी ही नहीं बल्कि एक बार सुन व देख चुके विद्यार्थी भी बार-बार लाभ उठा सकते हैं।

v. परम्परागत शिक्षण अधिगम कक्षागत व्यवस्था की भौगोलिक सीमा होती है। वे जिस स्थान व जिस विद्यालय में प्रस्तुत किए जा रहे हैं, उससे हटकर बीस मीटर की दूरी तक भी अपना प्रभाव नहीं दिखा सकते जबकि ऑनलाइन शिक्षा तो सार्वभौमिक व सार्वकालिक होती है। वर्चुअल क्लास का आयोजन यदि हो रहा है तो देखने-सुनने वाले को महज एक इंटरनेटयुक्त लेपटॉप/मोबाइल+लिंक विवरण चाहिए। संसार के किसी भी देश के किसी भी भाग में चाहे जितनी संख्या (करोड़ों/अरबों) में उसे देखा-सुना जा सकता है।

vi. ऑन लाइन शिक्षा की यह कहकर आलोचना की जा सकती है कि वह एक तरफा होती है। विद्यार्थी परम्परागत शिक्षण की तरह सवाल एवं जिज्ञासाएं रख नहीं सकते। जी नहीं, ऐसा नहीं है। वर्चुअल क्लासेज में विद्यार्थी अपनी शंकाएं व प्रश्न परम्परागत कक्षा की भांति करते हुए उनके समाधान भी प्राप्त कर सकते हैं।

vii. परमात्मा के द्वारा रचे गए इस संसार में कोई भी दो व्यक्ति समान नहीं होते-शक्ल, रूप, रंग, गुण आदि में। ऐसे ही एक ही विषय के, एक जैसी पढ़ाई-प्रशिक्षण प्राप्त, एक ही ग्रेड के दो शिक्षक भी समान नहीं होते। सबका बोलने-चालने, पढ़ाने, दूसरों के साथ व्यवहार करने का तरीका अलग होता है। कुछ शिक्षकों की पढ़ाने की कला बहुत प्रभावी एवं आकर्षक होती है। परम्परागत शिक्षण में अन्य शिक्षक उस प्रभावशाली शिक्षक का शिक्षण सामान्यत: देख नहीं सकते, जबकि वर्चुअल ऑनलाइन शिक्षण में वे रिकार्डेड शिक्षण को कितनी ही बार देखकर अपनी शिक्षण प्राविधि को प्रभावी बानने के लिए उनका उपयोग कर सकते हैं।

viii. उपर्युक्त बिन्दु-vii में शिक्षकवृंद के लिए लिखी बात अन्य विद्यार्थियों-छात्र/छात्राओं पर भी समान रूप से लागू होती है। प्रभावशाली ढंग से तैयार पाठ को ऑनलाइन प्रस्तुत किए जाने पर अन्य विद्यालयों/अन्य स्थानों के विद्यार्थी भी देख/सुनकर लाभ उठा सकते हैं। वे कितनी ही बार देख सकते हैं। यह है ऑनलाइन शिक्षण अधिगम का महत्त्व!

ix. विद्यार्थियों की शंकाओं/जिज्ञासाओं को सुनकर उनका समाधान करने की प्रक्रिया में जगह-जगह के, भिन्न-भिन्न बौद्धिक स्तर (IQ) के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रश्न/प्रति प्रश्न किए जाते हैं। यह सब बड़ा रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक बन सकता है। सभी ऐंगल्स से प्रश्न पूछे जाते हैं जिसका लाभ ऑनलाइन शिक्षण अधिगम से जुड़े सभी विद्यार्थियों को मिल सकता है। सुविधाप्रदाता (Facilitator) शिक्षक के रूप में भिन्न-भिन्न विद्यालयों में उपस्थित उस विषय के शिक्षक भी इस क्रिया से निसंदेह लाभान्वित होते हैं।

x. ऑनलाइन शिक्षा Learning Without Burden का मार्ग प्रशस्त करने वाली होती है। विद्यार्थी ऑनलाइन क्लास में अपने स्तर पर घर अथवा कहीं भी अपनी सुविधानुसार शरीक हो सकते हैं। उन्हें महज एक नोट बुक और कलम चाहिए ताकि चलती क्लास में कोई शंका/जिज्ञासा उनके मन में आए तो वे उसे नोट कर सकें।

ऑनलाइन शिक्षा–प्रक्रिया : ऑनलाइन शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षण अधिगम की पूर्व नियोजित कार्ययोजना होनी चाहिए। जिस प्रकार विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम का पूरे महीने का तिथिवार कार्यक्रम पहले प्रकाशित कर दिया जाता है। इससे विद्यार्थी, शिक्षक और माता–पिता को यह पहले से पता रहता है कि किस दिन, कितने बजे, किस कक्षा के किस विषय का पाठ प्रसारित होगा। इसी प्रकार ऑनलाइन शिक्षा के प्रत्येक सिस्टम में ऐसी स्पष्टता होनी चाहिए। ऑनलाइन पाठ प्रस्तुत करने वाले शिक्षकों का पेनल होना चाहिए ताकि बहुत सारे शिक्षक इस कार्य हेतु तैयार हो सकें। विद्यार्थियों की शंकाओं को ऑनलाइन ग्रहण करने के पश्चात उनके समाधान का कार्य भी शिक्षकों के पेनल द्वारा किया जाना चाहिए। विद्यालय समय में ऑनलाइन शिक्षण अधिगम क्लास के समय विद्यालय में उस विषय के शिक्षक/शिक्षकों को बच्चों के मध्य सुविधाप्रदाता (Facilitator) के रूप में उपस्थित रहना चाहिए। इससे अनुशासन व्यवस्था भी बनी रहेगी तथा स्वयं शिक्षकगण भी उससे लाभान्वित होंगे। मैं इस बात का पक्षधर हूँ कि विद्यालय में आयोजित होने वाली प्रत्येक गतिविधि में शिक्षक तो अवश्य बच्चों के साथ रहे। बच्चे स्वभाव से चंचल होते हैं। अत: वे स्वतंत्रता मिलने पर शरारत किए बिना नहीं रह सकते। अत: शिक्षक सदैव साथ रहे, यह सुनिश्चित हो।

स्मार्ट क्लासरूम की स्थापना : मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता हो रही है कि राजस्थान के लगभग सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में ICT Lab की स्थापना कर दी गई है। इनमें अद्युनातन तकनीक (Latest Technology) उपलब्ध करवाई गई है। यहाँ से विडियो कांफ्रेसिंग भी हो सकती है। स्मार्ट क्लास लग सकती है। इनके अलावा भी कई स्कूलों में बड़ी स्क्रीन के साथ भव्य स्मार्ट क्लास रूम की स्थापना की गई है। भामाशाहों एवं सीएसआर मद से इस दिशा में बहुत सराहनीय काम हुआ है। स्मार्ट क्लास की संकल्पना ऑनलाइन शिक्षण अधिगम की भावना के अनुरूप होती है। इनका भरपूर उपयोग ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के लिए किया जाना चाहिए। इस वर्ष कोरोना महामारी की विभीषिका के बावजूद 525 नई ICT Labs की स्वीकृति हमें भारत सरकार से प्राप्त हुई है। इनकी स्थापना शीघ्र ही की जाकर इनमें आवश्यक संसाधन उपलबध करवाए जाने चाहिए। ICT Labs का निरीक्षण भी समय–समय पर किया जाकर इनमें वांछित सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। ये ICT Labs विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच का विकास करने वाली हैं। अत: इनको सुचारू रूप से संधारण करना विभाग की प्राथमिकता होनी चाहिए। वर्तमान में स्वीकृत एवं संचालित ICT कम्प्यूटर लेब की संख्या 10695 है। इनमें से 562 लेब राज्य सरकार के फंड से संचालित हैं।

भारत सरकार द्वारा हाल ही में स्वीकृत 525 ICT Labs स्थापित करने की कार्यवाही चल रही है। शीघ्र ही इन्हें स्थापित कर दिया जाएगा, ऐसी आशा है। वर्चुअल ऑनलाइन शिक्षा के लिए स्मार्ट क्लासरूम की विद्यालयों में स्थापना की जा रही है। वर्तमान में 66 स्मार्ट क्लास रूम हैं जो विविध आवश्यक आई.टी. उपकरणों से सुसज्जित हैं। भामाशाहों का सहयोग लेकर स्मार्ट क्लास रूम की स्थापना विद्यालयों में की जानी चाहिए।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कोविड–19 से पहले ऑनलाइन शिक्षा का कोई विशेष असर हमारी व्यवस्था में नहीं था। इसका विस्तार कोविड–19 महामारी से पैदा हुई परिस्थितियों के कारण हुआ है। यद्यपि इसके लिए विद्यार्थी के पास अपेक्षित आई.टी. संसाधन यथा लेपटॉप, स्मार्ट फोन पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं फिर भी ऑनलाइन शिक्षा के महत्व को जानकर अब इन संसाधनों को उपलब्ध करवाने की दिशा में सरकार, समाज एवं अभिभावकों को प्रयास करना चाहिए। भारत में ऑनलाइन शिक्षा (E-education) अभी शैशवावस्था में है। इस पर समुचित ध्यान दिया गया तो निश्चित रूप से यह परम्परागत कक्षागत शिक्षण के प्रभावशाली विकल्प के रूप में अपनी उपादेयता सिद्ध करेगी।

शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा,
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग, राज. सरकार, जयपुर

साथ सभी हम निकलेंगे

❒ किशन गोपाल व्यास

फिर से अधखिले फूलों के
कोंपल वन में महकेंगे,
सावन में घटाएँ आने पर
फिर से पक्षी चहकेंगे।
होगा अन्त फिरंगी वायरस का,
ले हाथ ध्वजा हम निकलेंगे,
होगा अन्त फिरंगी कोरोना का,
हो साथ सभी हम निकलेंगे।।
हर बात नई होगी फिर से
अहसास नया होगा,
खुशनुमा लम्हों का पल-पल,
आभास नया होगा।
अम्बर की सूनी गोद में फिर से
तारे उतरेंगे,
रात को जन्नत कर देंगे
तब चाँदी सा चमकेंगे।।
हरी-भरी हरियाली के संग
धरा संवर जाएगी,
रेत के सूनेपन को छूने
नई लहर आ जाएगी।
मोती सी वो ओस बूँदे
पलकों के साए गिरकर,
मेहन्दी के रंगों में रंग कर
बिखर-बिखर जाएगी।।
ऐसे में फिर से अरमां सारे
दिल के मचलेंगे,
देख के मौसम पक्षी फिर से
राहें दिशा बदलेंगे।
होगा अन्त फिरंगी वायरस का,
ले हाथ ध्वजा हम निकलेंगे,
होगा अन्त फिरंगी कोरोना का,
हो साथ सभी हम निकलेंगे।

पुत्र श्री सीताराम व्यास
एफ–742, बाबा रामदेव जी मंदिर के पास,
मुरलीधर व्यास कॉलोनी, बीकानेर (राज.)
मो: 9414147499

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षा राष्ट्र निर्माण की शाश्वत प्रक्रिया

❒ प्रकाश वया

शिक्षा व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के अपेक्षा से 'अमृत कलश' है। जिसमें विद्यमान सुधोपम जीवनरस को छक कर व्यक्ति सर्वांग रूप से फलदायी और शुभंकर बन जाया करता है। यहाँ तक कि शिक्षा के माध्यम से वो शुद्ध, बुद्ध और प्रबुद्ध होकर अपने मनुष्य जीवन को सार्थकता प्रदान करने में समर्थ हो जाता है जो कि असल में उसके जीवन का अन्तिम लक्ष्य होता है।

सच्चाई तो यह है कि शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमता, प्रतिभा और सामर्थ्य को प्रकट कर उसे एक सच्चे और अच्छे इन्सान के रूप में जीने का सलीका और तरीका प्रदान कराती है। मनुष्य वस्तुतः एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहना उसकी नियति है, धर्म है, पहचान है, इस सच्चाई के सापेक्ष उसे शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से सुदृढ़ और सुघड़ होना होता है, अन्यथा उसके लिए अपने वांछित प्राप्य को प्राप्त करना दूर की कौड़ी हो जाता है, इसलिए समाज और व्यक्ति एक दूसरे के पर्याय हैं, एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं हो सकता। असल में किसी भी परिवार, समाज और राष्ट्र की सुन्दरता, सुघड़ता और अस्ति-नास्ति उसके मानवीय संसाधन की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

हम बड़भागी हैं कि हमें गौरवशाली संस्कृति और परम्पराएँ विरासत में मिली हैं साथ ही भारतीय संस्कृति और दर्शन का दुनिया ने लोहा माना है और दुनिया भर के ज्ञान-पिपासुओं ने इस पावन धरती पर आकर अपनी बौद्धिक तृषा को शान्त कर आत्मसंतोष प्राप्त किया है, यह वह राष्ट्र है जहाँ की तपोभूमि पर वेदों का सृजन हुआ, वेदों के निष्कर्ष रूप उपनिषद लिखे गए। महान कर्मयोगी कृष्ण ने किंकर्त्तव्यविमूढ़ शिष्य अर्जुन की चेतना को जाग्रत करने के लिए कुरुक्षेत्र में गीता का उपदेश दिया जो कि भारतीय मनीषियों के लिए ही नहीं अपितु सकल मानव जाति के लिए फलदायी और शुभंकर साबित हो रहा है। स्वर्गतुल्य इस देवधरा पर आदिकवि वाल्मीकि, गार्गी, मैत्रेयी, चरक, पतंजलि, वशिष्ठ, वृहस्पति, चाणक्य, वराहमिहिर, आर्यभट्ट, पाणिनी, स्वामी विवेकानन्द, समर्थ गुरु रामदास जैसे धुरंधर, प्रज्ञा पुरुषों का अवतरण हुआ जिन्होंने अपने ज्ञान की मंदाकिनी को प्रवाहित कर इस राष्ट्र की प्रखर मनीषा को अपनी बुद्धि निमज्जित करने का स्वर्णित अवसर दिया तो दूसरी ओर इस देव भूमि पर राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, युधिष्ठिर, अर्जुन, एकलव्य, चन्द्रगुप्त, अशोक, छत्रपति शिवाजी, बन्दा बैरागी जैसे ओजस्वी और तेजस्वी शिष्यों ने अपने गुरुओं को समादृत करने का महान कार्य कर अमरत्व प्राप्त किया।

असल में भारत में गुरु शिष्य की गरिमा, महिमा और उनके अन्तर्सम्बन्ध बड़े ही अनूठे और विलक्षण रहे हैं। प्राचीनकाल में आश्रमों एवं गुरुकुलों के उन्मुक्त और स्वच्छन्द वातावरण में अनौपचारिक और जीवनोपयोगी शिक्षा दी जाती थी, विदेशों से भी कई प्रबुद्ध ज्ञान पिपासुओं ने आकर अपनी तृषा को शान्त किया, जिनमें यहाँ ह्वेनसांग और फाह्यान प्रमुख थे, परन्तु सच्चाई यह भी है कि हमारी मनीषा को ज्ञान प्राप्ति के लिए विदेशी धरती पर नहीं जाना पड़ा। असल में दुनिया में शिक्षा की अलख जगाने का ईश्वरीय कार्य इस पुण्य धरा के शुद्ध-बुद्ध, प्रबुद्ध और ज्ञान की निधि ऋषियों, मुनियों और प्रज्ञा पुरुषों ने ही किया है, इतिहास इस बात का साक्षी है।

इस महान राष्ट्र की गौरवशाली संस्कृति, दर्शन और परम्पराओं को संरक्षित करते हुए उसे संवर्धित करने की आवश्यकता है, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेश के सापेक्ष चिंता करते हुए चिन्तन करना भी तो समय की माँग है।

आठवीं शताब्दी के प्रारम्भ से लेकर 15 अगस्त 1947 से पहले तक माँ भारती की छाती पर मूँग दलने का दुष्कृत्य कर उसे छलनी करने का पैशाचिक कार्य बर्बर और क्रूर विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा किया गया वो जग जाहिर है। सच्चाई यह भी है कि आसुरी वृत्तियाँ को इसमें किसी हद तक सफलता भी मिली। अखण्ड भारत खण्डित हो गया और जो त्रास माँ भारती ने झेला निश्चित रूप से अनिर्वचनीय है। इस महान राष्ट्र के शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ढाँचे पर बड़ी क्रूरता से प्रहार किया गया, बर्बर आक्रान्ताओं द्वारा पावन शिक्षा के मन्दिरों, पुस्तकालयों को तोड़ा गया, साजिश के तहत जलाया गया, तत्पश्चात 1835 में सुनियोजित तरीके से कॉलेज की शिक्षा नीति और 'वुड डिस्पैच' के जरिए हमारे पावन और गौरवशाली शैक्षिक ढाँचे को क्षत-विक्षत कर नेस्तनाबूद करने का असफल प्रयास कर हमारी वैश्विक पहचान मिटाने की साजिश की गई।

आजादी के बाद मैकाले की विचारधारा के तथाकथित साहित्यकारों और इतिहासकारों ने शैक्षिक ढाँचे के साथ जो पाप और छल किया है निश्चित रूप से चिंताजनक होकर भारत के गौरवशाली सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक ढाँचे को नेस्तनाबूद कर दुनिया के इस महान राष्ट्र की मनीषा को कुंद कर गुलामी की मानसिकता से जोड़े रखना ही उनका एक मेव लक्ष्य रहा है।

स्वाभाविक रूप से किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए उसके सांस्कृतिक, सामाजिक, भौगोलिक, दार्शनिक और राजनीति परिवेश के अनुरूप सम्यक शैक्षिक ढाँचे का होना नितान्त आवश्यक है तभी जाकर उसकी सम्प्रभुता और अखण्डता कायम रह सकती है। चूँकि भारत विविधताओं से भरा देश है, जाति-पाँति, धर्म, भाषा, पंथ और सम्प्रदाय में बंटा हुआ है। उसमें शांति, आपसी सौहार्द्र, भाईचारा, सहिष्णुता और समरसता तभी बनी रह सकती है जब हमारी शिक्षा में हमारे सनातन जीवन मूल्यों का समावेशन किया जाएगा, उन जीवन मूल्यों के आरोपण से सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता का प्रवहण राष्ट्र जीवन में होना स्वाभाविक है।

अतीत में जो शिक्षा नीति को लेकर विमर्श हुआ उसमें मुख्य रूप से केवल शिक्षा की पहुँच तक जोर दिया गया। 1986 की नीति में घोषित शिक्षा के मसौदे को जिसे 1992 (एन.पी.ई.-1986/92 में संशोधित किया गया उसके बाद 2009 में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम बड़ा कदम माना जा सकता है, प्राथमिक शिक्षा (सार्वभौमिक) का अधिकार

देने का अधिनियम संसद में पारित करना भी शैक्षिक क्षेत्र में बड़े परिवर्तन का द्योतक है।)

हाल ही में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के द्वारा नई शिक्षा नीति 2020 का मसौदा जारी किया गया है जिसे 2021 में लागू करना प्रस्तावित है, उस पर सम्यक समालोचना करना भी प्रासंगिक है।

शिक्षा के माध्यम से एक सच्चे और अच्छे इन्सान को गढ़ने और तराशने की कवायद के लिए जिन आधारभूत तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। उनका उल्लेख करना भी आवश्यक है। ऐसे शाश्वत जीवन मूल्यों यथा दया, करुणा, सहानुभूति, सहिष्णुता, साहचर्य, लचीलापन से लबरेज हमारा बालक परिस्थितियों के सापेक्ष वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मकता को अपने जीवन यात्रा का पाथेय बनाकर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो। वस्तुतः बालक में स्व से ऊपर उठकर अदम्य जिजीविषा आभासित होनी चाहिए तभी जाकर वह परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए जी सकता है।

इस नीति का विजन साफ तौर पर दिखाई दे रहा है वह है भारतीय जीवन मूल्यों से विकसित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली उपलब्ध कराना ताकि भारत को वैश्विक स्तर पर फिर से ज्ञान महाशक्ति के रूप में स्थापित करना जो कि दूरगामी कदम कहा जा सकता है। असल में शिक्षा इस देश की माटी से जुड़ी होकर उसके मूल तत्वों और गौरवशाली सांस्कृतिक परम्पराओं से आबद्ध होनी चाहिए, यही सद् प्रयास इस प्रस्तुत शैक्षिक ढाँचे में दिखाई देता है।

भारतीय जीवन दर्शन में इहलोक और परलोक की संकल्पना की गई है, दुर्लभ मानव जीवन के सापेक्ष दोनों का समान रूप से महत्त्व रहा है। जीवन की सच्चाई है कि उसे सलीके और तरीके से जी कर दोनों को सुधारना उसकी तो नियति है, चरम लक्ष्य है। जहाँ इहलोक की अपेक्षा से वैज्ञानिक अनुसंधान पर तो दूसरी और परलोक के लिए आध्यात्मिक चिंतन-मनन की परम्परा रही है, आज इस जीवन दर्शन से संदर्भित जो वाङ्मय, ग्रन्थ और आगम उपलब्ध हैं उससे कई गुना बर्बर आक्रान्ताओं ने जला कर नष्ट कर दिए।

शिक्षा व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण की शाश्वत प्रक्रिया है, इस सच्चाई के सापेक्ष सम्यक शैक्षिक ढाँचा होना चाहिए तभी जाकर हम सुन्दर, सुघड़ और स्वस्थ समाज की संरचना कर पाएंगे। शिक्षा से हमारा तात्पर्य है कि ज्ञान की समग्रता, स्वामी विवेकानन्दजी ने शिक्षा को इस तरह परिभाषित किया कि **'मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है।'** गाँधीजी के अनुसार- **'शिक्षा से अभिप्राय बालक में निहित शारीरिक, मानसिक और आत्मिक श्रेष्ठ शक्तियों का सर्वांगीण विकास है।'** तो रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा कि **''शिक्षा वह है जो हमारे जीवन के साथ सभी अस्तित्वों के साथ सामंजस्य बनाती है।''** इस तरह शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास का मूलाधार है। तथापि विद्या शब्द की प्रयुक्ति भी शिक्षा के पर्याय के रूप में की जाती है, परन्तु शिक्षा और विद्या के अर्थ में अन्तर है, जहाँ विद्या का अर्थ किसी विशिष्ट ज्ञान से है तो शिक्षा समग्र ज्ञान का स्वरूप है। उपनिषदों और वेदों में विद्या शब्द को व्याख्यायित किया जाकर कहा गया है कि **'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात विद्या वह है जो मानव को इस भव सागर से विमुक्त करती है। **'विद्या इमृतमश्नुते'** विद्या से हमें अमृत यानि मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भारतीय दर्शन में पुरुषार्थ के चतुष्ट्य अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष को मनुष्य जीवन का आधार और एकमेव लक्ष्य बताया गया है, इस तरह से हम विद्या ग्रहण करके राग, द्वेष, हीनता, कुंठा, दैन्य, गरीबी, अज्ञानता और जीवन के अभावों और दुर्गुणों से मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। सम्प्रति वैश्विक, राष्ट्रीय और सामाजिक ढाँचे तथा समसामयिक परिदृश्यों के सापेक्ष शिक्षा का उद्देश्य एक सच्चा और अच्छा इन्सान जो कि तन, मन और धन से सुदृढ़ होकर एक जिम्मेदार और निष्ठावान नागरिक हो का निर्माण हो रहा है।

स्कूली शिक्षा के 10+2 में उसे 6 वर्ष तक के बालक/बालिका शामिल नहीं हैं, इस आयु वर्ग के बालकों के लिए नर्सरी, एल.के.जी., एच.के.जी. की कक्षाओं और आँगनबाड़ी में पूर्व प्राथमिक शिक्षा देने की व्यवस्था है, परन्तु इस व्यवस्था को बदल कर नई शिक्षा नीति में 5+3+3+4 ढाँचे में 3-6 आयु वर्ग के बच्चों को शामिल किया जाना प्रस्तावित है। ताकि प्रा. बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) की मजबूत बुनियाद रखी जा सके जो कि आगे जाकर फलदायी साबित होने वाली है, यह भी सच्चाई है कि बच्चे के 85 प्रतिशत मस्तिष्क का विकास 6 वर्ष की आयु से पहले हो जाता है, इसीलिए ई.सी.सी.ई. में शिक्षण को लचीला, बहुआयामी, आनन्ददायी, खेल आधारित गतिविधि एवं खोज आधारित बनाने पर जोर देने के साथ ही उसे अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, आकार, रंगों की पहचान आदि इनडोर और आउटडोर खेलों के माध्यम से ज्ञान देना प्रस्तावित है। शिक्षा मनोविज्ञान के सापेक्ष में देखा जाए तो इस आयु वर्ग के बालकों को शिक्षा की ग्राह्यता के लिए शुचि, पात्र बनाना होता है ताकि उसके अन्तस में प्रारंभिक तौर पर शैक्षिक संस्कारों का वमन हो सके और आगे जाकर प्रदत्त शिक्षा के मूल्य उसके लिए ज्ञानामृत साबित होकर उसकी जीवन यात्रा का मंगल पाथेय बनकर उसे मंजिल तक पहुँचने की क्षमता और सामर्थ्य प्रदाता बन सकें।

विविधताओं से भरे इस देश में बालक को बहुभाषी होना चाहिए, परन्तु 5+3+3+3 तक शिक्षा के माध्यम उसकी अपनी मातृभाषा होनी चाहिए उसके साथ अंग्रेजी और संस्कृत भी पूरक भाषाओं के रूप में जोड़ी जा सकती है। शिक्षा में आधुनिकता नवाचार और तकनीक की अपेक्षा से होने वाले क्रान्तिकारी परिवर्तनों से शिक्षण शैली को आबद्ध कर समय के साथ कदम ताल करना समय की माँग है, सुखद आश्चर्य यह भी है कि तकनीकी ज्ञान के विस्फोट के दौर में हमारी बाल मनीषा की अंगुलिया मोबाइल और कम्प्यूटर पर किस तरह से थिरकती नजर आ रही हैं जो कि वस्तुतः उसके द्रुतगति से होने वाले बौद्धिक विकास का परिचायक है।

साथ ही मसौदे के अनुरूप शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो कि बालक के लिए बोधगम्य होकर उसके वांछित मूल्यों की संप्राप्ति करा सके तथा उसकी संकल्पना और अवधारणा को साकार कर सके, सम्यक् पाठ्यक्रम के साथ ही शैक्षिक प्रबंधन भी चुस्त दुरुस्त होना चाहिए, प्रभावी निरीक्षण के माध्यम से समुचित निगरानी भी आवश्यक है।

शिक्षा में होने वाले बदलावों में शिक्षक

की भूमिका अतिशय महत्त्वपूर्ण हो इसलिए इसकी सफलता के केन्द्र में शिक्षक होना चाहिए क्योंकि एक शिक्षक की कर्मनिष्ठा और श्रमनिष्ठा ही इस मिशन की सफलता का प्रथम सोपान है, सच्चाई तो यह है कि एक योग्य और विषय निष्णात शिक्षक अपनी प्रभावी शिक्षण विद्या ज्ञान पिपासु बालक के लिए फलदायी और शुभंकर साबित हो सकती है। वस्तुतः एक स्वाभिमानी शिक्षक ही शिक्षा और शिक्षार्थी के लिए सम्यक अवदान कर सकता है, इस सच्चाई के सापेक्ष हमें हर स्तर पर उसके व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक स्टेट्स का संरक्षण करना चाहिए साथ ही शिक्षक सांस्कृतिक, शैक्षिक, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक दृष्टि से समर्थ और उन्नत होना चाहिए। उसके पास शिक्षार्थियों के लिए निर्दोष अनुभव कोष भी होना चाहिए ताकि एक शुद्ध, बुद्ध और प्रबुद्ध शिक्षक अपने जीवन के अंतिम क्षणों में इस भाव सम्पदा के साथ कह सकता है

''बुझने का मुझे कुछ दुःख नहीं, पथ सैंकड़ों को दिखला चुका हूँ।'' (महाकवि सनेही जी)

नई शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा से लेकर महाविद्यालयी शिक्षा तक में आमूलचूल परिवर्तन की झलक दिखाई देती है। शिक्षक भर्ती में भी नए प्रावधानों का उल्लेख किया गया है, नए नियमों में शिक्षक भर्ती के लिए लिखित परीक्षा के साथ-साथ साक्षात्कार एवं डेमो टीचिंग भी जरूरी की गई है। प्रथम चरण में लिखित परीक्षा, द्वितीय चरण में शैक्षिक अभिलेख तथा तीसरे चरण में साक्षात्कार देना होगा और अन्तिम चौथे चरण में डेमो टीचिंग देनी होगी। इस प्रक्रिया के उपरान्त ही किसी शिक्षक की भर्ती सम्पादित होगी। इसको पारदर्शी बनाने के लिए ठोस उपाय भी करना आवश्यक है।

समाहार रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा नीति, शैक्षिक परिवेश और प्रबन्धन इस महान राष्ट्र की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत और जीवन मूल्यों के अनुरूप होनी चाहिए तभी जाकर हम अपनी अस्मिता और पहचान कायम रखने में कामयाब हो सकेंगे।

रामगोपाल बस स्टेण्ड, भीण्डर, उदयपुर (राज.)-313603
मोः 9413208719

दीपावली विशेष

ज्योति पर्व का स्वच्छता संदेश

❐ **शबनम भारतीय**

ज्योति पर्व दीपावली रोशनी और प्रकाश का पर्व है इसे हम शुद्धता का, शुभ्रता का पर्व कहें तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि यह वह पर्व है जिस पर सबसे अधिक स्वच्छता पर, सफाई पर जोर दिया गया है। धार्मिक नजरिए से देखें तो श्रीराम का अयोध्या आगमन और देवी लक्ष्मी का विष्णु संग विवाह जहाँ इसके धार्मिक महत्त्व को इंगित करते हैं तो वहीं दूसरी तरफ अगर हम सूक्ष्म दृष्टि से त्यौहार मनाने के तरीके पर अवलोकन करें तो हम पाते हैं कि इस पर्व पर सबसे अधिक जिस चीज को महत्त्व दिया गया है वह स्वच्छता, सफाई और शुद्धता है।

इस दृष्टि से हम इस त्योहार को शुद्धता का, पावनता का त्यौहार भी कह सकते हैं क्योंकि ऐसा माना जाता है कि दीपावली की आराध्या देवी लक्ष्मी को स्वच्छता, निर्मलता पसन्द है और लक्ष्मी ही नहीं देवता भी वहीं वास करते हैं जहाँ स्वच्छता हो, मलिनता और गंदगी न हो। यही कारण है कि इस त्यौहार पर घर-द्वार के साथ बाजार, गली-मोहल्लों की सफाई भी की जाती है। घर के हर एक कोने को, एक-एक सामान को धोया, झाड़ा और साफ किया जाता है जो कि वैज्ञानिक महत्त्व से, दृष्टिकोण से भी उपयोगी है, क्योंकि दीपावली का पर्व वर्षा ऋतु के पश्चात आता है जैसा कि हम जानते हैं वर्षा ऋतु के कारण दीवारों पर सीलन आ जाती है अनेक प्रकार के कीट पतंगे पैदा हो जाते हैं जो कि विभिन्न प्रकार की मौसमी बीमारियों का कारण बनते हैं। यही कारण है कि इस त्यौहार पर घरों-दुकानों की मरम्मत, साफ-सफाई कर रंग-रोगन किया जाता है। इन सब के पीछे की वैज्ञानिक सोच यही है कि कली कलर से, चूने से जीवाणुओं का नाश हो जाता है और घर द्वार फिर से स्वच्छ और निर्मल हो जाते हैं।

यह सोच जहाँ प्राचीन भारत के लोगों की स्वच्छता के प्रति उच्च विचार की ओर संकेत करती है, इशारा करती है तो वहीं दूसरी तरफ धार्मिक, सांस्कृतिक महत्त्व की ओर भी। अगर हम सूक्ष्म अवलोकन करें तो पाते हैं कि यह दुनिया में शायद स्वच्छता का सबसे बड़ा और प्राचीन उत्सव है। इसे हम धार्मिक दृष्टिकोण से मनाए जाने वाला शुभ्रता का आंदोलन कहें तो भी गलत नहीं होगा। ये एक मात्र ऐसा सफाई अभियान है जो कि किसी सरकारी आदेश से नहीं सिर्फ श्रद्धा और भक्ति से प्रतिवर्ष हजारों वर्षों से मनाया जा रहा है।

देखा जाए तो आज के कोरोना काल के परिप्रेक्ष्य में भी इस त्योहार का महत्त्व स्वयं सिद्ध हो जाता है क्योंकि इस संक्रमण काल में भी जिस बात पर सबसे अधिक फोकस किया गया वह स्वच्छता, सफाई ही है वो चाहे व्यक्तिगत हो या व्यष्टिगत। लेकिन इतने सब के बाद भी आवश्यकता है कि हम घर-बाजार की ही नहीं, मन मंदिर की हृदय की सफाई भी करें। वर्ष भर में जो दुर्भावनाएँ, बुराइयाँ, कलुषताएँ मन में पैदा हो जाती हैं उनको साफ कर, मन से निकाल मन का भी शुद्धिकरण कर लें, निर्मलीकरण कर लें।

जैन धर्म के प्रवर्तक, तीर्थंकर महावीर स्वामी ने शायद इसी विचार के मद्देनजर रखते हुए क्षमा पर्व की शुरूआत की थी। आज जरूरत है इस बात की भी है कि हम घरों और दुकानों, बाजार की सफाई की तरह ही प्रतिवर्ष जलाशय, नदियों की सफाई भी करें ताकि हमारे जल स्रोत स्वच्छ रह सकें क्योंकि जल है तो कल है और दीपावली का त्यौहार तो हमें शुद्धता का, स्वच्छता का, पावनता का संदेश ही देता है। जरूरत है कि इस संदेश को आत्मसात कर हम एक दिन नहीं प्रतिदिन दीपावली मनाएँ और संकल्प लें कि हम साल में सिर्फ एक ही दिन नहीं बल्कि साल के बारह महीनों, तीन सौ पैंसठ दिन अपने घर, अपने गली मोहल्लों, अपने गाँव और अपने देश की स्वच्छता का ही नहीं, तन-मन की एवं पर्यावरण की शुद्धि का भी ध्यान रखेंगे।

इल्सायतों की मस्जिद के पास, वार्ड नं. 17, ए.जी. खान रोड, फतेहपुर शेखावाटी, सीकर (राज.)
मो. 8619896258

भाषायी-समन्वय

राष्ट्रीय एकता में भाषाओं का योगदान

❒ डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

किसी भी राष्ट्र की सम्पन्नता का परिचय उसके धर्म, दर्शन और भाषाओं की विविधता के द्वारा मिलता है तथा उसकी शक्ति उन विविधताओं में छिपी भावनात्मक एकता से प्रकट होती है। भारत के लिए यह गर्व का विषय है कि यहाँ अनेक प्रान्त हैं, उनकी अपनी प्राकृतिक सम्पदा है, अपने-अपने धर्म, दर्शन व रीति-रिवाज हैं, विभिन्न वेशभूषाएँ हैं तथा रहन-सहन के तरीके हैं फिर भी हम भारतवासी इस तथ्य को कभी नहीं भूले कि हम सब एक हैं। इस एकता का श्रेय सबसे अधिक हमारी भाषाओं को हैं जिन्होंने हमारे देश को अखण्डता के एक सूत्र में बाँधकर इसे बल दिया है।

भाषाओं के द्वारा हमारे देश में जिस भावात्मक एकता की प्रतिष्ठा हुई है वह कृत्रिम अथवा आरोपित न होकर सहज और स्वाभाविक है क्योंकि भारत की प्रायः सभी भाषाएँ संस्कृत की संतान हैं। सभी भाषाएँ आपस में सहोदरा बहिन सा नाता रखती हैं। इस कारण इनकी प्रकृति, इनका स्वरूप तथा इनमें संनिहित विचारों में तादात्म्य होना स्वाभाविक है। इसी बिन्दु को ध्यान में रखते हुए गाँधीजी ने कहा था-**'भारत एक घर है ऐसा घर जिसमें भाषा के अनेक भाई-बहिन मिलकर एक साथ रहते हैं।'**

एक कुशल चित्रकार चित्र में अनेक रंगों का इस प्रकार संयोजन करता है कि यह ज्ञात करना कठिन है कि कौनसा रंग कहाँ शुरू होकर कहाँ खत्म होता है। इसी प्रकार भाषाओं की भी स्थिति है। भारत की सभी भाषाओं के विषय में यह निर्णय करना कठिन है कि किस भाषा का क्षेत्र कहाँ से आरम्भ होकर कहाँ समाप्त होता है। हम अध्ययन अथवा प्रशासनिक व्यवस्था की सुविधा के लिए भाषाओं को क्षेत्र में बांट देते हैं पर वास्तविकता यह है कि भारत की किसी भाषा को पूर्णतया सीमाबद्ध कभी नहीं किया जा सकता। एक भाषा दूसरी भाषा से प्रभावित होती है और दूसरी तीसरी से क्योंकि भाषा का जन्म जन साधारण के मध्य से हुआ है। कोई मनुष्य अकेला नहीं रहना चाहता। आपस में मिलजुल कर बातचीत करके अपना अकेलापन दूर करने की उसकी स्वाभाविक लालसा होती है। वह अपना अनुभव दूसरों को सुनाता है और दूसरों के अनुभव स्वयं सुनता है। भावों के इस आदान-प्रदान के परिणामस्वरूप एक भाषा के शब्द, वाक्य, मुहावरे दूसरी भाषा में अपने आप आ जाते हैं। जैसे हिन्दी भाषा में गुजराती भाषा के हड़ताल, बंगला के गल्प, उपन्यास, मराठी के चालू, पंजाबी के सिक्ख, छोले, द्रविड़ परिवार के अटवी, पिल्ला आदि शब्द विद्यमान हैं। इस प्रकार भाषा ने प्रान्त के सीमा बन्धनों को तोड़कर हमारी भावात्मक एकता का परिचय दिया है।

भाषा ने साम्प्रदायिकता की दीवारों को समाप्त करने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी केवल हिन्दुओं की भाषा नहीं है और न उर्दू मुसलमानों की। ये दोनों भाषाएँ वास्तव में एक ही भाषा के दो रूप हैं। अन्तर लिपि का है अथवा इस बात का कि उर्दू में अरबी, फारसी के कुछ शब्द अधिक हैं और हिन्दी में संस्कृत के शब्द अपेक्षाकृत अधिक हैं। भारतवासी चाहे किसी भी सम्प्रदाय के हों, जिस क्षेत्र में रहते हैं प्रायः उसी की भाषा बोलते हैं, राजस्थान का रहने वाला राजस्थानी बोलता है और बिहार का रहने वाला बिहारी, चाहे वह हिन्दू, मुसलमान अथवा ईसाई कोई भी हो। जब एक क्षेत्र के समस्त समुदायों के लोग एक ही भाषा में विचार विनिमय करते हैं तब उनमें साम्प्रदायिक बन्धन स्वतः शिथिल हो जाते हैं।

भाषाओं का पारस्परिक प्रभाव हमारी संस्कृति को भी प्रभावित करता है। भाषाओं द्वारा विचारों के आदान-प्रदान के साथ-साथ वेशभूषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज में भी पारस्परिक प्रभाव अनायास आ जाता है। इस प्रकार विविध क्षेत्रों से धर्म, दर्शन और परम्पराओं की धाराएँ मिलकर एक विशिष्ट धारा का रूप ले लेती हैं जिसे भारतीय संस्कृति कहते हैं।

देश के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसी राष्ट्रीय चेतना होती है जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र को बल मिलता है। किसी भी क्षेत्र की भाषा को उपेक्षित कर देने का अर्थ है उस क्षेत्र से सम्पर्क तोड़कर उसकी राष्ट्रीय भावना से अपने को वंचित कर लेना।

भाषाओं ने अपने साहित्य के द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना को सुरक्षित रखा है। भारतीय संस्कृति और साहित्य के आदि स्रोत वेदों में राष्ट्रीय भावना को पर्याप्त बल दिया है। **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'** भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। **'यते महि स्वराष्ट्रे-हम राष्ट्र रक्षा के लिए प्रयत्नशील हों'** जैसी उक्तियाँ वेदों में यत्र-तत्र मिल जाती हैं। साथ मिलकर चलने, प्रेम से बोलने और विचार करने की प्रेरणा वेदों में दी गई है। मनु ने भारतभूमि में जन्म लेना ही परम गौरव का कारण बताया है। वेदों और सूक्तियों ने मानव को उसके जाति कर्म नामकरण से लेकर दाह कर्म तक जो सोलह संस्कार दिए हैं उनकी विधियाँ समस्त भारत में लगभग एक जैसी हैं। अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण भारत आदि काल से आज तक एक है।

संस्कृत के दो महान ग्रन्थ रामायण और महाभारत ने भारत की सांस्कृतिक एकता को और भी अधिक गहरा बना दिया है। राम और कृष्ण समस्त भारत की आस्थाओं के केन्द्र हैं। भारत की प्रत्येक भाषा में राम और कृष्ण की कथा पर काव्य रचना की गई है। तमिल, तेलगू, मलयालम, असमिया, उड़िया, बंगला, कन्नड़, मराठी, पंजाबी कितनी ही भाषाओं में राम और कृष्ण पर काव्य रचना की गई है। सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह ने गोविन्द रामायण हिन्दी में लिखी है। तुलसी का रामचरित मानस अहिन्दी भाषी परिवारों में भी एक उच्च कोटि के साहित्यिक और धार्मिक ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित है।

भक्ति साहित्य ने प्रान्त, सम्प्रदाय की सभी सीमाओं को तोड़कर समस्त भारत को एक रंग में रंग दिया। बंगाल के चण्डीदास और चैतन्य महाप्रभु, उत्तर भारत के कबीर, सूर, तुलसी,

महाराष्ट्र के ज्ञानदेव, गुजरात के नरसी मेहता और राजस्थान की मीराबाई का काव्य समस्त भारतवासियों की जिह्वा पर विराजने लगा। जायसी, कुतुमन, मंझन जैसे सूफी सन्तों ने सबको एक करने के लिए हिन्दी में काव्य रचना की। रहीम, रसखान, रज्जब भारतीय साहित्य और धर्म के उपासक थे। भक्ति की इस राष्ट्रव्यापी क्रान्ति ने समस्त भारत को एक सूत्र में बाँधने का सफल प्रयास किया।

साहित्यकार के मन में इस बात का आग्रह कभी नहीं रहा कि वह अपने ही क्षेत्र की भाषा में साहित्य रचना करे तथा न किसी काव्य प्रेमी ने अपने ही क्षेत्र की भाषा के साहित्य को आदर देने का आग्रह किया। कवि पद्माकर दक्षिण भारतीय होकर भी ब्रजभाषा के गायक रहे। ग्वालियर में जन्मे बिहारी ने ब्रज भाषा में काव्य रचना की और जयपुर के राजा जयसिंह के दरबार में बड़े आदरपूर्वक रहे। भूषण की हिन्दी कविता महाराष्ट्र के अधीश्वर शिवाजी की राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित रही। प्रेमचन्द, अश्क, सुदर्शन, फिराक गोरखपुरी ने उर्दू भाषा की सेवा की। आज भी मुंशी अजमेरी, अहमद बिल गाजी, नजीर अकबरावादी, इस्मत चुगतायी जैसे मुस्लिम साहित्यकार हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि कर रहे हैं।

प्रत्येक क्षेत्र तथा प्रत्येक जाति का साहित्य राष्ट्र प्रेम की भावना से लबालब भरा हुआ है। बंगला भाषा के जन गण मन और वन्दे मातरम् हमारे राष्ट्र गीत हैं। हिन्दी का 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' गीत देश के हर कोने में गाया जाता है। तमिल कवि सुब्रह्मण्यम् भारती के राष्ट्रीय उद्गार समस्त देश के लिए गौरव की वस्तु है। इकबाल का 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' आज भारत के हर बच्चे की जिह्वा पर विराज रहा है। राष्ट्र के किसी कोने में जब कभी राष्ट्र विरोधी तत्व पनपते हैं तो सभी भाषाओं में इनकी खुलकर निंदा होती है। हिंसा, रक्तपात और साम्प्रदायिक विष को देखकर साहित्यकार की आत्मा कराहने लगती है और राष्ट्र पर संकट आने पर उसकी रक्षा का संकल्प हर साहित्य में दोहराया जाता है।

4/82 चोटाला रोड, वार्ड-23, संगरिया,
हनुमानगढ़ (राज.)
मो: 8561069369

कर्मपथ

सफलता एक पथ

❐ सुनिता पंचारिया

सफलता शब्द आते ही चंचल मन में हिलोरें, उमंगें उत्पन्न होने लगती हैं। सफलता का मूल मंत्र कार्य के प्रारम्भ में निहित है, प्रारम्भ में एक कदम रख देने से होता है। जिस प्रकार बून्द-बून्द से घड़ा भरता है उसी प्रकार एक-एक सोपान, एक-एक सीढ़ी चढ़ने से ही मंजिल मिलती है। रॉबर्ट एच. शूलर ने लिखा है- **'जीतना शुरू करने से प्रारम्भ होता है और शुरू एक कार्य या एक कदम रख देने से होता है।'**

सफलता क्या है- इस प्रश्न का उत्तर एक दूसरे प्रश्न द्वारा भी ढूँढ़ा जा सकता है। सफलता किसी वस्तु या स्थिति का नाम नहीं है, जिसने प्राप्त कर लिया उस व्यक्ति को सफल कहा जाए। सफलता का सीधा सादा अर्थ यह है कि मनुष्य जो चाहता है वह उसे प्राप्त हो जाए अर्थात जो कार्य कर रहा है या करना चाहता है उसका परिणाम उसके मन के अनुकूल हो। सफलता प्राप्त करने के लिए मनुष्य को संयम, शक्ति और साधनों के रूप में कुछ न कुछ त्याग करना पड़ता है।

रॉबर्ट एच. शूलर ने कहा है कि सफलता क्रियाओं की उस शृंखला का नाम है जो असम्भव दिखने वाले सपनों को देखने का साहस प्रदान करती है, साकार करने की प्रेरणा देती है और यह विश्वास दिलाती है कि संसार में ईमानदारी के भाव से प्रयास करने पर कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है अर्थात हम इस आधार पर यह कह सकते हैं कि सफलता एक बीज बोने की क्रिया का नाम है जिसमें पौधे का विकास होगा और हमें फल निश्चित रूप से प्राप्त होंगे ही। सफलता एक पथ है जिसका कोई अन्त नहीं है और असफलताएँ उस पथ पर आने वाली बाधाएँ जो क्षणिक व सामयिक हैं।

इसी संदर्भ में महात्मा गाँधी कहते हैं संसार में सच्ची सफलता सेवा और उदारता से ही प्राप्त होती है। जो व्यक्ति सेवक है और निस्वार्थ भाव से सेवा करता है उसे सफलता अवश्य प्राप्त होगी। उनका कहना था कि-**'कार्य की अधिकता नहीं अनियमितता आदमी को थकाती है।'** अतः आवश्यकता है क्षमता को पहचानने की, आत्मविश्वास की और लक्ष्य प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा। ऐसी कुछ सामान्य बातें हैं जो सफलता प्राप्ति को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं- 1. लक्ष्य की स्पष्टता, 2. दृढ़ निश्चय, 3. आत्मविश्वास, 4. सतत कार्य, 5. उचित तैयारी, 6. साहस, 7. नैतिक बल, 8. कार्य के प्रति श्रद्धा।

सफलता अपने आप नहीं मिलती उसके लिए सोच समझकर लक्ष्य का चुनाव, लक्ष्य प्राप्ति के लिए सुनियोजित कार्यक्रम, लक्ष्य और साधन में उचित समन्वय तथा फिर उसके लिए कड़ी मेहनत और प्रयास करने पड़ते हैं। इस प्रकार से सभी व्यक्ति सफलता के लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। अंग्रेजी साहित्यकार शेक्सपीयर ने लिखा **'यदि सफलता की चाह है तो स्वयं को प्रत्येक क्षण काम/उद्यम में डूबा दो। सफलता मिलकर ही रहेगी।'** सफलता भाग्य और प्रतिभा से नहीं अपितु उचित तैयारी और दृढ़ निश्चय से प्राप्त होती है।

इसलिए रॉबर्ट एच. शूलर ने सफलता के KEY WORD STRIVE प्रयास है अर्थात

S- Start Small छोटी बातों से शुरूआत करो।

T- Think Possibilities संभावनाओं पर विचार करो।

R- Reach Little Further थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ो।

I- Invest Wisely समय व साधनों का बुद्धिमत्ता से अधिकतम उपयोग करो।

V-Visualize Success सदैव सफलता का सपना देखो।

E- Expand Carefully सावधानीपूर्वक ज्ञान व कार्यक्षेत्र का विस्तार करो।

कहने का तात्पर्य यह है कि आत्मविश्वास के साथ सावधानीपूर्वक किए गए निरन्तर प्रयास में ही सफलता का रहस्य निहित है।

अध्यापिका
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जूना,
गुलाबपुरा, भीलवाड़ा
मो: 9251775153

प्रेरक-व्यक्तित्व

'जीवन की सीख' क्रिकेट के शांति दूत से

❒ आत्माराम भाटी

खेलों के दुनिया में बहुत ही कम नाम ऐसे हैं जिन्होंने अपने दमदार खेल के साथ-साथ अपने स्वभाव से लोगों के दिलों में जगह बनाई और पूरी दुनिया के खेल प्रेमियों की जुबान व दिमाग में रच बस गए। उनमें एक नाम है महेंद्र सिंह धोनी का। जिन्होंनें अपनी कप्तानी में न केवल भारतीय क्रिकेट को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की, बल्कि क्रिकेट के दो प्रारूपों में विश्व विजेता का खिताब भी दिलवाया। इस आलेख के माध्यम से महेंद्र सिंह धोनी की बात इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि इन्होनें देश के स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 2020 को 'इंस्टाग्राम' पर यह पोस्ट डालकर सबको चौंका दिया कि 'मेरे कैरियर में आप सबके प्यार, सहयोग का बहुत-बहुत शुक्रिया। आज 19.29 बजे से आप मुझे रिटायर समझें।'

धोनी ने बतौर सेनानायक खेल के मैदान में विकट हालात में भी जिस संजीदगी से सटीक निर्णय लेकर अनेक बार टीम इंडिया को हार के चक्रव्यूह से निकाल कर जीत की दहलीज पर पहुँचाया है वो काबिले तारिफ हैं। यही नहीं इन्होंने अपने व्यक्तित्व व स्वभाव से न केवल क्रिकेट प्रेमियों बल्कि आम लोगों के दिलों में भी जगह बनाई। आईये बात करते हैं धोनी के गुणों के उस खजाने की जिससे सीख लेकर कोई भी कामयाबी के शिखर पर पहुँच सकता है।

क्रिकेट का शांति दूत : जब आदमी के जीवन में कुछ चीजें उसके चाहे अनुसार नहीं होती हैं तो स्वाभाविक है कि उसके दिलो-दिमाग पर गुस्सा व नाराजगी इतनी हावी हो जाती है कि वो अपने लक्ष्य के करीब पहुँचकर भी उत्तेजना में लिए गलत निर्णयों से लक्ष्य दूर होता चला जाता है। ऐसे में धोनी के शांत मन से निर्णय लेने वाले गुण से सीख लेनी चाहिए। महेंद्र सिंह धोनी कहते हैं कि जब चीजें मेरे पक्ष में नहीं हो रही हैं तो मुझे भी आम आदमी की तरह गुस्सा, परेशानी व चिढ़ होती है लेकिन ऐसे हालात में सदैव मैंने अपने दिमाग को शांत रखकर अपने लक्ष्य को पाया है। अगर मैं भी मैदान में टीम के साथियों के साथ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शांत व एकाग्रचित्त होकर निर्णय नहीं लेता तो आज मेरे नेतृत्व में भारत के पास आईसीसी के तीन प्रमुख खिताब दो विश्व कप और एक चैंपियंस ट्रॉफी नहीं होती। आस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग ने धोनी के संन्यास पर स्वीकार किया कि उन्होंने अपने देश को कई बार विश्व विजेता बनाया लेकिन अपने आक्रामक स्वभाव के कारण आम लोगों के दिलों में वो जगह नहीं बना पाए जो धोनी बना पाए हैं। इसलिए सही मायने में कह सकते हैं कि सचिन के बाद अगर कोई क्रिकेट खेल का शांति दूत है तो वो 'माही' यानी धोनी है। इनके इस गुण से प्रेरित होकर बच्चे, युवा व बड़े सभी जीवन में आने वाली समस्याओं पर आसानी से पार पा सकते हैं।

छोटे लक्ष्य से बड़ी कामयाबी : महेंद्र सिंह धोनी जब स्कूल में पढ़ते थे, उस समय इनके खेल बैडमिंटन और फुटबॉल थे। क्रिकेटर बनने का इनके दिमाग में बिल्कुल भी नहीं था। उस समय कोई नहीं कह सकता था कि ये फुटबॉल का गोलकीपर क्रिकेट का विकेटकीपर बन पूरे क्रिकेट जगत में छा जाएगा। इसकी शुरूआत हुई फुटबॉल कोच के उस निर्णय से जब उन्होंने धोनी को फुटबॉल से दूर कर एक क्रिकेट अकादमी में भर्ती करा दिया।

क्रिकेट में इन्हें और आनंद आने लगा तो इन्होंने इस खेल में आगे बढ़ने के लिए अपने छोटे-छोटे लक्ष्य तय करने शुरू किए। पहला लक्ष्य तय किया स्कूल की तरफ से जिला स्तर पर खेलना और दूसरा राज्य स्तर पर। जब इन दोनों लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया तो राष्ट्रीय स्तर पर खेलने के लिए सोचने लगे। इसके लिए कड़ी मेहनत की और सफल हुए। रणजी ट्रॉफी, दिलीप ट्रॉफी सहित कई राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपने प्रदेश का नेतृत्व करते हुए मैदान में अपनी बल्लेबाजी का भी जलवा दिखाया। इसके बाद इंडिया 'ए' से होते हुए दिसंबर 2004 में बांग्लादेश जाने वाली भारतीय वनडे टीम में कदम रखते हुए चटगांव में खेले गए वनडे से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का सफर शुरू कर दिया।

अब धोनी कहाँ रूकने वाले थे। ठीक एक साल बाद दिसंबर 2005 में चेन्नई में श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने में कामयाब रहे। एक साल बाद दिसंबर 2006 में क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप टी-20 में द. अफ्रीका के खिलाफ श्री गणेश किया। 2008 में सफर शुरू हुआ प्रोफेशनल क्रिकेट लीग आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स के साथ। धोनी के इसी गुण से हमें यह सीख लेनी चाहिए कि अगर किसी बड़े लक्ष्य को पाना है तो सीढ़ी दर सीढ़ी यानि छोटे-छोटे लक्ष्य को प्राप्त करते हुए आगे बढ़ो, न कि सीधा ही बड़े लक्ष्य को लेकर शॉर्टकट अपनाते हुए लंबी छलांग लगाओ।

बेजोड़ नेतृत्व क्षमता के धनी : मैदान पर लगातार बेहतरीन बल्लेबाजी का जलवा और तेज-तर्रार विकेटकीपिंग कौशल के प्रदर्शन के साथ सही समय पर ईमानदारी के साथ धैर्यपूर्वक सटीक निर्णय लेने के धोनी के गुणों का ही कमाल था कि सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ी ने 2007 में पहले टी-20 विश्व कप के लिए कप्तान के रूप में धोनी के नाम की सिफारिश कर दी। जबकि धोनी ने इससे पहले कभी भी स्थानीय टीम से लेकर प्रदेश की टीम या प्रथम श्रेणी क्रिकेट में कभी कप्तानी नहीं की थी। कैप्टन कूल माही ने सचिन के निर्णय को गलत साबित नहीं होने दिया। अपनी जबरदस्त नेतृत्व क्षमता, सही समय पर सटीक निर्णय की काबिलियत को उस समय सिद्ध कर दिखाया जब विश्व कप फाइनल के अंतिम ओवर का रोमांच चरम पर था। सभी की नजरें इस ओर थी कि अंतिम ओवर कौनसा अनुभवी गेंदबाज गेंदबाजी करेगा जो भारत को जीता कर ले जाएगा। लेकिन पूरा क्रिकेट जगत उस समय धोनी के निर्णय से अचंभित हो गया, जब धोनी ने मुस्कुराते हुए अंतिम ओवर फेंकने का जिम्मा युवा गेंदबाज जोगिंदर सिंह को दे दिया। जबकि उन्हें यह पता था कि युवा गेंदबाज के कारण भारत के हाथ से विश्व कप फिसल सकता है।

लेकिन, यह क्या पूरा क्रिकेट जगत गलत साबित हुआ, धोनी का जोखिम भरा निर्णय सही। भारत विश्व विजेता बनकर लौटा।

वनडे में धोनी के स्वयं के बेहतरीन प्रदर्शन और टीम इंडिया के सेनानायक के रूप में भारत को लगातार मिल रही सफलताओं ने बीसीसीआई ही नहीं भारतीय क्रिकेट प्रेमियों को भी इस बार धोनी के नेतृत्व में वनडे विश्व कप जीतने के प्रबल आसार नजर आने लगे। यह धोनी ने सच कर ही दिखाया, जब अपने नेतृत्व में 2011 में भारत की धरती पर विश्व कप के सफर में जीत का रथ दौड़ाते हुए खिताबी मुकाबले में श्रीलंका को परास्त कर 28 साल बाद विश्व कप भारत के नाम कर दिया। यही नहीं क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन की झोली में भी डाल दिया, जिनके नाम क्रिकेट के तमाम रिकॉर्ड थे, लेकिन विश्व कप नहीं था। वनडे में धोनी की कप्तानी में मिली उपलब्धियों में अगस्त, 2008 में श्रीलंका में पहली द्विपक्षीय वनडे सीरीज और मार्च 2009 में न्यूजीलैंड के खिलाफ पहली वनडे सीरीज जीतना प्रमुख है।

महेंद्र सिंह धोनी ने टेस्ट क्रिकेट में भी अपने नेतृत्व की बेजोड़ क्षमता का लोहा मनवाया। सितंबर, 2008 में टीम इंडिया के नियमित टेस्ट कप्तान बने। 2009 में इनकी कप्तानी में भारत आईसीसी टेस्ट रैंकिग में पहली बार नंबर वन बना। उसके बाद दो बार और भारत नंबर वन बना। 2013 में गांगुली का रिकॉर्ड तोड़ते हुए धोनी 49 टेस्ट में 21 जीत दर्ज कर देश के सबसे सफल कप्तान बनें। यही नहीं सबसे ज्यादा 27 टेस्ट जीत आज भी इन्हीं के नाम है।

इस तरह से महेंद्र सिंह धोनी के बतौर टीम इंडिया कप्तान के रूप जो बेजोड़ नेतृत्व के गुण रहे, उनसे हमें यही सीख मिलती है कि सही समय पर सटीक निर्णय लेना चाहिए, जोखिम लेने से नहीं डरना चाहिए, युवाओं पर भी पूरा भरोसा करना चाहिए, मेहनत में कमी नहीं होनी चाहिए, धैर्य के साथ अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण और ईमानदार रहकर हम बड़े से बड़ा लक्ष्य भी प्राप्त कर सकते हैं।

आलोचना और अहंकार को नमस्कार: टीम इंडिया के सबसे सफल कप्तान। दुनिया के अब तक के सबसे बेहतरीन विकेटकीपर बल्लेबाज। खुद का शानदार उपलब्धियों से भरा कैरियर होने के बाद भी महेंद्र सिंह धोनी के दिल और दिमाग में कभी अहंकार प्रवेश नहीं कर पाया। इन्होंने कभी यह अहसास नहीं होने दिया कि मैं बड़ा व महान खिलाड़ी हूँ। हमेशा धरती से जुड़े रहे। साथ ही अब तक कैरियर में धोनी ने मैदान या मैदान के बाहर किसी की भी न तो आलोचना की और न ही कोई अपशब्द अपने मुँह से निकाले। इनके इन गुणों से सीख यही मिलती है कि आप चाहे कितनी भी ऊँचाई पर पहुँच जाओ, अहंकार को कभी भी पास न आने दो। साथ ही कभी भी किसी की आलोचना मत करो, जो जैसा कर रहा है वो उसकी सोच है, सलाह दे दो मान जाए तो ठीक अन्यथा चुप रहना ही बेहतर है। जब आप किसी की आलोचना नहीं करोगे तो किसी को भी आपकी आलोचना करने की मन में नहीं आएगी। वो आपका सम्मान ही करेगा।

उपलब्धियों पर सम्मान: जब एक खिलाड़ी अपनी मेहनत, जज्बे व साहस के दम पर अपने खेल के सहारे अपने शहर, प्रदेश से लेकर देश का नाम पूरे खेल जगत में रोशन करता है तो इतना तो फर्ज देश व समाज का भी बनता है कि वो अपने इस मेहनती लाडले की उपलब्धियों का सम्मान करे। जिस तरह से अपने 16 साल के अंतरराष्ट्रीय कैरियर में महेंद्र सिंह धोनी ने खेल कौशल व सफल कप्तान के रूप में उपलब्धियाँ अर्जित की हैं तो हमारे देश की सरकार ने भी उन्हें 2007-08 में देश के सर्वोच्च खेल सम्मान 'राजीव गाँधी खेल रत्न।' अप्रेल 2009 में देश के चौथे सबसे बड़े सम्मान 'पद्मश्री' से और अप्रेल 2018 में 'पद्मभूषण' से सम्मानित कर उनका सम्मान किया। इसी तरह क्रिकेट की सर्वोच्च संस्था आईसीसी ने भी 2008 व 2009 में वर्ष का सर्वश्रेष्ठ वनडे क्रिकेटर का पुरस्कार धोनी को प्रदान किया। लगातार दो साल इस पुरस्कार को पाने वाले वे पहले भारतीय हैं।

पूरे देश का सलाम : जब आप देश के लिए सबसे अलग हटकर काम करते हैं तो निश्चित ही आपके इस काम पर देश को भी गर्व होता है। तभी तो जब धोनी ने क्रिकेट को अलविदा कहने की घोषणा की तो बाकायद देश के प्रधानमंत्री ने पत्र लिखा कि 'डियर धोनी आपके इस फैसले से 130 करोड़ देशवासी निराश जरूर हैं, लेकिन आपका नाम सदैव दुनिया के बेहतरीन विकेटकीपर बल्लेबाजों में अमर रहेगा। आप युवाओं की प्रेरणा बनेंगे।' धोनी की माता देविका ने कहा कि 'देश की हर माँ को माही जैसा बेटा मिले।' वहीं पत्नी साक्षी कहती है कि 'आपकी उपलब्धियों पर गर्व है, आपने अपने जुनून को अलविदा कहने के लिए आँसुओं को रोक लिया होगा।'

सचिन– 'मैंने जिन कप्तानों के अंडर खेला है, उनमें धोनी बेस्ट हैं।' **कपिल देव**– 'धोनी मेरे हीरो हैं।' **सौरव गाँगुली**– 'वनडे में धोनी सर्वकालीन महान कप्तानों में से एक हैं।' **रवि शास्त्री**– 'धोनी जब स्टंपिंग और रनआउट करते हैं, उनके हाथ किसी जेबकतरे से भी ज्यादा तेज चलते हैं।' **गावस्कर** ने तो यहाँ तक कह दिया कि 'जब मेरी मृत्यु होगी, अंतिम चीज जो मैं देखना चाहूँगा वह 2011 विश्व में धोनी द्वारा लगाया गया विनिंग छक्का होगा।' आस्ट्रेलिया के **स्टीव वॉ**– 'अगर मुझे किसी टीम का चयन करना होगा तो धोनी उस टीम के कप्तान होंगे।' **गैरी कर्स्टन**– 'मैं धोनी को अपने साथ लेकर युद्ध के लिए भी जा सकता हूँ।' महेंद्र सिंह की उपलब्धियों पर पूरे देश व क्रिकेट जगत से मिले सम्मान से हम सभी यही सीख ले सकते हैं कि यदि हम अपने देश के लिए आम आदमी से हटकर ऐसा काम अपने दम पर करेंगे जिससे जिले, प्रदेश व देश का नाम विश्व स्तर पर रोशन होगा तो मानकर चलिए आपकी उपलब्धि पर समाज व देश और देश का हर नागरिक आपका भी सम्मान पूरी ईमानदारी से प्रफुल्लित होकर करेगा।

अंत में शांत व सौम्य स्वभाव के धनी। महेंद्र सिंह धोनी जैसे खिलाड़ी सदी में कम ही होते हैं। कह सकते हैं अभी वर्तमान सदी के वो एक अच्छे मानवीय गुणों से परिपूर्ण एक बेहतरीन खिलाड़ी हैं। उस समय निश्चित तौर पर धोनी का दिल, दिमाग व आत्मा गद्‌गद् हो गई होगी जब पूरे देश ने उन्हें धन्यवाद दिया। उन्हें सही मायने में लगा होगा कि वाकई उन्होंने अपने देश के लिए कुछ किया है।

वरिष्ठ खेल समीक्षक
पंडित धर्म कांटे के सामने वाली गली में, सुरभि ब्यूटी पार्लर, गजनेर रोड, बीकानेर, राजस्थान।
मो: 09413726194

भारतीय गौरव

भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की महत्त्वपूर्ण जानकारी

❒ चन्द्रभूषण शर्मा

1. राष्ट्रपिता : महात्मा गाँधी (मोहनदास करमचन्द गाँधी)ः– राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई. को गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ। भारत को स्वतंत्र कराने में गाँधीजी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसके लिए उन्होंने **'सत्य'** और **'अहिंसा'** की नीति को अपनाया। 1919 से 1948 तक के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन काल को **'गाँधी युग'** के नाम से जाना जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2007 से गाँधी जयंती (2 अक्टूबर) को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाए जाने की घोषणा की।

गाँधीजी को मिले उपनाम–

क्र.सं.	उपनाम	जिसके द्वारा दिया गया
1.	राष्ट्रपिता	सुभाष चन्द बोस
2.	महात्मा	रवीन्द्रनाथ टैगोर
3.	मलंग बाबा	खुदाई खिदमतगार
4.	बापू	पं. जवाहरलाल नेहरु
5.	अर्ध नंगा फकीर	विस्टन चर्चिल
6.	जादूगर	शेख मुजीब उर रहमान

2. राष्ट्रीय ध्वजः तिरंगा (Tiranga)ः– भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को तिरंगा के नाम से जाना जाता है। भारतीय संविधान सभा ने 22 जुलाई 1947 को इसे अपनाया। यह आयताकार है और इसकी लम्बाई और चौड़ाई में 3ः2 का अनुपात है। यह ध्वज तीन समान क्षैतिज भागों में बँटा हुआ है। ऊपर की पट्टी गहरे केसरिया रंग की है। केसरिया रंग त्याग, शौर्य और बलिदान का प्रतीक है। बीच की पट्टी सफेद रंग की है। यह सत्य और शान्ति का प्रतीक है। सफेद पट्टी के मध्य 24 तीलियों वाला गहरे नीले रंग का चक्र है। चक्र गति, प्रगति और उत्साह को इंगित करता है। तिरंगा में सबसे नीचे की पट्टी गहरे हरे रंग की है। हरा रंग जीवन, उत्पादकता और खुशहाली को दर्शाता है। यह विश्वास और दृढ़ता का भी प्रतीक है।

3. राष्ट्रीय गान : जन–गण–मन

जन–गण–मन अधिनायक जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
पंजाब–सिन्धु–गुजरात–मराठा
द्राविड़–उत्कल–बंग
विंध्य–हिमाचल–यमुना–गंगा
उच्छल–जलधि–तरंग।
तब शुभ नामे जागे,
तब शुभ आशिष मांगे,
गाये तब जय गाथा,
जन–गण–मंगल–दायक, जय हे,
भारत–भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय, जय, जय, जय हे।

राष्ट्रीय गान 'जन–गण–मन' की रचना रवीन्द्रनाथ टैगोर ने मूल रूप में बांग्ला भाषा में की थी। इसके हिन्दी संस्करण को राष्ट्रगान के रूप में भारतीय संविधान सभा ने 24 जनवरी 1950 ई. को अंगीकृत किया था। इस राष्ट्रगान में कुल 13 पंक्तियाँ हैं। जिसके गायन में 52 सेकण्ड का समय लगता है।

4. राष्ट्रीय गीत : वंदे मातरम्ः–

सुजलाम सुफलाम मलयज–शीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम्।
शुभ्र ज्योत्सना पुलकितयामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वन्दे मातरम्

बंकिमचन्द चट्टोपाध्याय द्वारा 7 नवम्बर, 1876 ई. को रचित 'वन्दे मातरम्' नामक राष्ट्रीय गीत को संविधान सभा द्वारा 24 जनवरी 1950 ई. को अपनाया गया। यह गान मूल रूप से बंगाली भाषा में था। बंकिम चन्द चटर्जी (चट्टोपाध्याय) ने इस गीत की रचना अपने उपन्यास 'आनन्द मठ' में 1882 ई. को की थी। इसमें 'सन्यासी विद्रोह' का वर्णन है। वंदे मातरम् का अंग्रेजी अनुवाद सर्वप्रथम अरविन्द घोष ने किया, जबकि इसका उर्दू अनुवाद 'आरिफ मुहम्मद खान' ने किया। इस 'वंदे मातरम्' नामक गीत की धुन पं. पन्नालाल घोष ने तैयार की है। वंदे मातरम् की रचना संस्कृत भाषा में है।

5. राष्ट्रीय चिह्न : अशोक स्तंभः–

भारत सरकार द्वारा 26 जनवरी 1950 ई. को सारनाथ में स्थित **'अशोक स्तंभ'** को राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकार किया गया। मूल स्तंभ के शीर्ष पर चार सिंह हैं जो एक–दूसरे की ओर पीठ किए हुए हैं। अशोक स्तंभ के नीचे की ओर अंकित पट्टी के नीचे एक चक्र तथा दांई ओर एक साँड और बांई ओर एक दौड़ता हुआ घोड़ा अंकित दिखाई देता है। राष्ट्रीय चिह्न में दर्शाए गए पशुओं में घोड़ा अदम्य शक्ति, परिश्रम एवं प्रगतिशीलता का द्योतक है। सिंह साहस, शौर्य एवं निर्भीकता का प्रतीक है और साँड भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था का द्योतक है। अशोक स्तंभ में नीचे की ओर देवनागरी लिपि में **'सत्यमेव जयते'** अंकित है जिसे 'मुण्डकोपनिषद्' से लिया गया है।

6. राष्ट्रीय पंचांगः– कैलेण्डर, ग्रिगेरियन कैलेण्डर के साथ–साथ भारतीय पंचांग 'शक संवत' पर आधारित है।

शक संवत 78 ई. में शुरू हुआ जिसे कुषाणवंशीय शासक 'कनिष्क' ने शुरू किया था। शक संवत का एक सामान्य वर्ष 365 दिन का होता है। इसका पहला महीना 'चैत्र' है और अंतिम महीना 'फाल्गुन' है।

राष्ट्रीय पंचांग के क्रमशः 12 माह होते हैं– यथा– (1) चैत्र, (2) वैशाख, (3) ज्येष्ठ, (4) आषाढ़, (5) श्रावण, (6) भाद्रपद, (7)

आश्विन, (8) कार्तिक, (9) अग्रहायण, (10) पौष, (11) मार्गशीर्ष, (12) फाल्गुन

भारत सरकार द्वारा सरकारी कामकाज के उद्देश्य से 22 मार्च 1957 ई. को 'राष्ट्रीय पंचांग' को अपनाया गया।

7. राष्ट्रीय पशु : बाघ (Tiger) (पैंथरा टाइग्रिस लिन्नायस) :–

वर्ष 1972 ई. में बाघ भारत का राष्ट्रीय पशु चुना गया। बाघ को आठ प्रजातियों में से प्रजाति 'रायल बंगाल टाइगर' को चुना गया। वर्ष 1973 में बाघ परियोजना (प्रोजेक्ट टाइगर) की शुरूआत हुई। शैर-ए-मैसूर के नाम से कहे जाने वाले टीपू सुल्तान ने भी 'बाघ' को अपना प्रतीक चिह्न बनाया था।

8. राष्ट्रीय पक्षी : मयूर (Peacock) (पावो क्रिस्टेसस) :–

भारत सरकार द्वारा वर्ष 1963 ई. में मयूर को राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया। 1963 ई. से इसे मारना कानूनन अपराध घोषित किया गया है। भारतीय वन्य प्राणी सुरक्षा अधिनियम 1972 के अन्तर्गत मयूर को पूर्ण संरक्षण प्राप्त है। भारत से पूर्व म्यांमार भी मयूर को अपना राष्ट्रीय पक्षी घोषित कर चुका है। मोर की सुन्दरता से प्रभावित होकर सिकन्दर महान 'मोर' को भारत विजय की निशानी के रूप में अपने साथ ले गया था।

9. राष्ट्रीय पुष्प : कमल (Lotus) (नेलंबो न्यूसिपेरा) :–

भारत का राष्ट्रीय पुष्प 'कमल' है। इसका विवरण विष्णु पुराण और पद्म पुराण में भी मिलता है। ब्रह्मा, सरस्वती, लक्ष्मी आदि देवी-देवताओं की स्थिति कमल पर है।

10. राष्ट्रीय वृक्ष : बरगद (Banyan Tree) :–

भारत का राष्ट्रीय वृक्ष बरगद है। यह एक बहुवर्षीय, विशाल घना एवं फैला हुआ वृक्ष होता है।

11. राष्ट्रीय फल : आम (Mango) :–

भारत का राष्ट्रीय फल आम है। आम को 'फलों का राजा' कहा जाता है। आम को भारत के अलावा पाकिस्तान और फिलीपींस में भी राष्ट्रीय फल माना जाता है। वेदों में आम को विलासिता का प्रतीक माना गया है।

12. राष्ट्रीय खेल : हॉकी (Hockey) :–

भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है। ओलम्पिक हॉकी में भारत ने 8 बार स्वर्ण पदक जीते हैं। हॉकी के जादूगर के नाम से प्रसिद्ध 'ध्यानचंद' के जन्म दिवस 29 अगस्त को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

13. राष्ट्रीय नदी : गंगा (Ganga) :–

भारत सरकार द्वारा नवम्बर 2008 में गंगा नदी को राष्ट्रीय नदी घोषित किया गया है। गंगा नदी उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल आदि भारतीय प्रदेशों में होते हुए बांग्लादेश में प्रवेश करती है। अन्त में बंगाल की खाड़ी में गिरती है। 2009 में 'राष्ट्रीय गंगा बेसिन प्राधिकरण' का गठन किया गया।

14. राष्ट्रीय जलीय जीव : डॉल्फिन (Dolphin) :–

5 अक्टूबर 2009 को भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने डॉल्फिन को 'राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया है। डॉल्फिन का उल्लेख 'महाभारत' एवं 'बाबरनामा' में भी मिलता है।

15. राष्ट्रीय विरासत पशु : हाथी (Elephant) :–

22 अक्टूबर 2010 को भारत सरकार द्वारा एशियाई हाथी को राष्ट्रीय विरासत पशु घोषित किया। 1992 में हाथी परियोजना की शुरूआत की गई। सर्वप्रथम हाथी के साक्ष्य 'सिन्धु घाटी की सभ्यता' की मुहरों पर मिलते हैं। राजस्थान में जयपुर के निकट कुंडा गाँव को 20 जून 2010 को देश का पहला 'हाथी गाँव' घोषित किया गया। यह विश्व का तीसरा हाथी गाँव है।

16. राष्ट्रीय स्मारक : इण्डिया गेट (India Gate) :–

10 फरवरी 1921 ई. को ड्यूक ऑफ कनाट ने अखिल भारतीय युद्ध स्मारक जो इण्डिया गेट कहलाता है, की नींव डाली थी और इसका डिजाइन सर एडविन लुटियन्स ने तैयार किया था।

17. राष्ट्रीय मुद्रा प्रतीक : ₹ :–

राष्ट्रीय मुद्रा का यह प्रतीक देवनागरी के अक्षर 'र' और रोमन अक्षर 'R' का मिला-जुला रूप है।

18. राष्ट्रीय वाक्य: सत्यमेव जयते :–

सत्यमेव जयते का अर्थ है- **'सत्य की सदैव विजय होती है।'** सत्यमेव जयते मूलतः 'मुण्डकोपनिषद' का सर्वज्ञात मंत्र है। सत्यमेव जयते को राष्ट्रीय पटल पर लाने और उसका प्रचार करने में पं. मदनमोहन मालवीय का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

19. राष्ट्रीयता – भारतीय

20. राष्ट्रीय लिपि– देवनागरी

21. राष्ट्रीय मंत्र– ओउम्

22. राष्ट्रीय मिठाई– जलेबी

23. राष्ट्रीय दस्तावेज – श्वेत पत्र

24. राष्ट्रीय भोजन–खिचड़ी

25. सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार– भारत रत्न

26. राजभाषा–हिन्दी

27. राष्ट्रीय पर्व – 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस), 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) 02 अक्टूबर (गाँधी जयन्ती)।

प्रधानाध्यापक
B-25, कुसुम विहार कॉलोनी, रामनगरिया रोड, जगतपुरा, जयपुर (राज.)-302017
मो: 9468692943

रंगों की दुनियां

रंगों के रहस्य

❐ मनोज कुमार यादव

रंगों का स्रोत सूर्य है और जब प्रकाश किसी वस्तु पर पड़ता है तभी वह वस्तु हमारी आँखों को दिखाई देगी। आज हम जानेंगे इन्हीं रंगों के रहस्य। संसार में केवल तीन ही रंग प्राकृतिक रूप से मिलते हैं, लाल, पीला और नीला बाकी सब इनके मिश्रण का कमाल होता है।

आपके मन में आएगा काला और सफेद तो मैंने बताए ही नहीं, तो ये भी जानिए ये दोनों रंगों की श्रेणी में नहीं आते हैं। काला तो एक स्थिति होती है यदि किसी कक्ष में विभिन्न रंगों की वस्तुएँ रख दी जाए और उसके खिड़की दरवाजे बंद कर दिए जाए तो अन्दर अंधेरा ही दिखाई देता है। सफेद रंग भी उसी प्रकार प्राप्त होता है जैसे पानी, दोनों को बनाना अभी तक संभव नहीं हो पाया है। हाँ महसूस कर सकते हैं सफेद सभी रंगों का मिश्रण होता है।

चित्रकला विषय में बालकों को इसी का ज्ञान कराया जाता है। वैसे भी साधारण जीवन में रंगों के माध्यम से हम अपने जीवन को और बेहतर बना सकते हैं। तो आइए, अब रहस्य की बात कर लें, रंग आपको यह बताते हैं कि आज आपके अधिकारी का क्या मूड रहेगा? रंग आपको दोस्त चुनने में भी मददगार हैं कैसे? आइए समझते हैं।

वैसे चित्रकला में दो प्रकार के रंग माने जाते हैं, ठंडे रंग और गर्म रंग। ठंडे रंग वे होते हैं जिनकी तरंग गति कम होती है जैसे हरे और नीले रंग और इनसे बनने वाले सहायक रंग होते हैं। गर्म रंग जिनकी तरंग गति ज्यादा होती है जैसे लाल और इससे बनने वाले सहायक रंग होते हैं। गर्म रंग सूर्य के प्रतीक होते हैं तो ठंडे पृथ्वी के, दोनों का बड़ा ही महत्त्व है, आइए जानते हैं।

दोनों तरह के रंगों का ठंडा गर्म होना, उनसे निकलने वाली तरंग गति पर आधारित है, गर्म रंग बहुत ज्यादा तरंग गति वाले होते हैं जबकि ठंडे रंगों की तरंग गति अपेक्षाकृत कम होती है। इसे दूसरी तरह से समझते हैं यदि कोई रंग बहुत दूर से दिखाई देता है तो उसकी तरंग गति ज्यादा होती है जैसे लाल रंग। इसी कारण लाल रंग को उन स्थानों के लिए प्रयोग में लिया गया है जहाँ पर खतरा होता है जैसे ऊँचे-ऊँचे टावर, पहाड़ी इत्यादि पर लाल बत्ती का प्रयोग करते हैं। गाड़ी के पीछे यातायात बत्तियों में भी। मतलब ये खतरे का वाहक माना गया है। इसे देखते ही हमारे मस्तिष्क में अलार्म बज जाता है कि खतरा है, यदि इस रंग को पाँच मिनट तक एक टक देखा जाए तो हमें सर दर्द होने लगेगा।

वहीं कम तरंग गति के रंग अर्थात ठंडे रंग आपको सुकून देंगे। जैसे हरा, नीला आदि इसीलिए तो हॉस्पिटल आदि स्थानों पर हरे रंग के पोशाक व पर्दे होते हैं। यदि आपको सिर दर्द है तो एक हल्के हरे रंग के कक्ष में कुछ देर विश्राम कीजिए आपका दर्द गायब हो जाएगा। हमारे दैनिक जीवन में अभी अनायास ही हम ठंडे रंगों का चुनाव ही करते हैं। जैसे घरों की दीवारों पर शायद ही कोई लाल रंग करवाता होगा।

मैंने ऊपर दोस्त चुनने में रंगों का जिक्र किया था आइए जानते हैं-

लाल रंग- ये रंग खतरे का प्रतीक माना गया है, तो ध्यान रखें कि यदि आपके आस-पास कोई व्यक्ति लाल रंग ज्यादा पसंद करता है तो उससे दूर रहने में ही भलाई है। पसंद से तात्पर्य है उसके स्कूटर का रंग लाल है, उसके बेग का रंग लाल है वह रोज लाल रंग के शर्ट पहनता है हर जगह लाल को महत्त्व देता है। ऐसे व्यक्ति से दूर रहने में ही भलाई है वह बात-बात पर भड़क जाएगा, गुस्सैल स्वभाव का होता है।

हाँ कभी-कभी लाल रंग के कपड़े पहने जाते हैं तो उनका असर क्षणिक मात्र होगा पर होगा जरूर, उस दिन आपका उत्साह ज्यादा होगा। हरे और नीले रंगों को पसंद करने वाले सरल होते हैं, जल्दी क्रोधित नहीं होते हैं उनको मित्र बनाया जा सकता है और हाँ नीला तो राजसी रंग होता है। नीले की एक किस्म है पर्शियन ब्लू। ये मिश्र के पर्शिया नामक स्थान पर मिलता था और इस रंग का प्रयोग केवल राजा महाराजा ही करते थे आमजन को इसके प्रयोग की अनुमति नहीं थी, यदि किसी ने गलती से भी इस रंग का प्रयोग किया होता तो उसे मृत्युदंड का प्रावधान था। वैसे भी ये रंग इतना महंगा होता था कि आम आदमी इसे खरीद ही नहीं सकता था।

एक और रंग इसी श्रेणी में आता है, वो है बैंगनी रंग ये भी राजसी है पर रहस्यमय होता है। इस रंग का प्रयोग ज्यादातर भूतिया फिल्मों, सीरियलों में अक्सर किया जाता है ये हमारे मस्तिष्क में डर पैदा करता है अर्थात यदि आपके दोस्तों में से कोई बैंगनी रंग पसंद करते हैं तो वो जरूर कोई ना कोई रहस्य लिए हुए जी रहे हैं। ऐसे व्यक्ति विश्वास के योग्य नहीं होते हैं। मैं बहुत संक्षेप में आपको कुछ ही रंगों का ज्ञान करा रहा हूँ यदि एक-एक के बारे मैं बता दूँ तो शायद लेख बहुत लंबा हो जाएगा।

सफेद रंग- ये उज्ज्वलता का प्रदर्शन करता है अर्थात शुद्ध।

काला रंग- अशुद्ध होता है ज्यादातर जादू टोने में, तंत्र-मंत्र, तांत्रिक, जादूगर इसे धारण करते हैं। अब अंत में यह समझने का प्रयास करेंगे कि आखिर अलग-अलग रंगों की वस्तुएँ दिखाई किस प्रकार देती हैं जिसे हम इन्द्रधनुष में देख सकते हैं। जब ये सात किरणें किसी नीली सतह पर पड़ती हैं तो बाकी छह रंग को वह सतह सोख लेती है और नीले रंग को परावर्तित कर देती है वही रंग हमारी आँखें देख पाती हैं अर्थात असल में वो वस्तु नीली तो होती ही नहीं है वह तो छह रंगों की है, वो तो नीले रंग को परावर्तित कर रही है वही हम देख रहे हैं और मान भी लेते हैं।

वहीं सफेद सतह सभी रंग की किरणों को परावर्तित कर देती है तो वह सफेद दिखलाई देती है, वहीं काली सतह सभी रंग की किरणों को सोख लेती है तो वह रंगहीन अर्थात काली दिखाई देता है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रावतपुरा,
चित्तौड़गढ़ (राज.)
मो: 8112299732

आत्मरक्षा : सुरक्षा

लड़कियों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण

❒ सुमन यादव

किसी भी व्यक्ति को सुखी जीवन जीने के लिए मूलभूत आवश्यकताओं के बाद चौथा नंबर सुरक्षा का आता है। सुरक्षित वातावरण मिलने पर व्यक्ति भय मुक्त होकर अच्छा कार्य करता है व सुखपूर्वक जीवन जीता है। जिससे देश का विकास होता है। इसलिए राजस्थान सरकार द्वारा लड़कियों को भयमुक्त वातावरण देने के लिए आत्मरक्षा प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं।

मैं पिछले 6 वर्षों से अनेक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, उच्च माध्यमिक विद्यालय, के.जी.बी.वी., मेवात आवासीय विद्यालय, अनाथ विद्यालय, स्काउट गाइड कैंप आदि में शारीरिक व मानसिक आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दे चुकी हूँ। जहाँ तक मैंने महसूस किया और अनुभव किया कि लड़कियाँ आत्मरक्षा नहीं कर पाने के कारण बहुत ही डरी, सहमी व उदास भी रहती हैं। उनका आत्मविश्वास बहुत ही कमजोर होता है और पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती हैं। जिससे उनकी शिक्षा पूरी नहीं हो पाती है। 100 में से सिर्फ एक-दो लड़कियाँ ही आत्मविश्वासी मिलती हैं। लड़कियों का कोमल मन भावना में बह जाता है। जब मैं प्रशिक्षण देती हूँ तो प्रथम दिन का लड़कियों में आत्मविश्वास से अंतिम दिन के आत्मविश्वास में जमीन-आसमान का अंतर होता है। अंतिम दिन लड़कियाँ आत्मविश्वास से ओतप्रोत होती हैं। शुरूआत में वे शर्म और झिझक महसूस करती हैं। अपनी मन की बातें नहीं बता पाती हैं। लेकिन 5-6 दिन तक लगातार उनके साथ उनके वातावरण में उनको आत्मरक्षा सिखाने के बाद और हर बातों की वैज्ञानिक तरीके से जानकारी देने, छात्राओं की जिज्ञासा को शांत करने, हर बात को सामाजिक परिवेश से जोड़ने के बाद धीरे-धीरे मेरे से लड़कियाँ खुलने लगती हैं और अपने शरीर संबंधी, रिश्ते, नाते संबंधी सारी बातें पूछ-पूछ कर संतुष्ट होने लगती हैं और उनका मन शांत होने लगता है। जो बातें अपनी विद्यालय अध्यापिका से शेयर नहीं करती वह सभी बातें मेरे से पूछने लगती हैं, वे अपनी भावना व्यक्त करने लगती हैं। उनके साथ हुए दुर्व्यवहार को बताने लगती हैं। अंतिम दिन तक सबके चेहरे पर संतुष्टि के भाव होते हैं और वे दृढ़ आत्मविश्वासी हो जाती हैं। इन सबके लिए बच्चों के साथ बच्चा बनना पड़ता है। उनके साथ भावनात्मक रूप से जुड़ना पड़ता है। शारीरिक आत्मरक्षा सीखने से पहले मानसिक आत्मरक्षा सीखना बहुत जरूरी है। शारीरिक आत्मरक्षा विपत्ति में फंस जाने पर की जाती है। जबकि मानसिक आत्मरक्षा विपत्ति में फंसने ही नहीं देती है। इसलिए सर्वप्रथम छात्राओं को मैं मानसिक आत्मरक्षा के गुर सिखाती हूँ। उसके बाद शारीरिक आत्मरक्षा के गुर सिखाती हूँ।

मानसिक आत्मरक्षा के गुर

1. नियमित रूप से एक्सरसाइज, योगासन, प्राणायाम, ध्यान करें, पौष्टिक आहार लें और खूब खाएँ।
2. आत्मविश्वास विकसित करना-इसके लिए आगे आना व निरंतर अभ्यास करते रहना।
3. जब भी कभी घर से बाहर निकलें तो पूरे आत्मविश्वास को साथ लेकर चलें।
4. हमेशा एटीट्यूट में चलें।
5. चारों तरफ ध्यान देकर चलें आसपास हो रहे घटनाक्रम के बारे में जानकारी रखें।
6. जहाँ जा रहे हैं, उस रास्ते की पूरी जानकारी रखें, साधनों की जानकारी ले लें, समय का ध्यान रखकर चलें फोन से आगे सूचना दे दें।
7. घर से बाहर फोन की लीड कान में लगा कर न चलें, फोन करना हो तो साइड में खड़ा होकर करें।
8. आगे-पीछे का ध्यान रखकर चलें अगर कोई व्यक्ति बार-बार पीछा कर रहा है, रोज घूरता है, देखकर सीटी या अश्लील गाने गाता है, गंदे इशारे करता है तो खतरा हो सकता है। ऐसी घटना होने पर तुरंत घर वालों को बताएँ छिपाना नहीं है। इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। नहीं तो उसके हौंसले और बढ़ जाएँगे। अतः उसे प्रथम स्टेज पर ही रोकें।
9. घर पर भी अकेली ना रहें व छोटे बच्चों को भी अकेला न छोड़ें।
10. नियर व डियर से हमेशा सावधान रहें। यह दोनों ही खतरनाक हो सकते हैं। अधिकतर शोषण इनके द्वारा ही होता है और लड़कियाँ कह नहीं पाती हैं। घरवाले जल्दी से विश्वास भी नहीं करते। इसलिए इनसे उचित दूरी बना कर रहें।
11. बाइक या गाड़ी से कोई छेड़खानी करके जा रहा है या किडनैप कर लिया है, तो उसकी गाड़ी के नंबर नोट कर ले पैन नहीं हो तो सड़क पर पत्थर से लिख लें व कोई आए तब उन्हें वह नंबर बताएँ तब तक वहीं रहें और पुलिस को फोन करवाएँ।
12. अनजान व्यक्ति को फेसबुक, व्हाट्सऐप फ्रेंड न बनाएँ। फर्जी आईडी बनाकर चैट करते हैं।
13. हर किसी को अपना मोबाइल नंबर नहीं दें।
14. परिचित व दोस्त में अन्तर रखें। परिचित बहुत हो सकते हैं लेकिन दोस्त गिने-चुने ही होते हैं।
15. किसी के बहकावे में ना आएं।
16. सुनसान जगह पर अकेले नहीं जाए अगर जाना पड़े तो किसी के आने का इंतजार करें।
17. रात को विशेष आवश्यकता हो तो घर से बाहर जाएँ, रोशनी वाले रास्ते से ही जाएँ चाहे वह लंबा ही पड़ता हो, अंधेरे में से न जावें।
18. घर से बाहर जाते समय अपने बचाव के लिए छोटे हथियार जैसे आलपिन, सुई, पिन, मिर्ची पाउडर, स्प्रे, डिवाइडर आदि साथ लेकर चलें।
19. कोई पकड़ ले तो जोर-जोर से 'बचाओ-बचाओ' की आवाज से चिल्लाएँ।
20. उसके मुँह पर थूक दें, काट लें, नोच लें,

पिन चुभो दें, आँखों में मिट्टी डाल दें।

21. भागें तो किसी घर या मुख्य सड़क या लोग हो उधर भागें सुनसान में नहीं भागें।
22. भागते समय ध्यान दें कि आगे भी उसकी गैंग के आदमी तो नहीं खड़े हैं अगर हैं तो उनकी तरफ न भागें।
23. कहीं जा रहे हो और ऐसा लगे कि आगे खतरा है तो वापिस घर आ जाएँ या अपना रास्ता बदल दें।
24. बैड टच होने पर तुरंत 'ना' कहें और वहाँ से चले जाएँ अपने मम्मी-पापा को जाकर घटना की जानकारी दें।
25. एक से ज्यादा लोगों में फँस जाने पर पहले अपनी जीवन रक्षा करें और वह कहे वैसे ही करें नहीं तो वह मार भी सकते हैं।
26. एक व्यक्ति से सामना होने पर उसका डटकर मुकाबला करें और पंच, किक चलाएँ। आप बहुत बहादुर हो कुछ भी कर सकती हो। बचपन में भाई-बहनों को पड़ोस के लड़कों को खूब मारा करते थे। कभी किसी से नहीं हारी। अब क्या हो गया अपनी शर्म छोड़ 'अपने अंदर बैठे हनुमान को जगाएँ' व उस पर बहादुरी से अटैक करें और अपनी रक्षा करें।
27. जहाँ तक हो सके एकांत में ना रहें लोगों के बीच में रहें।
28. ऑटो, टैक्सी में जा रहे हो तो घर वालों को उनकी फोटो खींच कर भेज दें या कॉल करके गाड़ी का नंबर बता दें।
29. कोई भी किसी को फ्री में चीज नहीं देता है। सिर्फ अपनों के अलावा, उसकी कीमत अदा करनी होती है। अगर कोई फ्री में दे रहा है तो वह आपसे कुछ ना कुछ बदले में लेने की सोच रहा है। अतः किसी के बहकावे में ना आएँ फ्री में सामान न लें।
30. सफर में ज्यादा न बोलें, किसी को नहीं बताएँ आप कहाँ से आए हो कहाँ जा रहे हो, सतर्कता से सफर करें। किसी भी साधन में बैठने से पहले सुनिश्चित कर लें कि आप सुरक्षित बैठ रहे हो।
31. शादी, समारोह में सबके साथ रहें एकांत में नहीं रहें, औरतों के बीच में रहें।
32. अनजान व्यक्ति से प्रसाद वगैरह खाने की चीजें न लें।
33. मामा, फूफा, जीजा, साला, कजिन आदि से सावधान रहें व दूर रहें। सबसे ज्यादा शोषण यही लोग करते हैं।
34. गुंडे, आवारा, विदुर, कुंवारा, अर्ध विक्षिप्त, शराबियों, जुआरियों से दूर रहें। इनसे दोस्ती नहीं करें और बच्चों को भी इनसे दूर रखें।
35. अपने भाई, भतीजे पर ध्यान रखें कि वह गलत संगत में तो नहीं पड़ रहा है और तुरंत अपने माँ-बाप को सूचना दें उनको नैतिकता का पाठ पढ़ाएँ। बहन बेटियों की इज्जत करना सिखाएँ।
36. आवश्यकता पड़ने पर 1098 पर फोन करें।
37. समय व जगह के अनुसार सोचकर टेक्निक्स अप्लाई करें।
38. यात्रा के दौरान सही कपड़ों का चुनाव करें। बालों को बाँधकर रखें, जहाँ तक हो सके हाई हील के सैंडल ना पहने जूते पहन कर बाहर निकलें।
39. बस में छेड़खानी होने पर अंगुली या पेन डालकर छींके व हाथ को बाहर की तरफ फैलाए, बाजू में आलपिन लगा लें, पैर पर पैर की जोर से मारें, कोहनी से जोर से मारें और तुरंत रिएक्शन करें।
40. घर में अनजान व्यक्ति के लिए दरवाजा न खोलें अगर खोल दिया और लगता है वह छेड़खानी करेगा तो तुरंत उसके मुँह पर थूक दें। रसोई की तरफ भागें रसोई में आपको पता है कौनसी चीज कहाँ रहती है मिर्ची पाउडर तुरंत उसके मुँह पर फेंक दें चाकू से वार करें और उसकी गिरफ्त से छुड़ाकर वहाँ से बाहर की तरफ भाग जाएँ।
41. दूसरे व्यक्ति से कम से कम 6 फीट की दूरी पर खड़े होकर के बातें करें।
42. बच्चों को बाहर भेजते समय या स्वयं बाहर जाते समय बच्चों को कोई कोडवर्ड देकर जाएँ जो अन्य किसी को नहीं पता हो; कोडवर्ड बताने पर ही बच्चों को उसके साथ जाने के लिए कहें।
43. सोशल मीडिया पर चल रही अफवाह की सच्चाई जान लें, उसका प्रचार-प्रसार नहीं करें बल्कि उनको रोकें।
44. भीड़ व मोबलिंचिंग का हिस्सा न बनें, समाज में फैली बुराइयों का विरोध करें।
45. लैंगिक भेदभाव न करें। लड़कों को भी सभी कार्य करवाएँ जो घर में लड़कियाँ करती हैं।
46. छोटे बच्चों को मोबाइल देते समय ध्यान रखें कि वह क्या चला रहे हैं?
47. अपनी मन-मस्तिष्क को हमेशा खुला रखें।
48. अचानक हमले के लिए तैयार रहें।
49. पहला सेल्फ डिफेंस बुद्धि कौशल होना चाहिए। समय व परिस्थिति के अनुसार अपनी बुद्धि कौशल का उपयोग करें।
50. गुड-टच, बैड-टच, पोक्सो-एक्ट, बाल-श्रम, बाल-यौन शोषण, बाल-विवाह, किशोरावस्था, आओं शरीर को जानें, शरीर के अंगों की कार्यप्रणाली के बारे में, जेंडर संवेदनशीलता, सामाजिक कुरीतियाँ व रीति रिवाज, महावारी व स्वच्छता प्रबंधन, कानूनों की, लैंगिक असमानता के कारण, यातायात के नियमों की, आपदा प्रबंधन मीडिया के बारे, आसपास के परिवेश में सजग रहने की, निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा, घरेलू हिंसा के बारे में आदि जानकारियाँ गहराई से उनकी भाषा में व उनके परिवेश के अनुसार दी जाती हैं।
51. यह शरीर मेरा खुद का है। इसको छूने का अधिकार किसी को नहीं है जब तक मैं न चाहूँ।

शारीरिक आत्मरक्षा के गुरः- यह सब सिखाने के बाद शारीरिक आत्मरक्षा के गुर जैसे पंच, किक, ब्लॉक, काता, फाल, थ्रो, फ्रंट रोल बैक रोल, लाठी से वार, चाकू से वार आदि का गहन प्रशिक्षण देकर आत्मरक्षा उनकी रग-रग में भरा जाता है जिसको वह ताउम्र याद रखें और आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग कर अपनी रक्षा कर सकें।

बदलते हुए समय की नजाकत को देखते हुए लड़कियों को कराटे की आवश्यकता है इसलिए सब अपनी लड़कियों को आत्मरक्षा जरूर सिखाएँ।

शारीरिक शिक्षिका
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सुहेटा,
मुंडावर, अलवर (राज.)
मो: 9462639345

स्काउटिंग विशेष

हरित पाठशाला और स्काउटिंग

❒ अजय सिंह राठौड़

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में कहा गया है कि-

छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्व्यमातपे
फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इवं'

अर्थ- वृक्ष एक सत पुरुष की तरह होता है, जो दूसरों के लिए फल और छाया देता है तथा स्वयं धूप में खड़ा रहता है।

उक्त श्लोक यह सीख देता है कि मानव जीवन की सबसे बड़ी विशेषता रही है कि वह जन्म से ही प्रकृति प्रदत्त शक्तियों को आधार बना कर जीवन यापन करता है। जैसे भारतीय ज्ञान विज्ञान की माने तो पंच तत्व ही हमारे जीवन का प्रदाता है। उसी से भरण-पोषण होता है। किसी एक तत्व की कमी जीवन से मृत्यु की ओर अग्रसर कर देती है। ऐसी ज्ञानवान पाठशाला में हम सीखते हैं अतः हमारा भी दायित्व बन जाता है कि ऐसा पवित्र स्थान वातावरण की दृष्टि से सदैव स्वच्छ रहें। ऐसा क्या प्रयास करें कि प्राणवायु स्वच्छ व जीवनदायिनी बनी रहें। युगों से मानव अपने हाथों वृक्षारोपण करता आया है। इसी कारण आज मानव सभ्यता हरितीमा से ओतप्रोत बनी हुई है। सरकार के भी अपने प्रयास रहें। इसी श्रृंखला में राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् जयपुर ने कई तरह के प्रावधान किए हैं।

वर्तमान समय में प्राकृतिक संसाधनों के लगातार दोहन एवं वन क्षेत्रों की कमी से पर्यावरण असंतुलित होता जा रहा है। पर्यावरण में उत्पन्न होने वाली इस भयावह स्थिति को नियंत्रण में करने के लिए विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों में पर्यावरण की समझ व इसके संरक्षण की रुचि उत्पन्न करने हेतु प्रत्येक विद्यालय में वाटिका व हरित पाठशाला कार्यक्रम आरम्भ किया गया है। ऐसे भागवत प्रयास के पीछे छात्र-छात्राओं में पर्यावरण की समझ पैदा करना, इसके महत्त्व को समझना, वातावरण को स्वच्छ बनाना, समुदाय को पर्यावरण के कार्य से जोड़ना, वृक्षारोपण एवं उनका संरक्षण, विद्यालय की सहशैक्षिक गतिविधियों में पर्यावरण की अवधारण को अनिवार्य करना जैसे कई उद्देश्यों को ध्यान में रखा गया है।

इस कार्य की शत-प्रतिशत सफलता हेतु कार्य योजना में विभिन्न गतिविधियों को आयोजित करने के निर्देश जारी किए गए हैं। यथा विद्यालय परिसर, खेल मैदान एवं विद्यालय के 200 मीटर की परिधि के क्षेत्र में वृक्षारोपण कार्य, वातावरण निर्माण हेतु विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ जैसे वार्ताएँ, निबंध प्रतियोगिता, रोल प्ले, जागरूकता रैली, शैक्षिक भ्रमण, विद्यालय वाटिका क्लब या हरित विद्यालय क्लब समूहों का गठन करना व ईको क्लब को सक्रिय करना, कक्षा 12 के छात्रों को छोड़कर कम से कम 2 छात्र-छात्राओं एवं उनके शिक्षकों को पौधे की देखभाल हेतु गोद देना, एसएमसी/एसडीएमसी/पीटीए तथा पूर्व छात्र-छात्राओं को भी इस कार्यक्रम से जोड़कर वृक्ष संरक्षण हेतु पौधे गोद देने जैसी गतिविधियाँ आयोजित कराई जानी होती है।

कार्यक्रम की सतत मॉनिटरिंग हेतु मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (पीईईओ.) से पाक्षिक फीडबैक एवं मॉनिटरिंग करवाना व आवश्यक प्रस्तावों की स्वीकृति निकालने के दायित्व निर्धारित किए हैं वही संस्थाप्रधान हरित पाठशाला कार्यक्रम के संचालन हेतु महानरेगा, एसएफसी, एफएफसी. व एसएमसी./ एसडीएमसी. तथा समुदाय के सहयोग से गड्डे खुदवाना एवं पौधे लगवाना, गुणवत्ता युक्त 3 फीट ऊँचे पौधों के लिए नर्सरी का चयन करना, सुरक्षा की समुचित व्यवस्था करना, पौधों की देखभाल हेतु औजारों की खरीद के लिए स्वैच्छिक अनुदान अक्षय पेटिका एवं विकास कोष से सहयोग लेना एवं प्रत्येक माह एसएमसी./एसडीएमसी. बैठक में समीक्षा करना जैसे कार्यों को सम्पादित करेंगे। इनके लिए माह अप्रेल से लेकर माहवार गतिविधियाँ भी निर्धारित की गई है। जैसे अप्रेल माह में वृक्षारोपण पर चर्चा, 22 अप्रेल को पृथ्वी दिवस पर कार्यक्रमों का आयोजन, पौधों की सुरक्षा हेतु ट्री गार्ड एवं चारदीवारी, माह मई तक वातावरण निर्माण हेतु प्रभात फेरी व रैली, वाटिका क्लब या पर्यावरण क्लब का कक्षानुसार गठन, वृक्षारोपण हेतु जल की उपलब्धतानुसार नजरी नक्शे बनाना, सहशैक्षिक गतिविधियाँ यथा निबंध प्रतियोगिता, रोल प्ले आदि, संसाधनों का आंकलन व पौधारोपण हेतु योजना, जून माह में संस्थाप्रधान द्वारा ग्राम पंचायत से वृक्षारोपण के लिए गड्डे खुदवाना, 10 जुलाई तक वृक्षारोपण, कार्यक्रम में विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य, जनप्रतिनिधि, कक्षा व समूह को पौधे गोद देना, शिक्षकों को समूह का प्रभारी नियुक्त करना, वृक्षारोपण प्रभारी नियुक्त करना, विद्यालय के अनुपयोगी पानी को पौधों के लिए उपयोग हेतु व्यवस्था करना, वाटिका, किचन गार्डन का निर्माण करना। अगस्त माह पौधे का बायोलॉजिकल नाम का टेग लगाना, पीटीए. की बैठक में विद्यालय वृक्षारोपण की जानकारी देने सहित कई कार्य सम्पादित किए जाने होंगे। इन कार्यों के सम्पादन से जहाँ हमारा विद्यालय स्वच्छ होगा वही प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण का संरक्षण होगा। सबसे बड़ा कार्य विद्यार्थियों का प्रकृति की ओर रुझान बढ़ेगा जिससे आने वाले समय में देश को इन प्रयासों से श्रेष्ठ परिस्थिति विज्ञान शास्त्री भी मिलेंगे।

विद्यालय में बालचर प्रवृत्ति संचालित हो रही है तो, इनके पाठ्यक्रम में भी पर्यावरण संरक्षण, इकोलॉजी के साथ-साथ पक्षी दिवस, पर्यावरण दिवस, पृथ्वी दिवस, ओजोन दिवस जैसे कई दिवसों को मनाना होता है। एक पंथ दो काज की थीम पर हम चाहें तो बालचरों को इन कार्यों में सहभागी बना कर हरित पाठशाला में इनकी भूमिका सुनिश्चित कर सकते हैं। वैसे भी देखा जाए तो प्रत्येक विद्यालय में विभागीय दिशा-निर्देशों की अनुपालना में विभिन्न प्रकार की जनजागृति हेतु रैली, प्रभात फेरियों का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों में अगर स्काउट गाइड गणवेश में भाग लेते हैं तो समाज में सकारात्मक संदेश जाता है। सुनागरिक बनने के इस व्यापक व देशव्यापी कार्य में हम उच्च लक्ष्य को प्राप्त कर पाएँगे। इसी संदेश के साथ

स्वच्छ हो वायु, स्वच्छ हो जल,
जिससे मिले स्वच्छ कल।
प्रकृति का मत करो शोषण,
यही करती है हमारा पोषण।।

अध्यापक एवं स्काउटर
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पारसोली,
ब्लॉक बेगूं, चित्तौड़गढ़
मो: 9928729293

रपट

शिक्षक दिवस

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2020

(दिनांक : 15-10-2020)

❒ योगेन्द्र कुमार शर्मा

प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को राज्य में शिक्षक दिवस प्रत्येक विद्यालय से लेकर राज्य स्तर पर समारोह पूर्वक मनाया जाता है। सत्र 2020-21 में यह समारोह कोविड-19 महामारी के चलते 5 सितम्बर, 2020 को ऑनलाइन मनाया जाना प्रस्तावित था, परन्तु पूर्व राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी के देहावसान हो जाने से राष्ट्रीय शोक के कारण समारोह आयोजित नहीं हो सका। इसलिए यह वर्चुअल शिक्षक सम्मान समारोह दिनांक 15 अक्टूबर, 2020 को आयोजित किया गया। मुख्य कार्यक्रम मुख्यमंत्री निवास जयपुर पर सम्पन्न हुआ जबकि अन्य समस्त शिक्षक अपने जिले एवं ब्लॉक के डीओआईटी केन्द्रों पर उपस्थित हुए। दिनांक 15.10.2020 को शिक्षक सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री अशोक गहलोत जी, माननीय मुख्यमंत्री महोदय राजस्थान सरकार, कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय श्री गोविन्द सिंह डोटासरा जी, राज्य मंत्री (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) स्वतन्त्र प्रभार एवं पर्यटन एवं देवस्थान मंत्री, राजस्थान सरकार तथा विशिष्ट अतिथि माननीय श्री सुभाष गर्ग जी, तकनीकी एवं संस्कृत शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) थे। कार्यक्रम में श्री राजीव स्वरूप जी, मुख्य सचिव, श्रीमती अपर्णा अरोडा जी, प्रमुख शासन सचिव शिक्षा विभाग, श्री कुलदीप रांका जी, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री, डॉ. भंवर लाल जी, राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा अभियान श्री सौरभ स्वामी जी, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर, श्री गौरव बजाड जी, संयुक्त सचिव मुख्यमंत्री, श्री रतन सिंह यादव जी, संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा विभाग जयपुर, श्री अनिल अग्रवाल जी, अध्यक्ष वेदान्त ग्रुप, श्री जितेन्द्र सोनी, मिशन ज्ञान तथा श्रीमती मोनल जयराम, कार्यक्रम निदेशक पीरामल ग्रुप उपस्थित रहे।

सत्र 2019 से पूर्व राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान में 63 शिक्षकों (25 माध्यमिक शिक्षा से, 26 प्रारम्भिक शिक्षा से, 10 संस्कृत शिक्षा से एवं 2 विशेष विद्यार्थियों को शिक्षण कराने वाले) को सम्मानित किया जाता था तथा चयन कार्यक्रम ऑफलाइन होता था। शिक्षक सम्मान समारोह 2020 के लिए शाला दर्पण के माध्यम से कुल 4268 (कक्षा वर्ग 1-5 के लिए 924, कक्षा वर्ग 6-8 के लिए 907 तथा कक्षा वर्ग 9-12 के लिए 2437) आवेदन प्राप्त हुए। शिक्षकों के सम्मान हेतु चयन के लिए तीन स्तर निर्धारित किए गए, जिसमें पारदर्शिता बरतते हुए ऑनलाइन आवेदन मांगे गए। चयन के मानदण्ड निर्धारित कर आवेदन पत्रों को मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के माध्यम से मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को तथा जिला स्तर से निदेशालय को भिजवाए जाकर राज्य, जिला एवं ब्लॉक स्तर पर चयन किया गया।

इस वर्ष राज्य स्तर पर कुल 99 जिला स्तर पर कुल 99 तथा ब्लॉक स्तर पर कुल 651 शिक्षकों का पुरस्कार हेतु चयन किया गया है। इसके अतिरिक्त 3 आदर्श, 3 उत्कृष्ट, 3 जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा, 3 अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा, 3 शिक्षक उनकी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए सम्मानित किए गए। वर्ष 2019 से पूर्व केवल राज्य स्तर पर सम्मानित होने वाले शिक्षकों को 21,000 रुपये नगद राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जाती थी। वर्ष 2019 में जारी नवीन प्रावधान में राज्य स्तर पर 99 शिक्षकों (प्रत्येक जिले से हर कक्षा समूह में एक-एक) को 21,000 हजार रुपये जिला स्तर पर 03 शिक्षकों को (जिले से हर कक्षा समूह में एक-एक) 11,000 रुपये तथा ब्लॉक स्तर पर तीन शिक्षकों (जिले से हर कक्षा समूह में एक-एक) 5,100 रुपये का प्रावधान किया गया।

इस वर्ष का वर्चुअल शिक्षक सम्मान समारोह अपने आप में गरिमामय होने के साथ ही पूर्ण पारदर्शिता लिए हुए पूर्व वर्षों के समारोह से हटकर नई पहल व उमंग के साथ मनाया गया। इस वर्चुअल शिक्षक सम्मान समारोह में श्रीमती अपर्णा अरोडा जी, प्रमुख शासन सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग ने कार्यक्रम का परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान विषम परिस्थितियों एवं चुनौतियों के साथ भी शिक्षक डिजीटल शिक्षण व ई-शिक्षा के माध्यम से शिक्षण कार्य करते रहे। उनके द्वारा शिक्षकों का विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्कृष्ट कार्य एवं सेवाओं के लिए अभिनन्दन एवं आभार प्रकट किया। उन्होने बताया कि सभी विद्यालयों में ई-लाइब्रेरी स्थापित की जाएगी जिसमें कक्षा 6-12 के छात्रों हेतु ऑडियो एवं विडियो उपकरण स्थापित कर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को जारी रखते हुए **''पढ़ेगा राजस्थान, बढ़ेगा राजस्थान''** को सार्थक करते हुए भयमुक्त शैक्षिक वातावरण स्थापित किया जा सकेगा।

भारत में राजस्थान प्रथम राज्य है जो शिक्षा के मनोविज्ञान आधारित गतिविधि शिक्षण को महत्त्व देते हुए प्रत्येक शनिवार को **''नो बैग डे''** प्रारम्भ कर रहा है। विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभा दिखाने का अवसर देने के लिए प्रत्येक शनिवार को होगा **''नो बैग डे''** अर्थात बच्चे बिना बैग एवं पुस्तकों के विद्यालय आएँगे सम्भावनाओं के इस शनिवार में सीखने की गतिविधि सतत रहने के साथ ही विद्यार्थी के बहुकौशल विकास हेतु विभिन्न गतिविधियों के आधार पर आनन्दायी शिक्षण का माहौल निर्माण होगा। श्रीमती मोनल जयराम कार्यक्रम निदेशक पीरामल ग्रुप, ने अपने उद्बोधन में कहा कि ''नो बैग डे'' की सोच एक दूरगामी सोच है।

श्रीमान् निदेशक महोदय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, द्वारा अपने सम्बोधन में बताया गया कि ई-कक्षा द्वारा विद्यार्थियों को घर पर ही डिजीटल कन्टेन्ट मिलेगा जिससे वैश्विक महामारी कोविड-19 के साथ-साथ शिक्षकों के अवकाश के दौरान भी उनका अध्ययन जारी रह सके। इस हेतु 100 सर्वश्रेष्ठ विषयाध्यापकों को प्रशिक्षण दिया गया है। इनके द्वारा 1500 विडियो तैयार किए गए जो कि यू ट्यूब पर

उपलब्ध हैं। इन विडियो को राजस्थान के सभी विद्यालयों के ICT लैब में पहुँचाया जाएगा जिससे शिक्षक के किसी कारणवश अनुपस्थित रहने पर भी स्मार्ट टीवी की मदद से विद्यार्थी डिजिटल कन्टेन्ट द्वारा अध्ययन कर सकेंगे। इससे सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

श्रीमान् सुभाष गर्ग, राज्यमंत्री, द्वारा अपने उद्बोधन में बताया कि राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश है। विद्यार्थियों के लिए भयमुक्त वातावरण में सुगम एवं रुचिपूर्ण शिक्षण द्वारा सहज प्रतिभाएँ उभर कर आ रही हैं। शिक्षा विभाग द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम **''नयी पहल है नया इरादा नया सीखने का वादा''** है।

इस अवसर पर माननीय शिक्षा राज्यमंत्री महोदय, श्री गोविन्द सिंह डोटासरा जी, ने अपने उद्बोधन में कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण पूरे प्रदेश में शिक्षण ठप्प सा हो गया था। विद्यार्थियों के भविष्य को मध्य नजर रखते हुए शिक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा ई-कन्टेन्ट तैयार करवाया गया। डिजिटल शिक्षण के माध्यम से घर पर ही छात्रों को अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाकर विशेष चुनौतीपूर्ण समय में भी शिक्षण करवाया गया। इसके लिए मिशन ज्ञान तथा वेदान्ता ग्रुप का भी सहयोग प्राप्त हुआ जिससे विद्यार्थी लाभान्वित होकर अपना भविष्य निर्माण कर सकेंगे। माननीय मुख्य मंत्री द्वारा अपने उद्बोधन में बताया कि राज्य सरकार द्वारा संवेदनशील,पारदर्शी और जवाबदेह शासन के माध्यम से गुड गवर्नेन्स देना चाहती है। इसमें शिक्षकों की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण है। शिक्षकों द्वारा कोविड-19 महामारी के दौर में कोरोना वारियर्स के रूप में समर्पित भाव से ड्यूटी की है। राज्य सरकार उनके मान-सम्मान में कोई कमी नहीं रखेगी। माननीय मुख्यमंत्री द्वारा कोरोना के दौर में भी गुणवता युक्त शिक्षा से जोड़े रखने के लिए ई-कक्षा कार्यक्रम की शुरूआत तथा ''नो बैग डे'' के ब्रोशर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री महोदय ने और अधिक संख्या में महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलने की आवश्यकता बतायी ताकि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को भी अंग्रेजी माध्यम से अध्ययन का अवसर मिल सके। कुल 849 शिक्षकों को उत्कृष्ट सेवाओ के लिए वर्चुअल रूप से सम्मानित भी किया गया। शिक्षक एक बेहतर समाज के निर्माता हैं। शिक्षक अपने मार्ग दर्शन के माध्यम से बच्चों के जीवन मूल्यों के साथ ही उनमें धर्म निरपेक्षता, एकता, अखण्डता, सामाजिक सदभाव जैसे लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास करते हैं ताकि हमारी भावी पीढ़ी एक श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण कर सके।

कार्यक्रम के अन्त में श्री सौरभ स्वामी निदेशक महोदय, माध्यमिक शिक्षा द्वारा सभी सम्मानित शिक्षकों को बधाई दी गई तथा श्रीमान मुख्यमंत्री महोदय, श्रीमान शिक्षा राज्य मंत्री महोदय, तकनीकी एवं संस्कृत शिक्षा राज्य मंत्री महोदय, मुख्य सचिव महोदय, प्रमुख शासन सचिव महोदय, निदेशक पीरामल ग्रुप एवं अध्यक्ष वेदान्ता ग्रुप एवं उपस्थित अन्य सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया। समारोह को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का कवरेज कर रहे पत्रकारों तथा मीडिया कर्मियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी,
कार्यालय संयुक्त निदेशक, जयपुर
शिक्षा संकुल, जयपुर
मो. 9588016586

शिक्षक दिवस पर सम्मानित होने वाले राज्यस्तरीय शिक्षकों की सूची

S. no.	District	Block	Class Group	Teacher Name	Post	School
1	Ajmer	Kishangarh	1 To 5	Jagmal Gurjar	Prabodhak Level-2	Govt. Upper Primary School Phaloda (416662)
2	Ajmer	Kishangarh	6 To 8	Pratap Choudhary	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Ujoli (487557)
3	Ajmer	Kishangarh	9 To 12	Kartar Singh	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Kotdi (221492)
4	Alwar	Mundawar	6 To 8	Suman Yadav	PET (iii Gr.)	Govt. Upper Primary School Suheta (461566)
5	Alwar	Neemrana	1 To 5	Santosh Yadav	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Senior Secondary School Mandhan (216225)
6	Alwar	Rajgarh	9 To 12	Sangeeta Gour	Lecturer (i Gr.)	Govt Sr Sec School Talab Alwar
7	Banswara	Garhi	6 To 8	Vivek Kumar Dosi	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Thikariya Gram Panchayat Lasada (488399)
8	Banswara	Talwara	1 To 5	Manoj Kumar Patidar	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Primary School Purana Tanda (404138)
9	Banswara	Talwara	9 To 12	Neetu Grover	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Lodha (223820)
10	Baran	Atru	9 To 12	Sanjay Kumar Gupta	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Kawai (216958)

11	Baran	Baran	1 To 5	Bhupendra Kumar Gautam	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Senior Secondary School Kotrisunda (216831)
12	Baran	Baran	6 To 8	Mahaveer Prasad Suman	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Kotrisunda (216831)
13	Barmer	Balotra	9 To 12	Suresh Kumar	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Budiwada (220652)
14	Barmer	Dhorimana	1 To 5	Jagdish Prasad Vishnoi	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Secondary School Pabubera (226819)
15	Barmer	Kalyanpur	6 To 8	Jeeta Ram	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Charlai Kallan (220705)
16	Bharatpur	Bayana	1 To 5	Braj Kishor Sharma	Prabodhak Level-2	Govt. Primary School Nagla Muawali (412940)
17	Bharatpur	Deeg	9 To 12	Vinod Kumar	Principal & Equivalent	Govt. Senior Secondary School Sheeshwara (217091)
18	Bharatpur	Nadbai	6 To 8	Danveer Sharma	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Senior Secondary School Khatoti (217245)
19	Bhilwara	Raipur	1 To 5	Mukesh Kumar Balai	Prabodhak Level-2	Govt. Primary School Bagriya Basti Palra Block-raipur Dist. Bhilwara (460603)
20	Bhilwara	Shahpura	9 To 12	Basant Kumar Noilkha	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Phuliya Kalan (214482)
21	Bhilwara	Suwana	6 To 8	Mukesh Kumawat	PET (iii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Haled (214822)
22	Bikaner	Bikaner	1 To 5	Ramchander Swami	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Secondary School Ridmalsar Sipahian (211215)
23	Bikaner	Bikaner	6 To 8	Mahboob Ali	PET (iii Gr.)	Govt. Upper Primary School Kesardesar Bohran (418508)
24	Bikaner	Bikaner	9 To 12	Dr. Vishnu Dutt Joshi	Lecturer (i Gr.)	Govt. Girls Senior Secondary School Barah Guwar (211241)
25	Bundi	Bundi	9 To 12	Navneet Jain	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Gsss Jawatikalan (222317)
26	Bundi	Hindoli	1 To 5	Ashok Kumar Khinchi	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Secondary School Triveni Chauk Hindoli (222225)
27	Bundi	Nainwa	6 To 8	Moinuddin Ansari	Prabodhak Level-2	Govt. Upper Primary School Banjaro Ki Dhani Sunthli (470232)
28	Chittaurgarh	Chittorgarh	6 To 8	Gopal Lal Patwa	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Senior Secondary School Bassi (224197)
29	Chittaurgarh	Kapasan	1 To 5	Puran Mal Teli	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Kalyan Pura Mungana (501485)
30	Chittaurgarh	Kapasan	9 To 12	Subhash Chandra Nandwana	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Singhpur (224224)
31	Churu	Rajgarh	1 To 5	Sewanand	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Upper Primary School Jodhawas (410666)
32	Churu	Rajgarh	9 To 12	Anita Choudhary	Lecturer (i Gr.)	Govt. Girls Senior Secondary School Mohta Rajgarh (215273)

33	Churu	Sujangarh	6 To 8	Jivraj Singh	Prabodhak Level-2	Govt. Upper Primary School Meghwal Basti Dewani (405608)
34	Dausa	Dausa	6 To 8	Jagdish Prasad Meena	Senior Teacher (ele. Hm)	Govt. Girls Upper Primary School Harijan Basti Dausa (402006)
35	Dausa	Mahwa	9 To 12	Rajendra Prasad Meena	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Raipur Mahwa Dausa (212902)
36	Dausa	Sikrai	1 To 5	Maya Jarwal	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Primary School Bairwa Dhani Second Murlipur (422928)
37	Dhaulpur	Dholpur	1 To 5	Seema	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Sanda (485284)
38	Dhaulpur	Dholpur	9 To 12	Renu Sikarwar	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Luhari Dholpur (211827)
39	Dhaulpur	Rajakhera	6 To 8	Ravindra Singh	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Daan (486593)
40	Dungarpur	Aspur	6 To 8	Narayanlal Parmar	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School G.u.p.s. Usmaniya (437388)
41	Dungarpur	Galiyakot	9 To 12	Rakesh Kumar Sharma	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Jasela (223701)
42	Dungarpur	Jhonthari	1 To 5	Rajesh Roat	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Upper Primary School Bhagela Fala (480055)
43	Ganganagar	Karanpur	1 To 5	Chandr Prakash	Prabodhak	Govt. Primary School 19 Ff (432555)
44	Ganganagar	Karanpur	6 To 8	Kanhiya Lal	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Kharlan (211926)
45	Ganganagar	Padampur	9 To 12	Satnam Singh	PET (iii Gr.)	Govt. Senior Secondary School 11 Eea (212027)
46	Hanumangarh	Bhadra	9 To 12	Mahabir Prasad	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Dabri (212412)
47	Hanumangarh	Nohar	6 To 8	Mahendra Singh	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Secondary School Lalana Uttarada (226936)
48	Hanumangarh	Pilibangan	1 To 5	Manju Gupta	Teacher (iii Gr.) Level 2	Saheed Chamkaur Singh Govt. Senior Secondary School Dabli Rathan (211105)
49	Jaipur	Govindgarh	6 To 8	Mahendra Singh	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Damba Ka Bas (463525)
50	Jaipur	Jaipur East	9 To 12	Seema Bansal	Lecturer (i Gr.)	Govt. Girls Senior Secondary School Sindhi Jawahar Nagar (218893)
51	Jaipur	Jalsu	1 To 5	Banwari Lal Kanwant	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Senior Secondary School Nangal Purohitan (218581)
52	Jaisalmer	Pokaran	1 To 5	Dalpat Ram	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Senior Secondary School Kelawa (220483)
53	Jaisalmer	Sam	6 To 8	Bhoor Singh	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Chhor (477748)
54	Jaisalmer	Sam	9 To 12	Vijay Kumar	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Secondary School Netsi (225160)

55	Jalor	Bhinmal	6 To 8	Ghanshyam Kumar	Prabodhak Level-2	Govt. Upper Primary School Varli Nadi Navapura Chopavtan (472566)
56	Jalor	Jaswantpura	1 To 5	Mahendra Kumar	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Senior Secondary School Tawao (213762)
57	Jalor	Jaswantpura	9 To 12	Ravindera Kumar	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Boogaon (213787)
58	Jhalawar	Bhawanimandi	9 To 12	Prahlad Nagar	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Karawan (224712)
59	Jhalawar	Dag	1 To 5	Husain Ali	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Khamala (471374)
60	Jhalawar	Dag	6 To 8	Suresh Kumar Bijarniya	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Rapakhedi (467177)
61	Jhunjhunun	Alsisar	9 To 12	Surendra Kumar	Principal & Equivalent	Govt. Senior Secondary School Hamiri Kalan (211614)
62	Jhunjhunun	Buhana	1 To 5	Hetram Payal	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Primary School Sanwalwala Johar (485967)
63	Jhunjhunun	Buhana	6 To 8	Parveen Kumar	Senior Teacher (ele. Hm)	Govt. Upper Primary School Narat (413470)
64	Jodhpur	Dechu	1 To 5	Sheraram	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Secondary School Gss Asarlai (225075)
65	Jodhpur	Luni	9 To 12	Shakir Ali	PET (iii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Sajada Luni Jodhpur (219641)
66	Jodhpur	Tinwari	6 To 8	Snehdeep Tak	PET (iii Gr.)	Govt. Upper Primary School Digari (476399)
67	Karauli	Hindaun	6 To 8	Mukesh Kumar	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Shrimahaveerji (212516)
68	Karauli	Karauli	1 To 5	Manish Kumar Sharma	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Girls Upper Primary School Bhoder (490973)
69	Karauli	Karauli	9 To 12	Seema Gupta	Lecturer (i Gr.)	Govt.vari.upadh.sanskrit School Karauli
70	Kota	Khairabad	6 To 8	Dayal Singh	PET (iii Gr.)	Govt. Upper Primary School Dhakiya (464299)
71	Kota	Kota	1 To 5	Nisha Mehra	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Senior Secondary School Bhimgajmandi Kota (216823)
72	Kota	Kota	9 To 12	Rakesh Kumar Nagar	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Deoli Arab Kota (216801)
73	Nagaur	Khinwsar	9 To 12	Mangi Lal Legha	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Dheengsara (219851)
74	Nagaur	Mundwa	6 To 8	Gajendra Gepala	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Mirjas (502832)
75	Nagaur	Riyan	1 To 5	Ghanshyam Charan	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Primary School Dhaka Ki Lora Dhani (430194)
76	Pali	Pali	1 To 5	Jagpal Singh	Teacher (iii Gr.) Level 1	Maharaja Shri Agarsen Gups Boharo Ki Dhal, Pali
77	Pali	Pali	9 To 12	Ashwani Karsoliya	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Secondary School Bhavnagar Pali (221450)

78	Pali	Raipur	6 To 8	Gajanand Awasthi	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Upper Primary School Kolpura (500370)
79	Pratapgarh	Chhoti Sadri	1 To 5	Laxmi Narayan Tali	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Primary School Gps Rela (475927)
80	Pratapgarh	Peepalkhoot	9 To 12	Vikram Kothari	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Suhagpura (224757)
81	Pratapgarh	Pratapgarh	6 To 8	Chandra Prakash Gehlot	PET (ii Gr.)	Mahatma Gandhi Govt. School, English Medium Paliwal Gali, Pratapgarh
82	Rajsamand	Bhim	1 To 5	Laxman Kathat	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Primary School Devniya (444482)
83	Rajsamand	Khamnor	9 To 12	Lokesh Kumar Paliwal	Lecturer (i Gr.)	Govt. Senior Secondary School Koshiwara (222863)
84	Rajsamand	Railmagra	6 To 8	Mukesh Chandra Sukhwal	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Senior Secondary School Rajpura (222967)
85	S. madhopur	Bounli	1 To 5	Roopnarayan Gurjar	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Secondary School Shisholav (212793)
86	S. madhopur	Chauth Ka Barwara	6 To 8	Ramhet Meena	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Senior Secondary School Sarsop (217933)
87	S. madhopur	Khandar	9 To 12	Rajesh Rewari	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Secondary School Bajoli (217854)
88	Sikar	Fatehpur	1 To 5	Nemichand	Prabodhak Level-2	Govt. Upper Primary School G Ups Nangli (491656)
89	Sikar	Fatehpur	6 To 8	Dhanraj Maharshi	Teacher (iii Gr.) Level 2	Govt. Senior Secondary School Gangiasar (213136)
90	Sikar	Shri Madhopur	9 To 12	Shimla Kumari	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Gsss Reengus (219380)
91	Sirohi	Reodar	1 To 5	Narendra Singh	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Senior Secondary School Nagani (214012)
92	Sirohi	Sheoganj	6 To 8	Tilok Chand	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Morali (213970)
93	Sirohi	Sheoganj	9 To 12	Jitendra Kumar	Lecturer (i Gr.)	Shahid Bhanwar Singh Govt. Senior Secondary School Chhibagaon (213988)
94	Tonk	Malpura	1 To 5	Harpal Singh Choudhary	Teacher (iii Gr.) Level 1	Govt. Primary School Bhawanipura Lamya Junardar Jharli (408114)
95	Tonk	Malpura	9 To 12	Girdhar Singh	Principal & Equivalent	Govt. Senior Secondary School Np Malpura Ward No 25 Malpura Tonk (221944)
96	Tonk	Newai	6 To 8	Hansraj Gujar	Senior Teacher (ii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Nala Newai Tonk (222057)
97	Udaipur	Girwa	6 To 8	Sushil Sen	PET (iii Gr.)	Govt. Upper Primary School Bhilurana Colony (430518)
98	Udaipur	Girwa	9 To 12	Ghanshyam Khatik	PET (iii Gr.)	Govt. Senior Secondary School Kaya (223260)
99	Udaipur	Salumbar	1 To 5	Mohan Giri Goswami	Prabodhak Level-2	Govt. Primary School Gps Daila (412344)

जिला परियोजना समन्वयकों की सूची				
100	Teja Singh	Hanumangarh	CDEO	CDEO Hanumangarh
101	Ratan Singh Yadav	Jaipur	CDEO	CDEO Jaipur
102	Sampatram Barupal	Churu	CDEO	CDEO Churu
अति. जिला परियोजना समन्वयकों की सूची				
103	Kulvant Singh	Hanumangarh	ADPC	ADPC Hanumangarh
104	Bhanwar Lal Jangid	Jaipur	ADPC	ADPC Jaipur
105	Ramesh Chand Puniya	Churu	ADPC	ADPC Churu
राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह विशिष्ट उपलब्धि हेतु सम्मानित अधिकारी/शिक्षक				
106	Rajendra Singh Bidawat	Jaipur	Scientists-b	NIC Jaipur
107	Sandeep Joshi	Jalor	Lecturer (I Gr.)	Govt Sr.sec.school Davat Jalor
108	Manoj Kumar Pathak	Udaipur	Lecturer (I Gr.)	Govt Sr.sec.school Salumbar
आदर्श विद्यालयों के संस्थाप्रधान				
109	Babulal Meena	Bharatpur	Principal	Govt Sr Sec School Salampur Khurd
110	Mahaveer Prasad Bhakar	Hanumangarh	Principal	Govt Sr.sec.school Ramsara Narayana
111	Mangilal	Churu	Principal	Govt Sr.sec.school Punsisar
उत्कृष्ट विद्यालयों के संस्थाप्रधान				
112	Puspander Singh Rathore	Pratapgarh	Headmaster	GUPS Kasarpura
113	Makal Khan	Churu	Headmaster	GUPS Satmeel
114	Ramkumar Mahar	Ganganagar	Headmaster	GUPS Harishinghpura

शिविरा - एक परिचय

राजस्थान सरकार के माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित मासिक पत्रिका शिविरा (Shivira Patrika) जूलाई, 1966 से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका में शिक्षा विभागीय मासिक आदेश-परिपत्र एवं दिशा-निर्देश, साहित्यकारों व शिक्षकों तथा शिक्षा अधिकारियों के आलेख, नवाचार एवं शैक्षिक चिन्तन संबंधी रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। स्थाई स्तम्भों में नवप्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा, शाला प्रांगण के माध्यम से विद्यालयों में आयोजित सह शैक्षणिक गतिविधियों का प्रकाशन, हमारे भामाशाह के अन्तर्गत विद्यालयों में भामाशाहों के दिए गए सहयोग का जिले वार प्रकाशन। बाल शिविरा के माध्यम से विद्यार्थियों की रचनाएँ भी हाल ही में प्रारम्भ की गई हैं। विशेषांक में शैक्षिक चिन्तन, हिन्दी विविधा, हिन्दी कविता, बाल साहित्य एवं राजस्थानी साहित्य की श्रेष्ठत्तम रचनाओं का प्रकाशन कर, संग्रहणीय अंक प्रतिवर्ष जयपुर में राज्य सरकार द्वारा शिक्षक दिवस समारोह में विमोचन किया जाता रहा है । प्रत्येक माह प्रकाशित शिविरा का मई-जून अंक संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इस प्रकार कुल 11 अंकों का नियमित प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका का प्रत्येक अंक शिक्षा जगत से जुड़े प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय अंक के रूप में प्रकाशित करने का सम्पादक मण्डल सार्थक व सकारात्मक प्रयास नियमित रूप से करता है। शिविरा पत्रिका को क्रय करने की तीन केटेगरी निर्धारित की गयी हैं, प्रत्येक की दर अलग है।

व्यक्तिगत - Rs. 100/- वार्षिक, राजकीय संस्थान - Rs. 200/- वार्षिक, गैर-राजकीय संस्थान - Rs. 300/- वार्षिक

निर्धारित भुगतान प्राप्ति के पश्चात, अगले माह से शिविरा पत्रिका दिए गए पते पर पोस्ट कर दी जाती है। यह प्रत्येक माह की 5 अथवा 6 तारीख को साधारण डाक से सदस्यों को भेजी जाती है। इस बाबत किसी भी नुकसान की जिमेदारी प्रकाशक की नहीं होगी।

आवेदन प्रक्रिया

- शिक्षा विभाग के किसी भी पोर्टल यथा शालादार्पण पर दिए गए लिंक शिविरा पत्रिका हेतु ऑनलाइन आवेदन पर क्लिक कर सर्विस-प्लस पोर्टल को एक्सेस कीजिए।
- लेफ्ट साइड में दिए गए मेनू से पूर्व में पंजीयन नहीं किया हुआ है तो 'Register Yourself' मेनू आइटम के द्वारा पंजीयन करवाएँ।
- एक बार पंजियान होने के पश्चात दाईं और दिए गए लिंक 'Login' के माध्यम से पंजीकरण के समय दिए गए लोगिन/पासवर्ड द्वारा लॉग इन कीजिए।
- लोगिन के पश्चात बाएं और दिए गए मेनू आइटम के 'Apply Service' लिंक द्वारा आवेदन करें एवं चाही गयी सभी जानकारी ध्यान से भरें।
- पासवर्ड आदि भूलने की स्थिति में होम पेज के दायीं और दिए गए लिंक 'Forgot Password' बटन का इस्तेमाल करें ।
- ग्राहक के प्रकार एवं मासिक चाही गयी प्रतियों की संख्या का सही से चयन करें।
- आवेदन समाप्ति / आवेदन पत्र प्रिंट पश्चात दिए गए लिंक द्वारा राज्य सरकार के पेमेन्ट पोर्टल 'eGRass' के माध्यम से ऑनलाइन भुगतान करें। दिए गए लिंक पर क्लिक के पश्चात प्रोग्राम स्वयं ही इग्रास लिंक पर ले जाएगा। भुगतान के समय दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।

शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर

फोन: 0151-2528875, मो: सम्पादक : 9460618809, वरिष्ठ सम्पादक: 9461074850

स्मृति विशेष

पढ़ना लिखना जिनके लिए नितनेम था

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

शिविरा एवं नया शिक्षक के सम्पादक रहे डॉ. जमनलाल बायती नहीं रहे। पिछले माह 7 अक्टूबर, 2020 को भीलवाड़ा स्थित अपने निवास पर उन्होंने अन्तिम सांस ली। पढ़ना-लिखना उनके लिए नितनेम था। वे भोजन किए बिना रह सकते थे; पढ़े-लिखे बिना नहीं। वे जिन्दगी भर लेखन-पठन के सागर में अवगाहन करते रहे। जीवन के अन्तिम दिन 6 अक्टूबर की रात्रि तक पुस्तक को सीने से लगाए रहे। उनका जन्म 20 अक्टूबर 1938 के दिन चित्तौड़गढ़ के गाँव पारसोली में हुआ था। वयोवृद्ध तो थे, सो थे, बाकी कोई विशेष हारी बीमारी नहीं थी उन्हें। उस दिन भी रोजमर्रा की तरह दवाइयाँ ली और चुपचाप हरिशरणं हो गए।

'शिविरा' एवं 'नया शिक्षक' पत्रिकाओं के वरिष्ठ सम्पादक ही नहीं रहे बल्कि वे शिविरा प्रकाशन के सच्चे सखा एवं शुभचिन्तक थे। साठ वर्ष की शिविरा के वर्ष पड़ाव में शायद ही कोई ऐसा उदाहरण मिले, जिसमें उनका लिखा न छपा हो। देश-दुनिया के बड़े से बड़े अखबार एवं शैक्षिक पत्रिकाओं में उनके लिखे आलेख प्रमुखता से प्रकाशित होते थे। लेकिन शिविरा उनके लिए नम्बर वन थी। मुझे उनके साथ काम करने का अवसर मिला था। अपनों के प्रति आत्मीयता एवं स्नेह उनमें कूट-कूट कर भरा था। समय की अंगड़ाई के साथ जब मैं शिविरा सम्पादक बना तो उनसे न केवल स्वयं उनका ही सहयोग मिला बल्कि उन्होंने एनसीईआरटी. सहित देश में शीर्ष शिक्षाविदों से रचनात्मक सहयोग प्राप्त करने में हमारी मदद की। वे हमारे मित्र नहीं, संरक्षक भी थे।

डॉ. बायती के द्वारा लिखे और प्रकाशित आर्टिकल्स की संख्या हजारों में होगी। दर्जनों पुस्तकें छपीं और अनेक शोधार्थियों के वे शोध निदेशक रहे। वे एज्यूकेशन में पी.एचडी. (Ph.D.) थे। यूएसए. से डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (D. Lit) की प्रतिष्ठित डिग्री प्राप्त कर उन्होंने देश-प्रदेश का नाम रोशन किया। साहित्य रत्न से विभूषित डॉ. बायती ने पत्रकारिता में पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री (MJMC.) के साथ ही NCERT, नई दिल्ली से शैक्षिक प्रबंध एवं प्रशासक में डिप्लोमा प्राप्त किया था। वे छः विषयों में निष्णात उपाधि प्राप्त थे यथा एम.ए.- अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान एवं अंग्रेजी साहित्य, एम.एड. और एम.कॉम (आर्थिक प्रशासन)। वे सही मायने में पढ़ाकू इंसान थे। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती और राजस्थानी भाषाओं पर उनका जबरदस्त अधिकार था। राजस्थान स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाश्य शिक्षक दिवस प्रकाशन में वे बिना किसी चूक के निरन्तर लिखते और छपते रहे। इन प्रकाशनों के सम्पादन का उत्तरदायित्व सौंपे जाने पर कुशलतापूर्वक यह कार्य उन्होंने किया।

बायती जी सही मायने में शिक्षक, शिक्षाविद् एवं मनोविज्ञानी थे। टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज (I.A.S.E.), बीकानेर में उनका लम्बा कार्यकाल आज फील्ड में पढ़ा रहे हजारों शिक्षकों के रूप में बोल रहा है। वे सबके मित्र और सब उनके मित्र थे। दरअसल वे अजातशत्रु थे। सात राज्यों की समवेत अनुशंषा पर उन्हें आदर्श शिक्षक के रूप में सम्मानित किया गया। उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में दो मनोवैज्ञानिक परीक्षण कर शिक्षा मनोविज्ञान का परिष्कार किया।

उनके द्वारा लिखी पुस्तकों में शैक्षिक विचार, बालकों की समस्याएँ, शिक्षा के नए उभरते क्षितिज, शिक्षा मोड़ पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, व्यावसायिक शिक्षा (दो भागों में) युगीन शैक्षिक चिन्तन, सभी के लिए शिक्षा, बाल मनोविज्ञान, Reading in Education, problems of Education in the third world, student Leadership, पत्रकारिता के सिद्धांत, नौकरी कैसे पाएँ, सफल साक्षात्कार कैसे दे, सफलता आपकी मुट्ठी में, रोजगार आपके कदमों में, Current Education Issues, Human Learning, तेरा तुझको अर्पण, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, जन-जन हेतु शिक्षा, रोजगार निर्देशिका, शिक्षा प्रशासन में छात्र शक्ति, बाल विकास, शिक्षा के संदर्भ में, शिक्षा सबके लिए एवं चिर सहचरी। चिर सहचरी उनके द्वारा जगत की सेवामें प्रस्तुत अन्तिम पुस्तक प्रसाद है। इसमें मृत्यु विषयक समग्र चिंतन है। मृत्यु के बारे में लिखना बहुत कठिन है मगर डॉक्टर जमना लाल जी मृत्यु से पहले मृत्यु पर लिखकर अमर हो गए। देहावसान से चंद दिन पहले ही मेरे से लम्बी मोबाइल वार्ता कर इस पुस्तक के बारे में बताया था। मृत्यु हमारी चिर सहचरी है। वह फाइनल है। इसके बाद और कुछ नहीं बचता। मृत्यु से आलिंगन कर वे इस असार संसार से मुक्त हो गए।

डॉ. बायती अध्यवसायी, अक्षर उपासक एवं शब्द शिल्पी थे। बीकानेर टी.टी. कॉलेज उनकी कर्मभूमि रहा। यहाँ वे प्रवाचक से लेकर अधिष्ठाता-प्राचार्य एवं निदेशक रहे। सरलता एवं सादगी उनके आभूषण थे। मित एवं मृदुभाषी बायती जीवन भर साइकिल पर ही कार्यालय एवं संस्थान आते रहे। टू व्हीलर/फोर व्हीलर उन्हें कभी लुभा नहीं पाए। वे महात्मा गाँधी की शिक्षाओं पर चलने वाले स्वयं महात्मा ही थे।

सामान्य शिक्षक से विभाग के शीर्ष पदों में भारी भरकम संयुक्त निदेशक तक की उनकी यात्रा सराहनीय एवं अनुकरणीय रही। उन्हें उत्कृष्ट कार्यों एवं श्लाघनीय सेवाओं के लिए दर्जनों प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं सम्मान राजस्थान एवं अन्य राज्यों/केन्द्र से प्राप्त हुए। पुरस्कार मिलने पर वे कहते थे कि अब तो और ज्यादा कार्य करना है। इसमें वे आजीवन खरे उतरे। शिविरा में उनके अधीन कनिष्ठ संपादक के रूप में काम किए दिन हों अथवा शिविरा प्रभारी वरिष्ठ संपादक के रूप में उत्तरदायित्व निर्वहन का दौर-सब जगह और सब समय जमना लाल जी सर से स्नेह, सहयोग एवं कुछ अतिरिक्त करने की प्रेरणा मिली। उन जैसा इतना पढ़ा-लिखा, निरन्तर पढ़ने-लिखने वाला तथा इन सबके बावजूद सदैव सरलता का लिबास धारण करने वाला इंसान मैंने आज तक नहीं देखा।

'आप अपने पढ़ने-लिखने की कार्य योजना कैसे बनाते हैं?' एक बार मेरे इस सवाल पर उन्होंने बहुत मूल्यवान बात कही थी। मुस्काते हुए वे बोले, 'मैं शिक्षक हूँ भाई! शिक्षक पढ़ने-लिखने की योजना बनाएगा? अरे, वह तो उसका नितनेम है। पढ़ना-लिखना मेरा डेली एजेंडा है। किसी दिन खाए बिना रह सकता हूँ, मगर पढ़े-लिखे बिना नहीं। दिवगंत पुण्यात्मा के इस कथन से आज की पीढ़ी के लाखों शिक्षकों को प्रेरणा लेकर अनुकरण करना चाहिए।

नई पीढ़ी के गुरुजन बहुत मेहनती एवं जज्बे वाले हैं। विद्यालयों में स्थित पुस्तकालयों के साथ आईटी ने दुनिया भर का ज्ञान एक मोबाइल में उनको उपलब्ध करवा दिया है। वे ज्ञान के संसार में जी रहे हैं। उन्हें डॉक्टर बायती के जीवन एवं कर्म से सीख लेकर खूब पढ़ना व खूब लिखना चाहिए। वे शिविरा के वरिष्ठ संपादक रहे थे। शिविरा एवं उनके संगी साथी रहे कार्मिक उन्हें कभी भूल नहीं पाएंगे। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि एवं उनकी पावन स्मृति को शत-शत नमन। ओउम् शिवम्।

ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव जी रोड,
गंगाशहर, बीकानेर (राज.)-334401
मो. 09414060038

सामाजिक सरोकार

समावेशी शिक्षा का महत्त्व

❐ स्नेहलता शर्मा

समावेशी शिक्षा का मतलब ऐसी शिक्षा से है जिसमें सामान्य बालक और विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को एकसाथ अध्यापन कराया जाता है। शिक्षक द्वारा शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करते हुए दोनों ही प्रकार के बच्चों को अध्यापन कराते हैं ऐसी शिक्षा को समावेशी शिक्षा कहते हैं।

समावेशी शिक्षा का महत्त्व बढ़ रहा है इस शिक्षा से दोनों प्रकार के बालक-बालिकाओं के एक साथ अध्ययन से समाज में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं।

सामान्य बच्चे पहले विशेष आवश्यकता वाले बच्चों से भेदभाव, मजाक और उनको भला-बुरा, कमजोर आदि अपमानित शब्दों से बुलाते थे। लेकिन समावेशी शिक्षा पद्धति से दोनों को एक साथ एक शिक्षण पद्धति से अध्यापन कराने से सामान्य बच्चों में विशेष बच्चों के प्रति सहनशीलता, भेदभाव में कमी, सहयोग की भावना की सोच विकसित हुई है। अब उनके प्रति मजाक और भेदभाव में कमी देखी जा सकती है। शिक्षक को समावेशी शिक्षा पद्धति में अध्यापन कराते समय विशेष बच्चों को वरीयता देनी चाहिए। जैसे- उन्हें कक्षा की अगली लाईन में बैठाना, जिससे उन्हें ब्लैक बोर्ड देखने में आसानी हो, साथ ही शिक्षक द्वारा अगली लाइन में बैठाने से विशेष बच्चों का ध्यान बराबर बना रहता है तथा उनसे बराबर प्रश्नोत्तर करने से भी वे सजग रहते हैं।

शिक्षक को आवश्यकतानुसार टीचिंग एड के साधनों जैसे वर्कसीट, पजल, चित्र, उदाहरणों, कविता, कहानी, स्मार्ट क्लास, ऑडियो-वीडियो के द्वारा भी कराया जा सकता है। ये टीचिंग एड के साधन सभी बालक-बालिकाओं के लिए उपयोगी और रोचक होते हैं खेल एवं वीडियों के माध्यम से पढ़ाए जाने वाले विषय जल्दी समझ में आते हैं। इससे कक्षा में बालक-बालिकाएँ भी सजग रहते हैं। इससे संचार माध्यम प्रभावी होता है और अनुशासन

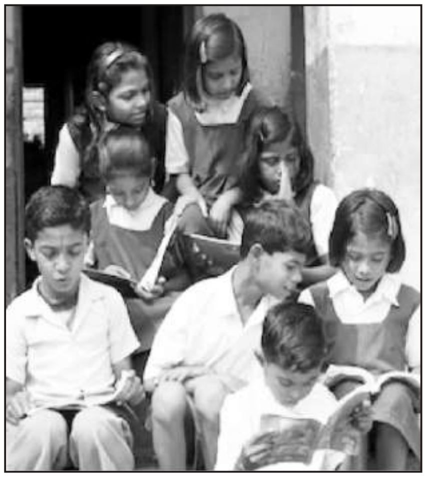

की भावना का स्वतः ही विकास होता है। समावेशी शिक्षण पद्धति में शिक्षक और बालक-बालिकाओं दोनों को अच्छे अध्यापन और अध्ययन का एहसास होता है।

यह मनोवैज्ञानिक रिसर्च है कि खेल, टीचिंग एड और स्मार्ट क्लॉस के नई शिक्षण पद्धति से सकारात्मक परिणाम देखे गए हैं। दूसरी ओर अगर हम विशेष शिक्षा की बात करें तो विशेष शिक्षा में विशेष बच्चों के लिए विशेष स्कूल होते हैं जहाँ केवल विशेष शिक्षकों द्वारा ही उन्हें पढ़ाया जाता है और विशेष पद्धति द्वारा। इस पद्धति से विशेष बच्चों का सामाजिक विकास, भावनात्मक और आपसी सहयोगात्मक जैसी भावनाओं का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है जिससे सामान्य और विशेष बालक-बालिकाओं में इससे दूरियाँ बढ़ती रही हैं जो विशेष बच्चों के विकास में अवरोधक होती हैं। सामान्य बच्चे इनको अपने समान नहीं मानते हैं। उनकी भावना उनके प्रति सहयोगात्मक नहीं हो पाती है और वे उनसे पिछड़ने लगते हैं।

समावेशी शिक्षा पद्धति से अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। उनके सकारात्मक परिणामों के आधार पर समावेशी शिक्षा पद्धति को लागू करने की माँग बढ़ रही है अब विशेष स्कूलों के स्थान पर समावेशी शिक्षा पद्धति को महत्त्व मिल रहा है।

सामान्य शिक्षकों को भी भारतीय पुनर्वास परिषद् अधिनियम 1992 के अन्तर्गत विशेष शिक्षा में प्रशिक्षित करने की महती आवश्यकता बताई गई है। जिससे सामान्य शिक्षकों को भी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, अध्ययन और उनके भावनात्मक सोच को समझ कर अध्यापन में उनका सहयोग कर सकें। इस भावनात्मक सहयोग से दोनों में सामंजस्य हो सकेगा और सामान्य शिक्षक उनकी भावनाओं को भली भाँति समझकर उसके अनुसार अध्ययन-अध्यापन का कार्य कर सकेंगे।

भारतीय पुनर्वास परिषद् की स्थापना संसद में सन् 1992 के अधिनियम के अन्तर्गत की गई। भारतीय पुनर्वास परिषद् का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। परिषद् द्वारा देशभर के विशेष शिक्षा एवं विशेष व्यक्तियों के कल्याणार्थ व्यक्तियों को प्रशिक्षण, संस्थानों को मान्यता देकर उनके प्रशिक्षणार्थियों को दिव्यांगता क्षेत्र में कार्य करते हुए पाए जाने पर अधिनियमानुसार उन्हें दण्डित करने का कार्य भी करती है।

भारतीय पुनर्वास परिषद्, भारत सरकार का संवैधानिक निकाय है यह भारत सरकार को दिव्यांगता क्षेत्र में पॉलिसी, नियम-कानून बनाने के लिए सहयोग/सुझाव का कार्य भी करता है।

सन् 2016 के अधिनियम द्वारा अब 21 प्रकार की दिव्यांगता निर्धारित की गई है दिव्यांगता का निर्धारण 40 प्रतिशत से अधिक होने पर ही उन्हें केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा देय सामाजिक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त होता है। 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता होने पर ही स्थानीय स्तर पर जिला अस्पतालों में दिव्यांगता प्रमाण-पत्र बनाए जाते हैं। दिव्यांगता चिकित्सा प्रमाण-पत्र के आधार पर वह कल्याणकारी योजनाओं को लेने के लिए अधिकृत हो जाते हैं।

हाल ही में राजस्थान के माननीय शिक्षामंत्री श्री गोविन्द सिंह जी डोटासरा द्वारा

दिव्यांग बालक-बालिकाओं को बिना चिकित्सा प्रमाण-पत्र के आधार पर निजी/राजकीय विद्यालयों में प्रवेश देने के निर्देश दिए गए हैं। इस निर्देश से दिव्यांगों के नामांकन में वृद्धि हुई है। साथ ही सरकार ने दिव्यांगों की उच्च शिक्षा के नियमों में संशोधन किया है। इससे उच्च विशेष शिक्षा में भी विशेष शिक्षक उपलब्ध हो सकेंगे। राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान में दिव्यांग शिक्षकों एवं दिव्यांग विद्यार्थियों को अध्यापन कराने वाले विशेष शिक्षकों के मापदण्ड भी निर्धारित किए गए हैं-

दिव्यांग व्यक्तियों को मिलने वाले लाभ-केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता होने पर ही चिकित्सा प्रमाण-पत्र के आधार पर सुविधाएँ/लाभ प्राप्त होते हैंः-

- 750 रुपये प्रतिमाह दिव्यांगता पेंशन।
- राजस्थान पथ परिवहन निगम की बसों में 75 प्रतिशत की किराए में रियायत।
- रेल यात्रा करने पर 50 प्रतिशत की रियायत।
- ट्राई साइकिल, श्रवण यंत्र, व्हील चेयर, वैशाखी आदि उपकरणों का निःशुल्क वितरण।
- दिव्यांग छात्रवृत्तियाँ।
- बोर्ड परीक्षा में लेखन हेतु राईटर एवं समय की छूट।
- राजकीय सेवा की भर्तियों में पदों में आरक्षण।
- रेल, बसों, मेट्रो में सीटों के निर्धारण।
- राजकीय कार्यालयों में रैम्पो की व्यवस्था का प्रावधान।
- राजकीय सेवा में पदस्थापन एवं स्थानान्तरण में प्राथमिकता।
- आयकर में छूट।
- स्वरोजगार हेतु कम ब्याज दर पर ऋण।
- विद्यालयों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में सीटों का आरक्षण।

अतः प्रदेश में सरकारी/निजी विद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों को जानकारी दी जाएँ ताकि दिव्यांगता क्षेत्र में मिल रही सुविधाओं का वंचित दिव्यांग एवं उनके परिजन लाभ प्राप्त कर सकें।

विशेष शिक्षिका
एच-30-ए, गोविन्दपुरी-एच (शनिदेव मंदिर गली)
स्वेज फार्म, 22 गोदाम, जयपुर (राज.)-302019
मोः 9928388935

श्रवण बाधित दिव्यांग : शिक्षा

शिक्षा में प्रवर्धक उपकरणों का उपयोग

❒ डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका 'फुलेता'

श्रवण बाधित बालकों को शिक्षा प्रदान करना व समाज की मुख्यधारा से उन्हें जोड़ने का प्रयास शिक्षक, अभिभावक व समुदाय के लिए किसी चुनौती से कम नहीं है। श्रवण बाधित बालकों की शिक्षा में यदि एम्पलीफिकेशन (प्रवर्धक) उपकरणों का उपयोग किया जाता है तो श्रवण बाधित बालक की सांकेतिक भाषा (साईन लैंग्वेज) पर निर्भरता कम हो जाती है जिससे कि वह आसानी से समाज की मुख्यधारा में शामिल हो जाता है।

श्रवण बाधित बालकों की शिक्षा में निम्नलिखित प्रवर्धक उपकरण उपयोगी हैं-

लूप इन्डेक्शन : लूप इन्डेक्शन यंत्र को साधारणतः उन कक्षाओं में लगाया जाता है जहाँ श्रवण बाधित बच्चों को अध्यापन करवाया जाता है। सामान्यतः इस प्रणाली के तीन भाग होते हैं- माइक्रोफोन, एम्पलीफायर तथा तार। इसमें माइक्रोफोन उस शिक्षक के पास होता है जो कक्षा में अध्यापन करवा रहा होता है। माइक्रोफोन शिक्षक की आवाज को पकड़ता है, यह आवाज एम्पलीफायर में जाती है, एम्पलीफायर इस आवाज को प्रवर्धित करता है तथा आवाज का विद्युत चुम्बकीय तरंगों में परिवर्तन हो जाता है यह विद्युत चुम्बकीय तरंगे बालक के श्रवण यंत्र में जाती हैं। इससे शिक्षक और बालक में दूरी होने के बाद भी शिक्षक की आवाज बालक को स्पष्ट रूप से सुनाई देती है

तथा शिक्षक के आसपास का शोर भी इसमें सुनाई नहीं देता।

स्पीच ट्रेनर : स्पीच ट्रेनर का प्रयोग श्रवण बाधित बालकों की वाणी को सही करने के लिए किया जाता है। इसे श्रवण प्रशिक्षण की क्रियाओं के लिए उपयोग में लाया जाता है। स्पीच ट्रेनर के माध्यम से विभिन्न प्रकार के श्रवण बाधित बालकों को पढ़ाया जा सकता है। यह यंत्र बिजली एवं बैटरी दोनों के द्वारा चलाया जा सकता है।

कोकलियर इम्प्लान्ट : कोकलियर इम्प्लान्ट के बाद श्रवण बाधित बालक सामान्य बालक की तरह ही सुनने लगता है तथा वह सामान्य बालकों की तरह सामान्य विद्यालयों में अध्ययन भी आसानी से कर सकता है।

कोकलियर इम्पलान्ट एक तरह का यंत्र होता है जो कि सर्जरी के द्वारा अन्तःकर्ण में लगाया जाता है। कोकलियर इम्प्लान्ट सीवियर प्रोफाउण्ड श्रवण बाधित बालकों के लिए उपयुक्त होता है। कोकलियर इम्प्लान्ट के बाद लगभग दो वर्षों तक एक संरचित श्रवण कार्यक्रम के अन्तर्गत बालक की भाषा एवं वाणी का विकास किया जाता है। इसके बाद श्रवण बाधित बालक सामान्य बालकों की तरह सुनने लगता है तथा अपना शैक्षणिक कार्य भी बिना बाधा के पूरा कर सकता है।

सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर
मोः 9602942594

''बालक परमात्मा के मूर्त रूप के प्रतीक हैं। वे तुम्हारे पास आते हुए भी तुम में से नहीं आते। अपनी कल्पनाएं नहीं, अपना प्रेम दो इन्हें। इनके पास अपनी निजी कल्पनाएं हैं। इनकी आत्मा भविष्य के भवन में निवास करती है जो तुमसे बहुत अधिक दूर है। यदि बन सकों तो इनके समान बनने का प्रयत्न करो, इन्हें अपने समान मत बनाओ।''

– खलील जिब्रान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यार्थी

❒ मानाराम जाखड़

खलील जिब्रान की उपर्युक्त पंक्तियाँ बालक के महत्त्व को बताने के लिए पर्याप्त हैं। कभी शिविरा पत्रिका की सहोदर पत्रिका नया शिक्षक (Teachers Today) में ये प्रकाशित हुई थीं। (देखें, नया शिक्षक, सितम्बर 1950; पृष्ठ संख्या 5) पिछले महीने की 15 तारीख (15 अक्टूबर 2020) को राज्यस्तरीय वर्चुअल शिक्षक समान समारोह को देखते हुए मुझे जिब्रान साहब की ये पंक्तिया याद आ रही थी। इस अवसर पर नो बेग-डे (NBD) कार्यक्रम से संबंधित एक ब्रोशर का लोकार्पण माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत एवं माननीय शिक्षामंत्री के द्वारा किया गया। जाहिर है, इस अवसर पर बालक का महिमा गान किया जाना था और वह किया गया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के 34 वर्ष बाद हाल ही में केन्द्र सरकार के स्तर से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आगाज किया गया है। इस पर पिछले काफी समय से बहस चल रही है। यह उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 नाम से इसका विस्तृत प्रारूप जारी किया गया था जिस पर ढाई लाख से भी अधिक सुझाव विभिन्न संवर्ग के व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत किए गए। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति कितनी कारगर और कितनी उपयोगी होगी, इस बात को एक बार छोड़ भी देते हैं, तो इतना तो अभी से मानना पड़ेगा कि इसने शिक्षा जैसे विषय को जन-जन की जुबान पर तो ला दिया है। यह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि कोरोना (कोविड-19) के कारण शिक्षा व्यवस्था पर लगे ग्रहण के बावजूद इसने शिक्षा पर चर्चा को मीडिया-समाचार पत्र/पत्रिकाओं/इलेक्ट्रोनिक साधनों के माध्यम से जिन्दा रखा। मुझे हर्ष तब हुआ जब एक गाँव की यात्रा के दौरान एक बस स्टैण्ड पर बस के इंतजार में बैठे दो बुजुर्गों के मुँह से मैंने नई शिक्षा नीति की चर्चा होते सुनी। सिद्धान्त की बात यह है कि जब किसी विषय पर उससे संबंधित लाभार्थी समूह (Benificiry Group-Boys, Girls) के स्तर पर विमर्श होने लगता है तो उससे अपेक्षित लाभ मिलना अधिक सम्भावित हो जाता है। बहरहाल दो राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों यथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP1986 and NEP 2020) में बालक के संबंध में किए गए प्रावधानों पर चर्चा करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के मुख्य नीति दस्तावेज (Policy Documant) के पश्चात उसकी क्रियान्विति की राह दिखाने के लिए क्रियान्विति कार्यक्रम (Programme of action- POA) वर्ष 1992 में प्रकाशित हुआ। पाठकों को आचार्य समपूर्ति समिति का नाम इस संदर्भ में स्मरण होगा ही-पी.ओ.ए. 1992 का छठा अध्याय प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (Early Childhood Care and Education-ECCE) से संबंधित था। पी.ओ.ए. 1992 आदिनांक शिक्षा व्यवस्था में मील के पत्थर की तरह गिना जाता है। पी.ओ.ए. 1992 के संदर्भित अध्याय-6 का बिन्दु 6.3.3 (d) इस प्रकार है (देखें पृष्ठ 30-31) :-

Pre- Primary Schools and Classes : They essentially focus on education. Therefore, they require:

(i) Adding Components of nutrition with community/parent participation.
(ii) Discouraging the early introduction of the three R's.
(iii) Using play way methods.
(iv) Developing a relationship between home and community.
(v) Discouraging entrance tests for admission

पी.ओ.ए. 1992 में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) के अध्याय में प्रत्येक बच्चे तक उसकी बुनियादी आवश्यकताओं की पहुँच सुनिश्चित करना लक्ष्य रखा गया था। चूंकि प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल, शिक्षा, खेलकूद एवं अन्य मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन आँगनबाड़ियों में ही संभव हो सकता था। अत: दस्तावेज में वर्ष 2000 तक 3.75 लाख आँगनबाड़ी केन्द्र स्थापित करने का संकल्प प्रकट किया गया। यह उल्लेखनीय है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 घोषित होने तथा पीओए 1992 व्यवहार में आने के समय 2.90 लाख आँगनबाड़ी केन्द्र देश में चल रहे थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में नीतिकारों ने इस बात पर पूरा जोर दिया था कि सीखना और सिखाना भारमुक्त और आनन्ददायी हो। जिसे पढ़ने-पढ़ाने, सीखने-सिखाने में आनन्द नहीं आए बल्कि तनाव व अप्रसन्नता का कारण बने तो वह शिक्षण अभिगम (TL) नहीं हो सकता। पहले शिक्षक के पास पढ़ाने के लिए पाठ्यपुस्तक एवं श्यामपट्ट व चाक ही होते थे और बच्चे के पास भी पाठ्यपुस्तक व अभ्यास पुस्तिकाएँ। यह प्रेक्टिश दशकों तक चलती रही। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के संदर्भ में शिक्षकों के आमुखीकरण/प्रशिक्षण शिविरों में शिक्षण अधिगम सामग्री (Teaching Learning Material-TLM) की उपदेयता को समझाकर इसके उपयोग को प्रोत्साहित किया गया। इसने परम्परागत शिक्षण के नियम को तोड़ा और शिक्षक भी सोच विचार कर अच्छे से अच्छे टीएलएम बनाने लगे। शासन स्तर पर भी इसे मान्यता प्रदान करते हुए शिक्षकों को टीएलएम हेतु राशि उपलब्ध करवाई जाने लगी। बीएसटीसी एवं बीएड के शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्राध्यापकों के द्वारा बहुत शानदार टीएलएम तैयार किया जाकर स्कूलों में प्रदर्शित/संधारित किया गया अर्थात् शिक्षा व्यवस्था बालक-बालिका को केन्द्रित कर शिक्षण व्यवस्था पर ध्यान दिया जाने लगा।

शिक्षण अधिगम में आनन्द का एक महत्त्वपूर्ण कारक पढ़ने-पढ़ाने की भाषा होती है। जिस भाषा को सुनते-बोलते वह बड़ा हुआ है

तथा जिसे वह बहुत आसानी से समझ सकता है, उस भाषा के शिक्षण अधिगम का माध्यम होने पर बालक का सीखना सुगम व स्थाई हो सकता है। सामान्यत: इसे हम मातृभाषा में शिक्षण अधिगम क्रियाएँ करना कहते हैं। पीओए 1992 के अध्याय 6.6.3 में कहा गया है, 'Medium of Communication should be mother tongue/regional language. There should be a link between the mother tongue and the dominant language of the region' राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के क्रियान्विति दस्तावेज पी.ओ.ए. 1992 में अंकित उपर्युक्त प्रावधान को गहराई से समझने की आवश्यकता है। इसमें सम्प्रेषण का माध्यम (Medium of Communication) कहा है न कि शिक्षा का माध्यम (Medium of Instruction) शिक्षा के माध्यम की भाषा उसे कहेंगे जिसका प्रयोग उस संस्था/कोर्स में शिक्षण व परीक्षा आदि में प्रयुक्त की जाती है। जैसे यदि Medium of Instruction हिन्दी भाषा है तो पाठ्यपुस्तकें, होमवर्क, परख व परीक्षाएं हिन्दी में होंगी। पुन: पी.ओ.ए '1992' (बिन्दु 6.6.3.) पर आते हैं। इसमें Medium of Communication कहा गया है। यहाँ शिक्षक को पर्याप्त छूट है। हिन्दी माध्यम की पुस्तकों को पढ़ाते हुए शिक्षक स्थानीय भाषा का प्रयोग समझाने में कर सकता है। हमारे एक वाणिज्य विषय के व्याख्याता थे। हिन्दी माध्यम की पुस्तकों से पढ़ाते, उसी के लिए परीक्षार्थ बच्चों को तैयार करते। लेखा शास्त्र पढ़ाते समय अंग्रेजी में खाते तैयार करते बोर्ड भर देते लेकिन बोलते शुद्ध राजस्थानी में। जर्नल एंट्रीज, लेजर, ट्रायल बेलेंस, प्रोफिट एण्ड लोस अकाउण्ट तथा बैलेंसशीट सबकी अवधारणाओं को बच्चों की शुद्ध स्थानीय भाषा में समझाते। क्या मजाल किसी बच्चे के समझ ना आए। सब समझ जाते। बड़ा आनन्ददायी शिक्षण होता था। बच्चे हँस-हँस कर पढ़ते। हम इसे Learning of Laughing कह सकते हैं। इस शिक्षण के प्रभाव का आंकलन बोर्ड परीक्षा परिणाम से करें तो उनके बोर्ड परीक्षा परिणाम 100% रहते। 60 प्रतिशत अंक तो लगभग सभी बच्चों के आते। विशेष योग्यता (75% and more) से उत्तीर्ण होने वालों की संख्या भी कम नहीं होती। राष्ट्रीय शिक्षा नीति '1986' में मीडियम ऑफ कम्प्यूनिकेशन अवधारणा बहुत सटीक अनुशंसा थी।

हाल ही में घोषित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में बालक के महत्त्व को स्वीकार करते हुए आवश्यक प्रावधान किए गए हैं। न्यूरो साइंस के रिसर्च के अनुसार बालक के मस्तिष्क का 80-90 प्रतिशत विकास छ: वर्ष की आयु का होने तक हो जाता है। हमारी वर्तमान में व्यवस्था के अनुसार 6+ आयु होने पर औपचारिक विद्यालय की कक्षा प्रथम में बच्चे का प्रवेश हो सकता है। हाँ, सरकार आँगनबाडी प्री-प्राइमरी (Prep) की सुविधा दे रही है लेकिन यह बिल्कुल अनौपचारिक होने के कारण अपेक्षित गंभीरता वाली बात नहीं दिखाई देती। दुर्भाग्य यह है कि हमारे यहाँ आँगनबाड़ी को महज बच्चे को खिलाने-पिलाने की सुविधा देने वाली प्लेटफोर्म के रूप में ही देखा जाता है। मध्यम एवं संपन्न व्यक्ति अपने बच्चों को आँगनबाड़ी केन्द्रों पर भेजना अपनी तौहीन समझते हैं। गैर-सरकारी प्राइवेट स्कूलों में 3+ वर्ष में बच्चे को नर्सरी कक्षा में प्रवेश दिया जाता रहा है जहाँ उसे 3 से 6 वर्ष तक वह नर्सरी एवं एलकेजी, यूकेजी पाठ्यक्रम तीन वर्ष में पूरा करता है। इस प्रकार हमारे समाज में दो प्रकार के बच्चे देखने में मिलते हैं। प्राइवेट स्कूलों में 3 वर्ष से 6 वर्ष पढ़कर आए बच्चों की नींव मजबूत होती है। लिहाजा आगे भी वे हरावल ही रहते और कम्पीटिशन में उन्ही के नाम देखने को मिलते हैं। आँगनबाड़ी में से होकर आए अथवा सीधे घर से ही 6+ के होकर पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले बालक-बालिकाएँ पिछड़ जाते हैं। यह सर्वथा स्वाभाविक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के अनुसार नया शैक्षणिक पैटर्न 5+3+3+4 होगा। इस आदिनांक प्रवृत्त पैटर्न के साथ तुलना करके समझते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 1986 (10+2)	
प्रवेश	6+
(i)	प्राइमरी - 5 वर्ष (कक्षा 1,2,3,4,5)
(ii)	अपर प्राइमरी/मिडिल - 3 वर्ष (कक्षा 6,7,8)
(iii)	माध्यमिक - 2 वर्ष (कक्षा 9,10)
(iv)	उच्च माध्यमिक - 2 वर्ष (कक्षा 11,12)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 (5+3+3+4)	
	प्रवेश 3+
(i)	आधारभूत पाठ्यक्रम - 5 वर्ष (आंगनबाड़ी (3 वर्ष) कक्षा 1,2)
(ii)	प्राइमरी - 3 वर्ष (कक्षा 3,4,5)
(iii)	अपर प्राइमरी/मिडिल - 3 वर्ष (कक्षा 6,7,8)
(iv)	माध्यमिक - 2 वर्ष (कक्षा 9,10)
(v)	उच्च माध्यमिक - 2 वर्ष (कक्षा 11,12)

कक्षाओं में पड़ाव को आयु ग्रुप के हिसाब से देखें तो वह इस प्रकार बनता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 1986 (10+2)	
(i)	प्राइमरी - 6-11 वर्ष
(ii)	अपर प्राइमरी/मिडिल - 11-14 वर्ष
(iii)	माध्यमिक - 14-16 वर्ष
(iv)	उच्च माध्यमिक - 16-18 वर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 (5+3+3+4)	
(i)	आधारभूत पाठ्यक्रम - 3-8 वर्ष
(ii)	प्राइमरी - 8-11 वर्ष
(iii)	अपर प्राइमरी/मिडिल - 11-14 वर्ष
(iv)	माध्यमिक - 14-16 वर्ष
(v)	उच्च माध्यमिक - 16-18 वर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में बालक-बालिकाओं की महत्ता को स्वीकार करते हुए 3 से 6 वर्ष को भी पाठ्यक्रम व शिक्षण पैटर्न में शामिल कर लेना बहुत सराहनीय कदम है। अब तक की व्यवस्था के नतीजतन बनी सामाजिक मान्यता कि 'छ: वर्ष का होने तक स्कूल में प्रवेश नहीं मिलेगा' अब बदल जाएगी। अब तीन वर्ष के बच्चें को स्कूल में प्रवेश मिलेगा।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) के संबंध में एक नीतिगत दस्तावेज भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा जारी किया गया जो ECCE Policy 2013 कहलाता है। इसके प्रावधानों को लागू किया जाएगा। आँगनबाड़ी केन्द्रों को विकसित किया जाएगा। आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं को छ: माह का सघन प्रशिक्षण

दिया जाएगा। आँगनबाड़ी केन्द्रों की देखभाल (निरीक्षण एवं प्रबोधन) का कार्य शिक्षा विभाग द्वारा किए जाने से शिक्षा का कम्पोनेंट बेहतर बन पाएगा।

आनन्ददायी शिक्षा के लिए औपचारिक पाठ्यपुस्तकों के स्थान पर खेल, खिलौनें होंगे। बच्चा खेलते-खेलते सीख ले, इस मान्यता पर काम किया जाएगा। विद्यालय में प्रवेश के दो वर्ष उपरान्त 5 वर्ष के बालक को Preparatory Class में क्रमोन्नत किया जाएगा। **यह बाल वाटिकाएँ** होंगी जिसमें एक शिक्षक ECCE योग्यताधारी होगा। मौजूदा आँगनबाड़ी में कार्यरत कार्यकर्त्ताओं को नई अवधारणा में प्रशिक्षित किया जाएगा।

माता-पिता एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, उदारमना भामाशाहों को आँगनबाड़ी केन्द्रों व स्कूलों से जोड़ा जाएगा। यहाँ शिक्षण अधिगम में इन महानुभावों की मदद ली जाएगी। परिवार संस्कारों के केन्द्र बनें तथा परिवार व पाठशाला मिलकर बच्चे के सर्वतोमुखी विकास करें, यह उद्देश्य रहेगा। **हमारी संस्कृति में माँ को बच्चे का प्रथम गुरु कहा गया है।** माँ प्रथम गुरु, तो घर पहली पाठशाला बालक जो घर में देखता और करता है, वैसा ही स्कूल में चाहता है तथा जैसा स्कूल में देखता है, घर आकर वैसा ही अनुकरण करता है। अत: विद्यालय एवं घर तथा अभिभावक एवं अध्यापक के मध्य उचित समन्वय एवं पारस्परिक समझ व संकल्प बच्चों को आगे बढ़ाने में मददगार बन सकती है और यह सब संभव है एक मात्र विकल्प से वो है सामुदायिक बालसभाओं को आयोजन। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की क्रियान्विति के दौर में आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों एवं आमुखीकरण के समय इन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। नीति एवं क्रियान्वितिकारों को यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि बालक को मजबूत बनाना राष्ट्र को मजबूत बनाना है। अत: उसे अति महत्त्वपूर्ण (VIP) मानकर कार्य करना चाहिए।

Mould your Children and mould the nation

उपनिदेशक
राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद,
जयपुर (राज.)- 302015
मो: 9829032311

चिन्तन

सकारात्मक विचार

❒ मंजु शर्मा

ईश्वर ने बहुत ही सुन्दर संसार की रचना की है। इस सुन्दर संसार में भी ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति मानव है। मानव एक स्वचालित रोबोट है। मानव अपने मस्तिष्क को जिस प्रकार प्रशिक्षित करता है वह उसी प्रकार कार्य करने लगता है। मनुष्य को अपने विचार सकारात्मक रखने चाहिए।

सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति हमेशा खुशी का अनुभव करते हैं। खुशी सकारात्मकता की भावना जाग्रत करती है। प्रत्येक बात के दो पहलू होते हैं, ये देखने-सुनने वाले पर निर्भर करता है कि उसने उस बात को किस नजरिए से सुना या देखा। उदाहरण के तौर पर एक काँच के गिलास में तीन चौथाई दूध भर दीजिए फिर अलग-अलग सोच वाले दो व्यक्तियों से गिलास के बारे में पूछिए सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहेगा कि गिलास में दूध तीन चौथाई भरा हुआ है जबकि नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहेगा कि गिलास एक चौथाई खाली है।

व्यक्ति जैसा सोचता है वह वैसा ही बन जाता है। कहा भी जाता है कि सावन के अंधे को सब हरा ही हरा नजर आता है। व्यक्ति को हमेशा अपने विचार सकारात्मक रखने चाहिए। सोच का प्रभाव मन पर पड़ता है और मन का प्रभाव तन पर पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों के अनुसार जीवन में कार्य करता है।

एक धार्मिक विचारों वाला व्यक्ति धर्मात्मा बनता है इसी प्रकार कोई व्यक्ति जन्म से अपराधी नहीं होता पर उसके विचार नकारात्मक होने के कारण वह अपराधी प्रवृत्ति का बन जाता है। व्यक्ति के विचारों का प्रभाव उसके रिश्ते-नाते, घर-परिवार, सब ही पर पड़ता है। जो व्यक्ति सकारात्मक सोच के साथ-साथ दृढ़ इच्छा शक्ति भी रखता है वह कभी दुखी नहीं होता। व्यक्ति अपने आप को खुश रखने के लिए स्वयं जिम्मेदार होता है। क्योंकि हम इस संसार में दूसरे किसी व्यक्ति को नहीं बदल सकते परन्तु हम स्वयं को बदल सकते हैं।

स्वयं को बदलना सरल है। प्रत्येक मनुष्य में गुण और अवगुण दोनों होते हैं परन्तु अच्छा व्यक्ति वही है जो दूसरों के गुणों को देखे और अवगुण देखना है तो स्वयं के देखे, तब ही वह अपने अवगुणों को दूर कर सकता है। नकारात्मक सोच का इतना प्रभाव पड़ता है कि यदि व्यक्ति एक-दो घंटे के लिए टेबल पर अपनी कोहनी टिका कर बैठ जाए और सोचे कि मेरे हाथ में दर्द हो रहा है तो उस व्यक्ति को वास्तविक रूप से हाथ में दर्द महसूस होने लग जाता है। इसलिए कहते हैं कि यदि व्यक्ति की सोच सकारात्मक हो तो उसकी आधी बीमारी तो स्वयं ही ठीक हो जाती है। इसलिए कहते हैं 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' जब भी व्यक्ति भगवान के द्वार पर जाता है तो कुछ न कुछ भगवान से जरूर माँगता है इसलिए वह भगवान से सकारात्मक सोच के साथ कुछ माँगे।

व्यक्ति को यदि स्वास्थ्य के बारे में माँगना है तो ईश्वर से ये नहीं कहे कि भगवान मुझे बीमार मत करना। ये नकारात्मकता का भाव है। बल्कि व्यक्ति को भगवान से कहना चाहिए कि हे भगवान! मुझे स्वस्थ रखना। इसमें सकारात्मकता का भाव है। व्यक्ति को अपने सकारात्मक विचारों के साथ ऐसा व्यक्तित्व बनाना चाहिए कि उससे बात करने के लिए सब लालायित हो जाएं। अगर आपको जीवन में कुछ भी कामयाबी पानी है तो आपको आज से ही अपनी सोच सकारात्मक बनानी होगी।

किसी निराशावादी को हर अवसर में मुश्किलें दिखाई देती हैं वहीं आशावादी को मुश्किलों में अवसर दिखाई देता है। सकारात्मक सोच से आप नकारात्मक सोच की तुलना में हर चीज को बेहतर तरीके से कर सकते हैं। इसलिए सकारात्मक सोचें, खुश रहें, स्वस्थ रहें।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आभावास,
सीकर (राज.)
मो: 9414773849

जन्म दिवस पर विशेष

गिजुभाई का बाल शिक्षा में योगदान

❒ रानू सिंह

बाल शिक्षा प्रेमी, बाल मनोविज्ञान के पारखी व अध्येता, बाल शिक्षा युग पुरुष गिरिजा शंकर भगवान जी बधेका उर्फ गिजुभाई का जन्म 15 नवम्बर 1885 को सौराष्ट्र, वर्तमान गुजरात राज्य के चित्तल गाँव में हुआ। वकालत उनका व्यवसाय था पर बाल शिक्षा शास्त्री के रूप में उन्होंने पहचान बनाई। 1915 में गुजरात की दक्षिणामूर्ति भवन संस्था के कानूनी सलाहकार बने तथा विद्यार्थी भवन से जुड़े। यहाँ रहकर अपने कार्य के साथ-साथ उन्होंने अति समीपता से बाल शिक्षा के अनेक पक्षों का गहराई से समझने, चिन्तन-मनन करने का अवसर हाथ से नहीं जाने दिया। उन्होंने साक्षात देखा बच्चे विद्यालय आने में डरते हैं, माता-पिता जबर्दस्ती, मार-पीट कर रोते-चिल्लाते बच्चों को छोड़ जाते है। बच्चों को विद्यालय में दण्डित किया जाता हैं। शिक्षण विधियाँ बालोपयोगी व रुचिकर नहीं हैं। परीक्षा उन्हें बच्चों में अस्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा पैदा करने वाली लगी। इन सब घटनाओं ने उन्हें बाल शिक्षा प्रेमी बना दिया। प्रतिक्रिया स्वरूप उन्होंने 1922 में बाल मन्दिर नाम से बाल विद्यालय स्थापित किया। यहीं से उनकी शैक्षिक यात्रा परवान चढ़ने लगी। उन्होंने शिक्षा जगत में संलग्न रहते बालकों की शिक्षा को व्यवहारिक बनाने में अभिनव योगदान दिया। इस अभिनव योगदान की पहचान को गिजुभाई का जन्म शताब्दी वर्ष 15 नवम्बर 1984 घोषित व आयोजित कर उनको गौरवान्वित किया गया। वे आजीवन बाल शिक्षा की उन्नति में लगे रहे।

उनके समकालीन इटली की मारिया मांटेसरी शिक्षा जगत में मांटेसरी शिक्षण पद्धति की जननी के बाल शिक्षण नवाचारों की लहर गिजुभाई को स्पर्श कर गई। फलतः मांटेसरी शिक्षण पद्धति को भारतीय परिवेश में ढाल कर बाल शिक्षा जगत में अनोखी जुम्बिश की। उन्होंने अपने अनुभव के द्वारा बाल जीवन और बाल शिक्षण के विविध आधारों पर शिक्षा साहित्य को समृद्ध किया और बाल शिक्षा से सम्बन्धित 11 पुस्तकों का सृजन किया। 1. मांटेसरी पद्धति, 2. बाल शिक्षण, जैसा मैं समझ पाया, 3. प्राथमिक शाला में शिक्षा पद्धतियाँ, 4. प्राथमिक शाला में शिक्षक, 5. प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षण, 6. प्राथमिक शाला में चिट्ठी वाचन, 7. प्राथमिक शाला में कला-कारीगरी की शिक्षा भाग 1-2, 8. दिवास्वप्न, 9. शिक्षक हो तो, 10. चलते-फिरते, 11. कथा कहानी का शास्त्र भाग 1-2। इसके अतिरिक्त चार पुस्तकों का लेखन माता-पिता के लिए किया। इन पुस्तकों में माता-पिता से बालकों को स्वस्थ, सुखी व समृद्ध बनाने की प्रेरणापूर्ण चर्चा की गई है। ये पुस्तके हैं- 1. माता-पिता से, 2. माँ-बाप बनना कठिन है, 3. माता-पिता के प्रश्न, 4. माँ-बाप की माथापच्ची। इनका सृजन गिजुभाई ने अपनी मातृभाषा गुजराती में किया। सन् 1934 से 1987 तक पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद शिक्षा प्रेमियों के द्वारा गिजुभाई के जन्म शताब्दी वर्ष 15 नवम्बर 1984 को हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया गया।

वह उस शिक्षा को बाल केन्द्रित मानते थे। जिसमें बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व व बाल क्षमता के विकास का ध्यान रखा जाता हो। वे बालकों के व्यक्तिगत भेदों को ध्यान में रख बच्चों का आदर करते थे। उनकी मान्यता थी कि यदि बच्चों को प्यार दिया जाए और व्यावहारिक रीति से पढ़ाया जाए तो बच्चों को आनन्द आता है। सीखने की क्षमता बढ़ती है। बाल शिक्षण स्नेह व स्वतंत्रता के साथ होना चाहिए। इससे बालक की रुचि पढ़ाई में स्वतः विकसित हो जाती है।

पारम्परिक बाल शिक्षा का ढाँचा उन्हें नापसन्द था। बच्चों को दण्डित व प्रताड़ित करना उन्होंने सबसे बड़ा अपराध माना है। उन्होंने महसूस किया कि बालक के साथ कठोर शब्दों का प्रयोग करने से बालक हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है और उसका शारीरिक व बौद्धिक विकास बाधित होता है। बालकों के साथ स्नेहिल व्यवहार व ममत्व के कारण गाँधीजी ने उन्हें -'मूंछों वाली माँ' कहकर अनोखा सम्मान दिया था। उन्होंने बालकों पर बाह्य अनुशासन थोपने के बजाय स्व अनुशासन पर बल दिया।

व्यवहार के द्वारा छात्रों में नैतिक मूल्यों का सिंचन उन्होंने शिक्षक का महत्त्वपूर्ण दायित्व माना है। विद्यालय में शिक्षक की भूमिका को अपनी पुस्तक 'शिक्षक हो तो' मैं लिखा है 'बालक को उसके अनुसार शिक्षा देनी चाहिए। अपने अनुसार नहीं। शिक्षक को शिक्षण विधि का चुनाव बालकों का स्तर देखकर करना चाहिए, विद्यालय को उन्होंने मन्दिर, शिक्षक को पुजारी व छात्र को देवोभवः का स्थान देकर समाज में प्रतिष्ठित किया।

पाठ्यक्रम में प्राथमिक स्तर पर उन्होंने मातृभाषा शिक्षण पर जोर दिया। इस स्तर पर अक्षर ज्ञान, पढ़ना, लिखना, श्रुति लेख करवाना उन्होंने आवश्यक माना। गणित में अंकों का ज्ञान व पहचान, कला व कारीगरी की शिक्षा, चित्रकला, विज्ञान विषय को सम्मिलित किया। शिक्षण विधियों में उन्होंने खेल विधि क्रिया द्वारा सीखना, नाटक विधि से बालकों को मनोरंजक व आनन्ददायी विधियों द्वारा शैक्षिक वातावरण निर्माण को महत्त्व दिया। वे तोता रटंत विद्या के विरोधी थे। बालक के बौद्धिक विकास हेतु बालक को व्यावहारिक एवं प्रत्यक्ष अनुभव के साथ सीखने का अवसर देते थे।

इस प्रकार शिक्षा के समस्त साधन शिक्षक, विद्यालय, बालक, अभिभावक, शैक्षिक वातावरण, शिक्षण विधियों का नया चित्र व नई रूपरेखा प्रस्तुत कर बाल शिक्षा में गिजुभाई का अनुपम योगदान वन्दनीय है।

अध्यापिका
महेश्वरी गर्ल्स सी. सैकण्डरी स्कूल सिंघीजी का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.) 302003
मो: 8278615657

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

हमारी हिन्दी

भारत की है भाषा हिन्दी
हम सबकी पहचान हिन्दी
हिन्दी की है बात निराली
ये है हर भाषा से प्यारी
पुरखों की है ये सौगात
सब करते इसकी ही बात
अनपढ़ हो या शिक्षित कोई
इससे है परिचित हर कोई
हम सबकी है ये अभिलाषा
हिन्दी हो हम सबकी भाषा
सदा करें इसका सम्मान
इससे है भारत का मान
हिन्दी है सबकी पहचान
वाणी का शुभ वरदान हिन्दी
हम सबकी राष्ट्र भाषा हिन्दी

निर्मला, कक्षा 12
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भैरुपुरा,
सीलवानी, श्रीगंगानगर(राज.)

बादल

कब कहाँ से आ जाते बादल।
रिमझिम-रिमझिम वर्षा लाते बादल।
धरती को पावन कर जाते बादल।
मयूरों को नाच नचाते बादल।
यहाँ-वहाँ छा जाते बादल।
धरती से धन को उगलवाते बादल।
खेतों को हरा-भरा बनाते बादल।
ताल-तलैया भर जाते बादल।
जीवन में लहर बनकर आते बादल।
सब के मन को लुभाते बादल।

चाँदनी, कक्षा 12
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भैरुपुरा,
सीलवानी, श्रीगंगानगर(राज.)

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

रूबी, कक्षा 8, के.जी.बी.वी. अमरपुरा जाटान

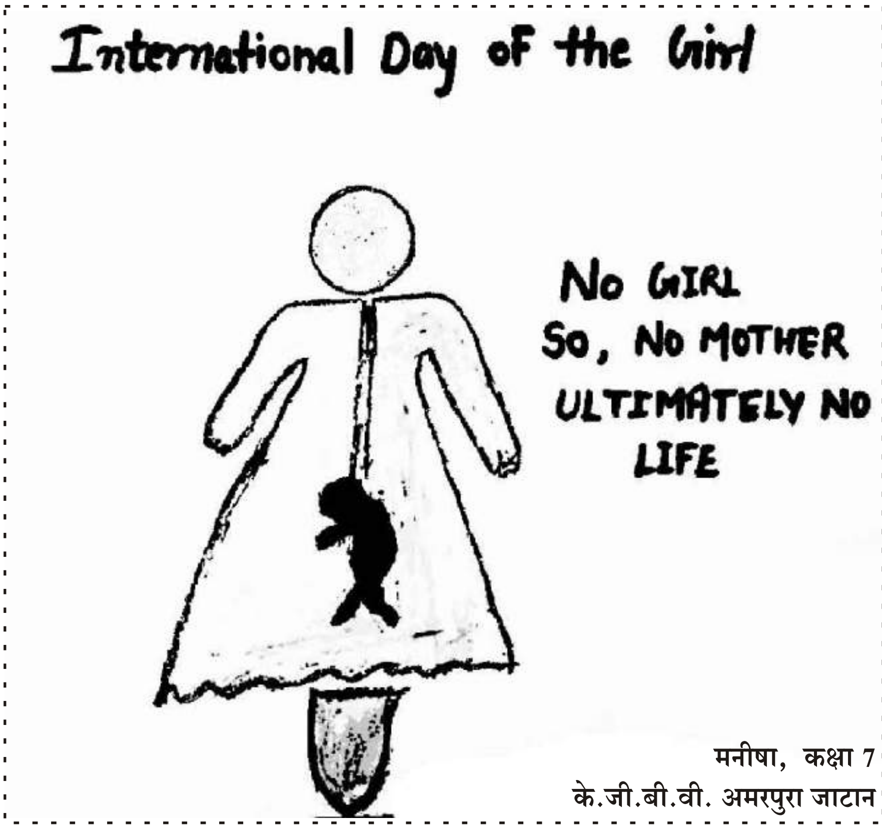

मनीषा, कक्षा 7
के.जी.बी.वी. अमरपुरा जाटान

जल है, तो कल है

जल है, तो कल है।
जल से सब जीवों का जीवन सफल है।।
जल है जीवन का आधार।
जो करता है सृष्टि का शृंगार।।
जल नहीं है तो जीवन में दुःख ही दुःख है।
जल से हमारे जीवन में सुख ही सुख है।।
जीवन के इस रस को अपवित्र न होने दो।
जल की इस पवित्र धारा को सर्वत्र बहने दो।।
स्वार्थ के वशीभूत होकर मानुष करता इसे मलिन है।
अपने इस तुच्छ कार्य में वह बेपरवाह लीन है।।
जल हमारे जीवन का सोना।
बचत करो इसकी नहीं बाद में पड़ेगा रोना।।
जल से सभी जीव बुझाते अपनी प्यास।
क्योंकि यही है सब जीवों के जीवन की आस।।
जल जीवन का सम्बल है।
जल है, तो कल है।।

हर्षिता शर्मा, कक्षा–5,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भादरा,
हनुमानगढ़ (राज.)

पुस्तक समीक्षा

बीज हूँ मैं...

लेखक : डॉ. दिलीप कुमार पारीक **प्रकाशक** : साहित्यागार चौड़ा रास्ता, जयपुर **संस्करण** : 2020 **पृष्ठ संख्या** : 128 **मूल्य** : ₹ 200

कागद के खेत पर उम्मीद के आखर– भोर में क्षितिज से उगते सूरज को कवियों ने नाना रूपों में देखा है और झील में, समंदर में, नदी की गोद में डूबते हुए सूरज को भी! पर पानी में सूरज उगाने का सपना नया है। पानी जीवन का, भावुकता का, प्रेम का प्रतीक है और जिजीविषा का, कर्मठता का, अपराजय बोध का, शिव संकल्प का। इसलिए सूरज का पानी है के बीच से उगाव को खुमारी और बेहोशी दोनों से जगाने का कारगर उपाय है–

'सूरज उग रहा पानी में कंकड़ फैंको जवानी में।'

डॉ. दिलीप कुमार पारीक का काव्य संग्रह 'बीज हूँ मैं....' इसी तरह के संकल्पों की समिधा और निर्विकल्प हो चुके विकल्पों की दुविधा के अनगिनत आह्वानों की अनुगूंज लिए हैं। डॉ. पारीक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिव (नागौर) में पीईईओ. प्रधानाचार्य हैं, शिक्षक संगठनों के सक्रिय स्वर हैं, पर इन सब के साथ शिक्षार्थी हैं। संग्रह की कविताओं में उनके कवि के साथ उक्त रूप भी अंगुली थामें साथ-साथ चलते हैं।

कवि जानता है लक्ष्य प्राप्ति सहज कहाँ है। ठोकर, लड़खड़ाहट, डगमगाहट राह का हिस्सा हैं पर–

'हीरे के खोजी को देखो, काली खान उतरता है
एक सुनहरे पत्थर की खातिर, कितना खोदा करता है।
सहज कहाँ है हीरा पाना, इन काली–काली रातों में
एक स्वप्न को पूरा करने रातों से सौदा करता है।
अद्भुत दृश्य काली खदान से, ले हीरे को निकल पड़ना।
कितनी सुंदर बात है ये, उठना और फिर चल पड़ना।।'

'समर्पण के गीत', 'फिर चल पड़ना है, 'है कौन?', 'जगा दूँ मैं', 'पथिक', 'अतुल आशा' जैसी एक के बाद एक कविताएँ पढ़ते जाइए, आप हारे हुए जीवन के संग्राम को फिर से लड़ने को तैयार हो जाएँगे। एक बात और है आज के वातावरण में बाहरी स्थितियाँ प्रायः पराजय बोध को गहरा करती हैं। कवि जानता है जब परिस्थितियाँ हौंसले तोड़ने को अकुला रही हों तब व्यक्ति का मनःसंकल्प ही काम देगा–

एक रात आई मुझसे कहा अब सुबह होगी नहीं
मैंने रखी आँखें खुली और सवेरा हो गया।

ऐसा नहीं कि कवि केवल कृत्रिम आशा में जीता है, जीवन के घात-प्रतिघात उसे विचलित नहीं करते 'हर दिन होता गहन अंधेरा, उस पर गूढ़ निशा का डेरा' से कवि अनजान नहीं पर सूरज का जाग्रत मानस पुत्र जुगनू' उसे नई दार्शनिक सूझ देता है–

'उगा हुआ है सूरज प्रतिपल, सोच मेरा खद्योत नहीं।
किसके दामन में दर्द नहीं, किस घर हुई मौत नहीं?'

'शिव होना आसान कहाँ', 'समय का पहिया', 'बुद्ध हुआ मैं', 'दीप तुम्हें जलते रहना है' जैसी रचनाएँ कवि के चिंतनशील मानस की प्रतिध्वनियाँ हैं।

संग्रह में कविताओं का एक सिलसिला है। 'कुछ साज हमको बजाने नहीं आए', 'सूखे हुए गुलाब', 'हमें अच्छा नहीं लगता', 'छोटी सी जिज्ञासा', 'तुम भी तो नहीं सोती हो', 'एक चाँद उगता है' जैसी रचनाएँ उदासी को गहराती हुई रतजगे देती हैं तो 'तीज', 'कुछ चेहरे', 'जब तुम आओगी', 'हिना', 'तुम बुलाना कभी चाय पर' जैसी रचनाएँ प्रेम के सुकुमार सपनों को आमंत्रण के पीले अक्षत बाँटती प्रतीत होती हैं।

डॉ. पारीक का कवि सही अर्थों में मानवीय रिश्तों का कवि है। संबंधों के अतिरिक्त-मधु अनुभव उसके माथे पर तिलक और सलवटों के रूप में उभरते हैं। वात्सल्य के नरम नन्हें हाथ सलवटों को सहलाते-बहलाते प्रतीत होते हैं। किसी एक संग्रह में पारिवारिक नातेदारी के इतने विविध धर्मी रूपों का संयोजन दुर्लभ है। रिश्तों के मधुर, मनहर रूपों पर कवि बार-बार मुग्ध हो उठता है। रिश्तों से निकली दुआएँ कवि के साथ पाठक को भी मोह लेती हैं–

'कभी सर बहलाते अम्मी के हाथ-सी
कभी छोटी सी रोटी बनाती बेटियों-सी
कभी छुट्टियों में घर आई बहिन-सी
कभी गले को तर करती ठंडे पानी सी'

रिश्तों की बुनी हुई डोर का तन हुई और ऐंठी हुई रस्सी में तब्दील होना कवि को बर्दाश्त नहीं होता 'जिन्होंने पुल तोड़े/बाँध बनाए/बहते हुए पानी को रोका/उन्हें नरक मिलना तय है.. 'क्योंकि कवि घर के बिखराव का मूल कारण पहचानता है–

'भरी थाली में बस अपना निवाला
पूरे घर में सिर्फ अपना कमरा
स्नानघर में अपना अलग साबुन
कमरे में अपनी अलग संदूक
और ढूँढ़ते रहते हैं अपना ताला।'

संबंधों के अंतर्बाह्य रूपों का दोहरापन उसे मंजूर नहीं। वह तो एकदम स्पष्टता का आग्रही है–

'प्यार हो तो प्यार हो, प्रहार हो तो प्रहार हो'

समूचे संग्रह में काव्य बिम्ब अपना अलग ही रंग बिखेरते हैं। सर सहलाती माँ, भारी बस्ता, बड़ी किताबें संभालता बचपन, इराक की घड़ी, तिलपट्टी, रिक्शा चलाता रिक्शेवाला, सूखी धरती पर पड़ते हल के साथ, जागती उम्मीदें, पीठ पर अनाज के बोरे ढोता मजदूर, आँगन की तुलसी, दीवारों पर कीलों के सहारे टँके चित्र, शाम को लौट आते पिताजी की आवाज, पेड़ों के नीचे सूखी मिट्टी, नमकीन आँसुओं पर घूमती अंगुलियाँ आदि बिम्ब कवि के आत्मिक विस्तार का प्रमाण है।

पुस्तक हर वर्ग के पाठक के आस्वाद के अनुकूल है। किशोर, नवयुवक और प्रौढ़ पाठक अलग-अलग कविताओं को पसंद करेंगे। मंच संचालन में रुचि रखने वाले पाठकों को तद्विषयक प्रचुर सामग्री उपलब्ध होगी।

प्रथम काव्य संकलन होकर भी इतना क्षितिज विस्तार सुखद है। 'बीज हूँ मैं...' अंकुर में सिमटे अश्वत्थ के आकार लेने की आश्वस्ति देता है। बहरहाल कविता की जमीन पर कवि ने उम्मीद के नए आखर छींट दिए हैं, बीज अँखुवा गए हैं, धरती हरितिमा ओढ़ने को आतुर है।

समीक्षक : **डॉ. हेमंत कुमार**
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय आमेट (राजसमंद)
मो: 9414483959

पळकती प्रीत

रचनाकार : डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित **प्रकाशक** : एकता प्रकाशन चूरू (राज.)-331001; **पैलो फाळ** : अगस्त, 2020; **पानां** : 128; **मोळ** : ₹ 300

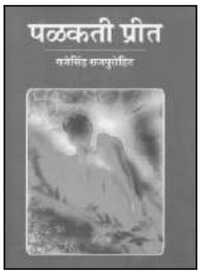

आलोच्य कृति का रचनाकार डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर रै राजस्थानी विभाग रा पूर्व विभागाध्यक्ष अर बाबा रामदेव शोधपीठ रा निदेशक है। आप युवा कवि, लेखक, समीक्षक, संपादक रै सागै माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान रै पाठ्यक्रम समिति रा संयोजक भी रैया। 'जस रा आखर', 'राजहंस', 'आत्मदर्शन', सुजाशतक, 'अंजस' आद कृतियां रौ लेखन अर संपादन रौ जसजोग काम आप करियौ। आप श्री राजस्थानी भासा मान्यता रा लूंठा समर्थक है अर मंचीय कविता रै सागै केई राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां-अकादमियां रै कार्यक्रमां री शोभा बढ़ाई है। आप आं कृति आदरजोग डॉ. अर्जुनदेव चारण नै समरपित करी।

'पळकती-प्रीत' कृति री विधा प्रबन्ध काव्य है। जिण में जूनै राजस्थान यानि आज रौ राजस्थान, गुजरात, सिंध (पाकिस्तान), मालवा तांई री लोकचावी, लोकमानस में रची बसी लोककथावां रौ काव्यमय बरणाव करियौ है जधा-जेठवा-ऊजळी, बाघौ-भारमली, सैणी-बीझाणंद, आभळ दे-खींवजी, नागजी-नागवन्ती, जलाल-बूबना, सोरठ-बींजौ, केहर-कंवळ, ढोला-मारू, नरबद-सुपियार, मूमल-मेंदरा ओद लोककथावां नै सबदां रूपी मोतियां में पोयर नूंवीं अंवेर कांनी जसजोग खेचळ करी। इण प्रेमकाव्य री खास बात है क प्रेमी-प्रेमिका मांय सूं जो प्रेम सारू घणौ तपयौ अरथात जिण रौ योगदान लूंठौ उणीज नै संबोधित कर र सम्बन्धित अठै रचनाकार रै इण प्राकृतिक न्याय रै सिद्धांत नै पौखता थका नुंवै जुग बोध रै सागै सरस, गेयात्मकता, लयात्मकता रौ समावेश अणूती सावचेती रै सागै करीज्यौ है।

तिणकौ व्है तो तोड़ लूं, प्रीत न तोड़ी जाय।
प्रीत लगी छूटै नहीं, ज्यां लग जीव न जाय।। (पृ.5)

प्रीत रौ रूप, रंग, सींव, मोल, मान कांई हुवै? तो अेक ही पडूतर मिळै-प्रीत अर प्रीत। वां प्रीत निस्छल भाव सूं उपजीयोड़ी हुवै। इण प्रीत री लोककथावां रौ अंत सुखान्त अर दुखान्त दोन्यूं भांत सूं हौवै पण सुखान्त कमती इज मिळै। प्रेम आदिकाल सूं आजलग हरेक नर-नारी मांय रळयोड़ो हुवै तो प्रेमकथावां हरेक मानखां रौ वाल्हौ विसय हुवै, जिणनै वो भणै, सुणै, लिखै, बिड़दावै। इण भांत प्रीत अलूणौ मानखै री कल्पना करणी ई कूड़ी है। हां, प्रीत रा रूप भांत आ प्रीत रा रूप जरूर हुवै ज्यां संजोग अर विजोग। छिंया तावड़ा री भांत आ प्रीत भी रंग बदळती रेवै। पण प्रीत में सेवट प्रेम री ही विजय हुवै चाहै मरणौ ई क्यूं नीं पड़ै। इण प्रबन्ध काव्य री रचना सूं रचनाकार डॉ. गजेसिंह जी नारायण सिंह जी भाटी अर सत्यप्रकाश जी जोशी री हरावळ पंगत मांय सामळ व्हैगा अर प्रबन्धकाव्य री परम्परा नै कायम राखण री ठावरी खेचळ करी। नारी सशक्तीकरण, स्वतंत्रता रै सागै माणस री मरजाद रा रंग इण काव्य में उकेरीज्या है।

1. नूवां विसय-नूंवी दीठ- रचनाकार अेक नूंवी दीठ, नूंवी सोच, नूंवी छीव, नूंवा बिंब, नूंवी रंगत नै बपरावता थका घणकरी कवितावां उण विसय सारू लिखी जिणरा जसगीत आज तांई सावळ तरियां उगाड़वा कोनी हुया। जठै सवाल खड़ौ करणौ हौ, आंगळी उठाणी ही वठै भी कवि री लेखनी सटीक, प्रसंग मुजब तीखी तछ चाली। सवाल अर वीं रौ ठावकौ पड़ूतर देवण री लकब सूं अै कवितावां साच रै सांचा में ढळयोड़ी है। जिण में प्रीत री प्रीत पौखीजै।

'झूंपड़ी' कविता में कवि झूंपड़ी नै जेठवा रै गढ़-कोटा सूं लूंठी बताय'र मिनखपणा री मरजाद नै थरपै-

माणस री मरजाद/सतकरम री साख
झूंपड़ी! अडिग अेकली। (पृ. 14)

'वडारण' कविता मै कवि भारमळी रै दरद चौवड़ै करता थका अेक वडारण री जिनगाणी रै जथारथ रै उगाड़वौ करता लिखै-

वडारण! छिण में/पग री पगरखी।
छिण में/मालिक रै माथा री पाग।। (पृ. 21-22)

'उदियौ' कविता में प्रीत रा जसगीत गावणियां री महत्ती भूमिका नै अंगेजता थका लिखै-

थूं बाचं / थारै गीतां में/म्हारै मन रौ साच/ थारै तंबूरै री तांण/म्हारी प्रीत, म्हारा रा प्राण। (पृ. 73)

'पातर' कविता में अेक कांनी पातर रै जियाजूण री अबखाया नै चौवड़ै करै तो दूजै कांनी नारी सशक्तीकरण अर स्वतंत्रता नै पौखता थका लिखै-

म्हैं मरियां ई नीं पैहरूं/नित नूंवा चूड़ा/ हरगिज नीं करूं/नित नूंवा खावंद/म्हारौ-तन, मन, जीवण अरपण/फ़गत-म्हारी प्रीत नै/म्हारा मनमीत नै।(पृ. 77)

'मारुणी' कविता में विरहणी जद कुंरजां सूं अरज करै'क तू म्हैने थारी पांख देवै तौ म्है म्हारै मनमीत ढोला सूं मिळ सकूं। पण कवि अठै अेक सवाल खड़ौ करै'क प्रीत सारू मांगणौ जायज कोनी। तू सत रै पाण प्रीत तांई पूग/

विरहणी! हुवै कांई मन रै माठ?
विजोगण सगळी जोवै बांठ।
राख थूं अंतस मांही आंख
मांगणी क्यूं कुरजां सूं पांख?
मांगण सूं मिटै, प्रीत रौ मान
प्रीत है, सत रौ स्वाभिमान। (पृ. 89-90)

2. प्रीत अर परम्परावां-प्रीत पराई- सामाजिक परम्परावां नै निभावता थका जद प्रीत री रीत मगसी पड़ण लागी तौ ऊजळी रौ जेठवा सूं अेक सवाल अर उणरौ पड़ूतर प्रीत नै जायज बतावै परम्परावां नै कूड़ी।

सवाल- कद हुयौ थारो ब्याव
कुण चेप्यां कूं कूं चावळ
कुण जड़िया प्रीत किंवाड़ (पृ. 13-14)
पड़ूतर- माणस परमारथ घरवास।
ऊजळी! उजळ प्रीत उजास।।

अठै ऊजळी सूं सवाल है'क तू किणरी परणी है तो पड़ूतर मिळै'क म्हारै बाबोसा री सीख है'क 'इण सकल संसार में मानवता सूं बड़ौ कोई धरम कोनी।'' उणनै मान'र म्है परमारथ अर नवजीवण देवण सारू जेठवा रै सागै घरवास करियौ। जद म्है मानवता सारू सैं समरपण कर सकूं तो हे जेठवा! तू प्रीत सारू अै कूड़ी परम्परावां क्यूं नीं छोड़ सकै-

नुगरा माणस! प्रीत रै जात नीं हुवै
प्रीत रै घात नीं हुवै

'मालवणी' कविता में आजलग पैली दफा और प्रसंग लिखिज्यौ'क माखणी ढोला री

पैली लुगाई ही अर तू दूजी। कवि री आ खेचळ ऊंडी दीठ री सामळ भरै–

मानेतण– थूं छैल–छबीली है,
पण साच रै झरोखै/पूंन रै परवाणै/
ठाडा मन सूं सोच–वा दूजी नीं, पैली। (पृ. 92)

इणीज भांत जलाल–बूबना, बींझौ–सोरठ, नरबद–सुपियार आद में भी परम्परां माथै प्रीत री जोत नै अंगेजै। सोरठ नै जद राव रूड़ सूं ब्याव करणौ पड़ै तो कवि माल–मत्ता, धन नै कूड़ौ बतावै अर प्रीत री साख नै सवाई–

धनगेलौ– कांई समझै? चांद रा रूप नै/ महकता पुहूप नै/जोबन रा भार नै/अंतस रा तार नै/ अधरां री प्यास नै/गजगामण री आस नै (पृ. 67)

बींझा री प्रीत नै साची बतावता थका लिखै– जद दीवौ खुद जळै/पतंगौ आपोआप बळै/ सोरठ! जळणौ जाणै/बींझौ! बळणौ जाणै। (पृ. 70) इणीज भांत रौ दाखळौ खींवजी–आभळ में भी मिळै जठै प्रीत रा पंछी अेक मेक हुयर रळ जावै– खींवजी! आभळ!!/आमळ! खिंवजी।। (पृ. 45)

3. कुदरत रौ बरणाव अर प्रीत रा रंग– प्रकृति रौ बरणाव प्रसंग मुजब सांगोपांग सांतरौ हुयौ है। चांद, कुदरत, दुकाळ, हेमाळो, ससियौ, भंवरौ आद कवितावां प्रकृति बरणाव सागै प्रीत रा रंग नै गैरौ करै। जलाल नै भंवरौ बताय'र प्रेम रूपी फूलां री सौरभ में गळीज'र मदमस्त कळी चूंटै तो कवि लिखै–

'फूलां रा ढिगला में फसग्यौ–मदछ कियौ भंवरौ।'

ससिया नै प्रतीक बणाय'र प्रकृति रै लोकमानस रौ बरणाव हुयौ तो 'कुदरत' कविता में कवि अेक कांनी प्रकृति रौ बरणाव करै तो दूजै कांनी इणीन कुदरत री चीजां नै प्रीत रा पंखेरुवां सारू सैण अर दुसमी भी बतावै। अकाळ अर राजस्थान अेक दूजां रा परयाय मानीजै। 'दुकाळ' कविता में कवि मायड़ भोम नै अणमोल बतावै अर मरुधरा साथै कुदरत रा अन्याय नै भी विगतवार उकेरै। अकाळ नै प्रीत रौ कारण थरपै ज्यां ढोला अर माखणी रौ ब्याव अकाळ रै संजोग सूं हुयौ बतावै–

क्यूं पूंगळ में काळ पड़ै?
अर क्यूं नरवर रै नेह जड़ै? (पृ. 86)

(4) पळकती प्रीत में राजस्थानी संस्कृति– इण प्रबन्ध काव्य में राजस्थानी संस्कृति रा सावठा सैनाण ठौड़–ठौड़ मिळै। कीं कवितावां ज्यां 'पणघट', 'खाण्डौ', 'ढाढ़ी', 'आरतौ', 'जल्लौ' आद। पणघट नेह नै सींचै तौ 'ढाढ़ी' उण प्रीत रा जसगीत रै माध्यम सूं प्रेमिका पणघट सूं ई परवाणै चढ़ै तो ढोला–मारवणी मिळण रौ निमित्त ढाढ़ी बणै। 'खाण्डौ' कोरी–मोरी तरवार नी हुय'र बिंदराजा री ठौड़ फेरा लेवै जिको प्रतीकात्मक रूप सूं बिंदराजा है तो तोरण री आरती रौ इधकौ ही महत्तब हुवै। पण जद डेरा निरखण जावै तौ 'जल्लौ' गीत गावीजै।

जल्ला रै, म्हैं तो राज रा डेरा निरखण आई रे।
म्हारी जोड़ी रा जलाल, मिरगानैणी रा भरतार।।

5. मरदा हंदी बात– मोट्यार खुद नै मरद केवै पण 'मोती' कविता में मरदा री जबरी पोल खोलतां लिखै–

रूपाळौ–मोती/पड़ियो मारग में/पण औ घड़ियौ कुण? तौ आगै घणी आखरी ओळी लिखै– कायर! कुमाणस!/झूठ रै जाळ में/साच सूं डरै/ फेर थूं मूंछ्यां माथै–

झूठौ ताव क्यूं धरै? (पृ. 21)

अै ओळया भदमळ रै पिता सारू लिखिजी है जिको जळमताई भरमल नै बारै फेंक देवै। तो दूजा कांनी मरदावाळी रीत निभावता खिंवसी री बोटी–बोटी हुय जावै। खींवौ–बोटी–बोटी बिखरग्यौ सूरां रौ रूखाळौ/ जनानौ बेस/प्रीत रै परवाणै। (पृ. 46)

प्रीत रौ पळकास री भाषा सरल, सरस, बोधगम्य रै सागै लयात्मकता अर अनुप्रास अलंकार रै जीवंत दाखळा री भांत है। जिणमें ध्वन्यात्मकता रौ सांगोपांग सखरौ बरणाव हुयौ ज्यां घड़ड़ड़ घड़ड़ड़ घड़, पड़ड़ड़ पड़ड़ड़ पड़। भरड़क, चरड़क आदि। लोक कहावतां ज्यां मन रै माठ नीं हुवै, अेक ई मूंग रा दो फाड़ आद बपराइजै तो विशेषणा तो बौहळता सागै मिलै ज्यां पीळा चावळ, अणियाळा नैण, मुळकतौ चांद, रातौ लाल, लीलो–छैर, रूपाळो मोती आद। टकसाली सबदावली रै सागै सांतरी लकब अर मठोठ में पोया अेक–अेक सबद मानौ रूपाळां मोतीईज है।

समीक्षकः **डॉ. रामरतन लटियाल**
प्राध्यापक (राजस्थानी साहित्य)
बी–5 गाँधी नगर विस्तार, मेड़ता, नागौर
(राज.)–341510
मो: 9783603087

दो घूंट पाणी

लेखक : डॉ. देवकिशन राजपुरोहित **प्रकाशक** : राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर **संस्करण** : 2019 **मूल्य** : ₹100 **पृष्ठ संख्या** : 80

डॉ. देवकिशन राजपुरोहित राजस्थानी रा नामवर लेखक है। सभी विद्या में सर्जन सतत रूप से करते हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, संस्मरण, कविता, व्यंग्य, यात्रा वृत्तान्त, निबंध जैसी विधाओं में खूब लेखन किया है। अपनी उम्र के समकक्ष उन्होंने पुस्तकें लिखकर साहित्य जगत में अलग कीर्तिमान स्थापित किया है। कहानी विधा में सृजन करते हुए राजपुरोहित ने वरजूड़ी रो तप, दंत कथावां, मौसर बन्द, बटीड़, म्हारी कहानियाँ सरीखी पुस्तकें लिखी है। उनके कहानी संग्रह की कड़ी में एक अध्याय और जुड़ा है 'दो घूंट पाणी।' देवकिशन राजपुरोहित की नवीन पुस्तक 'दो घूंट पाणी' में 19 कहानियाँ हैं, जो समाज में नित रोज घट रही घटनाओं से प्रेरित हैं। 'दो घूंट पाणी' लेखक की 71वीं कृति है। शीर्षक कहानी 'दो घूंट पाणी' पुस्तक की पहली कहानी है जिसमें लेखक ने पानी की क्या कीमत है, यह बताने की चेष्टा कहानी के मार्फत की है कि किस तरह गाँव का रहने वाला एक लड़का पानी के दो घूंट के लिए जीवन और मौत के बीच संघर्ष करता है। अगर बस में सवार एक वृद्ध से पानी के दो घूंट नहीं पीता तो उसकी जान निकल सकती थी। दो घूंट पानी से ही वो बचता है और आई.ए.एस. की परीक्षा पास कर कलक्टर बनता है और आई.ए.एस. बनने के बाद वो जल के लिए विशेष रूप से कार्य करता है। लेखक ने बहुत ही सरल शैली से ठेठ ग्रामीण शब्दों का प्रयोग करते हुए पानी के साथ अधिकारी के मन में गाँव एवं ग्रामीणों के प्रति मोह को दर्शाया है।

कहानी घेर घुमेर में लेखक ने यह बताने की कोशिश की है कि अगर व्यक्ति को अच्छा गुरु मिल जाए तो शिष्य की जिन्दगी उस मुकाम तक पहुँच जाती है, जिसे लोग ताउम्र याद करें। ऐसे गुरु और शिष्य के उदाहरण दूसरों को देते है जिनसे लोग प्रेरणा पाते हैं। जीवत खर्च एक ऐसी

कहानी लेखक ने रची है, जो समाज में व्याप्त कुप्रथा की एक और जहाँ पोल खोलती है,वहीं दूसरी और किसी के बहकावे में आकर जीवन पर कमाई गई दौलत को लुटाने को लेकर सावधान करती है।

छिनलाल कहानी है एक ऐसे ईमानदार कलक्टर की जो रिश्वत को लेना पाप व हराम समझता है। मगर उसी कलक्टर की धर्मपत्नी रिश्वत लेकर कलक्टर पति से वो काम करवा लेती है। जब पति को ज्ञात होता है तो वो नशे में चूर होकर सुसाइड नोट में अपनी पत्नी का नाम लिखकर आत्महत्या कर लेता है।

घर बदर में लेखक ने बताया है कि आज के दौर में हर आदमी को सम्भल कर रहना आवश्यक है। अरबपति व्यक्ति को भी जब जीते जी उनकी औलाद घर-बदर कर सकती है। इसलिए अपना जीवन यापन भविष्य में कैसे होगा, यह सोचकर ही अपनी सम्पत्ति औलाद के नाम करनी चाहिए। 'धोला में धूड़' कहानी आज के नेताओं पर तीखा कटाक्ष है। 'बैंकूठी' में व्यक्ति के मौत के बाद स्वर्ग-नर्क में किया जाने वाला हिसाब किताब है। 'जीव' में लेखक बताने की कोशिश करता है कि परिवार के लिए अपना सर्वस्व समर्पण करने वाली स्त्री मौत के बाद भी किस तरह परिवार पर आने वाली विपदाओं से लड़कर परिवार को बचाने का प्रयास करती है। 'इचरज' कहानी आश्चर्य इसलिए करवाती है कि कल तक जिनके नाम के डंके बजते थे, आज एक रोटी को मोहताज हो गए, वो भी चार-चार बेटों के होते हुए। गाँव छोड़, शहर आए, शहर का घर छूटा, समाज के नोहरे में रहे, मगर वहाँ कब तक रहते-आखिर घर पहुँचे और स्वर्ग सिधार गए। 'सासरा रो हरक' कहानी में मायके में बैठी पत्नी को लाने के लिए पति के उमंग उल्लास के साथ ही समाज में व्याप्त सगुन-अपशगुन को दर्शाया गया है। अपशकुन पर अपशकुन होने के बाद भी घर से निकले पति के ससुराल तक पहुँचने के दौरान होने वाली घटनाओं को करीने से लेखक ने परोसा है और यह कहने की चेष्टा भी की है कि उत्साह में लिया गया फैसला जानलेवा भी साबित हो सकता है।

माँ-बाप अपनी औलाद के खातिर अपना सर्वस्व कुर्बान कर देते हैं, ताकि सन्तान पढ़-लिख कर अच्छी नौकरी कर सके, धरम डाड कहानी भी ऐसी माँ की है जिन्होंने अपने बेटे की पढ़ाई के लिए गरीब परिवार की होते हुए भी पहले जेवर बेचे, फिर जमीन बेची ताकि बेटा डॉक्टर बने, वो डॉक्टर बना, विदेश गया, वही शादी रचा ली, मगर माँ को भूल गया, वो तो भला हो उसकी पत्नी का जो उसे घूमने के लिए भारत ले आई। जब वो अपने घर आया तो माँ का बिस्तर पर कंकाल ही था। ना जाने कब मर गयी थी माँ। माँ चल बसी और बीवी ने भी यह कहकर साथ छोड़ दिया कि तुम जब जन्म देने वाली माँ के नहीं हुए तो मेरे क्या होंगे।

इसी तरह धर्म भाई, मिनखी चारो, टपरी, गुजारो भत्तों, वेला वेगी अर बातां रैगी, गिरस्थी रो जंजाल, बोट और माँ रो कागद जैसी कहानियों को लेखक ने रचा है। लेखक की कहानियों के विषय वास्तव में मन को झकझोर देते हैं। क्योंकि कहानियों का चित्रण मार्मिक है। कुछ कहानियों को पढ़कर मन भावुक होने के साथ ही आँखे सजल हो जाती है। वो इसलिए कि समाज आज किस दिशा में जा रहा है, क्या दशा हो गयी है वर्तमान में समाज की।

लेखक ने अपनी कहानियों में मुहावरे, लोकोक्तियों एवं कहावतों का भी जमकर प्रयोग किया है जो सीधे प्रहार करते प्रतीत होते हैं, कुल मिलाकर कहानी संग्रह पठनीय है।

प्रूफ संशोधन किया गया है, मगर अभी भी गलतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं, हो सकता है कि प्रूफ देखने के बाद टाईपिस्ट ने उसे दुरुस्त ना किया हो।

समीक्षकः **बी.के. व्यास सागर**
वरिष्ठ सहायक
सी.बी.ई.ओ. मेड़ता सिटी,
नागौर (राज.)
मोः 9414735065

डिंगल रसावळ

लेखक : दीपसिंह भाटी 'दीप' रणधा; **प्रकाशक** : रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर ; **मूल्य** : 250 ; **पृष्ठ संख्या** : ₹ 128 ; **संस्करण** : 2019

आज रै अति बौद्धिक अर साव उपयोगितावादी जुग में जठै लोक-परम्परावां नैं रुढ़ियाँ रो नाम देय कबाड़ भेळै राळण रो चाळो चालै, उण टेम मायड़भाषा राजस्थानी रै डिंगळ

काव्यरूप नैं परोटतां आपरी प्रतिभा सूं सुधी पाठकां रै मन नैं बांधण री खिमता राखण वाळै कवि दीपसिंह भाटी 'दीप' रणधा री सद्य-प्रकाशित राजस्थानी काव्यपोथी 'डिंगळ रसावळ' इण भाँत री कृति है, जकी नवै रंग रै नूर में प्राचीन परम्परावां नैं पोखै। कवि दीपसिंह भाटी डिंगळ काव्य परम्परा सूं जाझा जुड्या थका कवेसर है, जका डिंगळ रचनावां रै सिरजण अर वांरै प्रपाठ करण री रीत-नीत रा जाणीजाण है।

डिंगल रसावळ सिरैनाम वालै यूट्यूब चैनल सूं आप राजस्थानी साहित्य री ख्यातनाम रचनावां, गौरवगाथावां अर अंजसजोग प्रसंगां नैं घणै प्रभावशाली ढंग सूं प्रस्तुत करतां सुधी पाठकां रै दिल में ठावी ठौड़ बणाई है। आपरी पोथी 'डिंगळ रसावळ' में अध्यात्म रो उजास, अपणत्व रो आभास, वीतर अर कीरत रा कमठाण, महापुरुषां रा गुण-बखाण, रूंखां री रखवाळी रो भाव अर सनातनी संस्कारां रो सरसाव सरबाळै दीखै। कवि आपरी रचनावां नैं आराधना, सूरवीर-सुजस, महापुरुषां रा बखाण, कुदरत री कोख अर हेत रो हेलो आं पाँच भागां में परोटता आपरै कवि-कर्म रो वाल्हो निभाव कियो है। इण पोथी री रचनावां पढ़ियां पाठक कवि दीपसिंह भाटी री सावचेती, समझदारी, जिम्मेदारी अर नेकनियति री पूरी पिछाण कर सकै। आ पोथी कवि भाटी रै व्यक्तित्व रा विविध आयाम आपणै सामी राखै। दैवीय वंदना-आराधना सूं जुड़ी रचनावां वांरै आस्थावान भक्त रूप नैं सामी लावै तो सूरमावां रै पौरुष रो बखाण वांरै काव्यात्मक ओज री पिछाण करावै। महापुरुषां रै अनुकरणीय कामां नैं याद करतां वांरै प्रति अंतस रा उद्‌गार प्रकट करण री ठौड़ कवि रो कृतज्ञ मिनखापो उभार पावै तो कुदरत री कोख में वो मरुधरा रो करमठ किरसाण बण आपणै सामी आय ऊभै। इण पोथी नैं जुगबोध सूं जोड'र कवि री लेखणी री मठोड-मरोड़ नैं आज री पीढ़ी रै सामी लावण वाळो खंड है 'हेत रो हेलो।' 'हेत रो हेलो' में आई कवितावां कवि भाटी री शिक्षकीय चेतना नैं पुष्ट करै।

डिंगळ रसावळ पोथी में कवि राजस्थानी रै परम्परागत गीतां अर छंदा यथा दूहा, छप्पय, कवित्त, त्रिभंगी, सारसी, रोमकंद, झूलणा, गीत साणोर रै साथै ई आधुनिक काव्य रूपां नैं ई परोट्या है। त्रिभंगी छंद में गिरधर गोपाळ री आराधना वाळै इण दाखलै में डिंगळ काव्य रै नाद-सौंदर्य री छटा देखणजोग है-

गिरधर गोविंदा, दीनन बंदा, भीड़ भगंदा, भगवंदा।
काटे जम फंदा, धरम धरंदा, सकल सुगंधा, समरंदा।
कवि 'दीप' कथंदा, त्रिभंग छंदा, राम रटंदा, रणकारी।
तूं ही त्रिपुरारी, संत सहारी, कुंज बिहारी, किलतारी।।

(श्री कृष्ण रूपक, पृ. 20)

कवि दीपसिंह भाटी री कवितावां में मातभोम रै प्रति श्रद्धा री राग अर राष्ट्रनुराग रा वाह्ळा बहुता दीखै। बाहड़मेर री वीरधरा रो सुजस बखाणती रोमकंद छंद री अै ओळियां कवि री मातभोम रै प्रति श्रद्धा रै साथै ऊंडी अनुभव दीठ री ई साख भरै-

भड़ जोध जुझार दतार भलाभल,
तेज मुनेसर ताप तपै।
कवियांण कथै नित वीरत कीरत,
थाट जुगोजुग थांन थपै।
परचायक ईसर नाम इळा पर,
साधक संत संसार सुणै।
धन रंग बढांण धरा रज धाकड़,
जोध समाजिक संत जणै।।

(बाहड़मेर बखांण, पृ. 81)

कवि श्री भाटी नैं लोक देवी-देवतावां, दातारां, जुझारां अर संतां, भगतां रै प्रति आस्था विरासत में मिली। बाळपणै सूं ई वांनै संगत रै सार सूं साहित्यिक संस्कार मिल्या। ओ ई कारण है कै वै डिंगळ रा छंदां रो वाल्हो प्रपाठ प्रस्तुत करै तो आज री टेम में डिंगळ छंदां में आपरै मन रा भावां नैं सबदां रै सांचै ढाळण री जुगत करै। कवि इण पोथी में भगवान कृष्ण, आवड़ माँ स्वांगियाजी, करणी माताजी, माजीसा भटियाणी रै साथै ही भगत कवि ईसरदासजी बारहठ, जुझार, पनराजजी, जुझार आलाजी, वीर बीकांसी भाटी, संत मोहनपुरी जी, ओम बन्ना, सिद्ध खेमा बाबा अर तारतरा मठ री सिद्ध परंपरा री वंदणा कर आपरी आस्था रो दीवट संचन्नण कियो है। आं सब चरित्रां री डिंगळ री परंपरागत शैली में स्तुति कर कवि आज री डिंगळ काव्यधारा में आपरी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। इणीं गत हिंदुस्तान री शौर्य परंपरा में उल्लेखणजोग सूरमावां री कड़ी में हिंदुआ सूरज महाराणा प्रताप रै साथै आजाद भारत में अनाम उत्सर्ग होवणियां शहीदां नैं याद करतां कवि अमर शहीद पूनमसिंह भाटी, शौर्यचक्र धारक शहीद कानसिंह भाटी, अमर शहीद प्रभुसिंह राठौड़, शहीद राजेन्द्रसिंह भाटी अर शहीद उगमसिंह राठौड़ री वीरत रा वारणा लिया है। कवि आज रै समाज नैं प्रेरणा देवणियां महापुरुषां रै सुकृत्यां नैं याद राखण री साहित्यिक परंपरा रो निर्वहन करतां डॉ. नारायणसिंह भाटी, तनसिंहजी चौहान, संत तुलसारामजी जांगिड, किशोरसिंहजी भाटी, केशरसिंहजी राठौड़ रै सद-करमां माथै आपरी कलम चलाई है।

पोथी रा अंतिम दो भाग साहित्यिक दीठ सूं वाल्ही विरोळ रा अधिकारी है-कुदरत री कोख अर हेत रो हेलो। कुदरत री कोख में राजस्थानी काव्य री प्रकृति-चित्रण परंपरा में कवि आपरी हाजरी मांडी है। आधुनिक राजस्थानी प्रकृति काव्य रै रचयिता कवियां में चंद्रसिंह बिरकाळी, नानूराम संस्कर्ता, नारायणसिंह भाटी, नारायणसिंह शिवाकर, लक्ष्मणदान कविया खेण आद रा काव्य उल्लेखण जोग है, उण कड़ी में कवि श्री भाटी री ओरण इकतीसी, बसंत बहार, बरसाळो, रुत बरसाळा रंग अर दीवाळी आद कवितावां आदर री अधिकारी लागै। 'हेत रो हेलो' में कवि आज रा ताजा विषयां नैं छूवण री खेंचल करी है। इणमें यातायात नियमां री जाणकारी अर पालन, मतदान रो महताऊपणो, जवानी री जोत, आजादी रो अरथ, जीवण मूल्यां री जुगत आद विषयां पर ओपती जाणकारी देवण रै साथै जीवण-जगत सूं जुड़ी उपयोगी बातां रा बखाण किया है।

सड़क सुरक्षा री दीठ सूं कवि री अै ओळियां कितरी सहज अर सटीक है, जकी आम आदमी नैं हेलमेट लगावण, सीट-बेल्ट बांधण, सड़क पर डावै पासै चालण, रफ्तार नैं काबू में राखण आद यातायात नियमां सूं रूबरू करावती 'सावधानी हटी अर दुर्घटना घटी' रो संदेसो देवै-

हलमेट झुकाय खड़ो दुपवाहन,
सीट-पटोज हमेस सजो।
डग डावय हाथ चलो नित डागर,
ट्राफिक रूल मती टपजो।
लगातार वहो पण राखण लीमिट,
बुद्धियमान समान बनो।
रफतार संभाळ चलो सड़कां पर,
मानुष जूण अमोल मनो।।

(सड़क संभाळ सप्तक, पृ. 103)

कवि मिनखपणै री रीत-नीत समझावतां 'सीख पचीसी' काव्य में समझावै कै मिनख सारू सबसूं अमोल धन उणरो चरित्र हुवै। चरित्र पर काळख लाग्यां पछै, बाकी सब सराजाम बेकार बण जावै। परनारी सूं प्रीत करणियां री दुरगत नैं कवि जाणै, इण कारण वो आपरै वाल्हां नैं परनारी वाळै पाप सूं बचण री सलाह देवतां समझावै-

परनारी सूं प्रीत, सपनैं में नीं सोचणी।
इणसूं बडी अनीत, दुनियां में नीं दीपिया।।

(सीख पचीसी पृ. 117)

सार रूप में कवि श्री दीपसिंह भाटी 'दीप' रणधा री 'डिंगळ रसावळ' पोथी प्राचीन अर नवीन रो वाल्हो संगम है, जिणमें वरण्यं-विषयां अर बरणाव-शैली दोनूं दीठ सूं नवै अर पुराणै रो सांतरो मेळ हुयो है। डिंगळ रा परंपरागत छंदां अर गीता में साव आज रा सड़क सुरक्षा जैड़ा विषय नैं आपरी रचनावां रा आधार बणाय कवि आपरी अवलोकन दीठ रा प्रमाण प्रस्तुत करै। कवि श्री भाटी री आ पोथी आधुनिक राजस्थानी छंदोबद्ध काव्यधारा में आपरो ओपतो मुकाम बणावैली, ओ म्हनैं भरोसो है। अेक निवेदन श्री भाटी सूं अवस करणो चाऊं अर वो ओ है कै पोथी में वर्तनी री दीठ सूं कीं गळतियां रैयगी है। पोथी रो प्रूफ ठीक ढंग सूं नीं पढ़ण रै कारण ओ अशुद्धियाँ रैयगी, जकी सुधी पाठक नैं अखरै। इण पोथी रो दूजो संस्करण छपावती वेळा विद्वान कवेसर म्हारी अरज नैं ध्यान में राखतां आं सब त्रुटियां रो सुधार करैला, आ भोळावण देवणी चाऊं क्यूंकै 'जड़िया लोह जड़ाव, रतन न फाबै राजिया।' कवि श्री दीपसिंह भाटी 'दीप' रणधा नैं वांरी 'डिंगळ रसावळ' पोथी सारू मोकळी-मोकळी बधाई अर मंगल कामनावां।

समीक्षकः **डॉ. गजादान चारण**
'शक्तिसुत' नाथूसर
सह आचार्य (हिन्दी विभाग)
'साकेत' केशव कॉलोनी स्टेशन रोड, डीडवाना,
नागौर (राज.)-341303
मो: 9414587319

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

स्काउट गाइड ने आमजन में किए मास्क वितरित

डूँगरपुर– मंगलवार को स्काउट गाइड ने सिन्टेक्स चौराया और नवाडेरा क्षेत्र में नो मास्क –नो एन्ट्री जन आन्दोलन कार्यक्रम के तहत आमजन को मास्क एवं स्टीकर वितरित कर मास्क लगाने के लिए प्रेरित किया। स्काउट प्रभारी नानालाल अहारी ने बताया कि राज्य सरकार, जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग के दिशा–निर्देश में नो मास्क –नो एन्ट्री जन आन्दोलन कार्यक्रम में चौथे दिन सिन्टेक्स चौराहा और नवाडेरा क्षेत्र में मास्क एवं स्टीकर वितरित किया गया। इस अवसर पर नगर परिषद आयुक्त श्री नरपतसिंह राजपुरोहित स्वयं नगर परिषद दल के साथ पहुँचे स्काउट गाइड के साथ मिलकर शहरी क्षेत्र में बिना मास्क प्रवेश करने वाले नागरिकों को मास्क वितरित किए तथा वाहनों पर स्ट्रीकर लगा कर और मास्क का महत्त्व बताते हुए परिवार में सभी सदस्यो को मास्क लगाने के लिए प्रेरित किया। सी.ओ. स्काउट सवाईसिंह ने बताया कि नो मास्क –नो एन्ट्री व कॉरोना जागरूकता बचाव के पेम्पलेट स्टीकर मास्क नगर परिषद डूँगरपुर एवं सूचना एवं जन सम्पर्क कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराए हैं। जन आन्दोलन में स्काउट मास्टर श्री ललित कुमार बरण्डा, लीलाराम गामोठ, भैरूलाल कटारा, धर्मेन्द्र कुमार अहारी, रामलाल अहारी, रवि प्रकाश मीणा, भरत रोत, विमर्श सोमपुरा, श्रीमती सुशीला डामोर, शारदा डामोर, राखी गडाह, निकिता कटारा, दीपिका, करिश्मा अहारी रोवर रेंजर की सेवाएँ सराहनीय रहीं।

स्काउट प्रभारी द्वारा रक्तदान

राजसमंद– राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मावा का गुडा पंचायत समिति कुंभलगढ़, राजसमंद के स्काउट प्रभारी विक्रम सिंह शेखावत ने अंतरराष्ट्रीय शिक्षक दिवस पर राजकीय चिकित्सालय राजसमंद में 8वीं बार रक्तदान किया। कोरोना महामारी के दौरान दूसरी बार रक्तदान किया गया। स्काउट गाइड आंदोलन के माध्यम से स्काउट प्रभारी द्वारा लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया गया। विगत वर्ष विद्यालय में रक्तदान शिविर आयोजित कर उमरवास पंचायत के लोगों और अध्यापकों को जाग्रत कर शिविर में 26 यूनिट रक्तदान किया गया।

कुंचौली स्कूल में स्काउट्स ने नो मास्क - नो एंट्री जागरूकता अभियान की शुरुआत की

राजसमंद– राजसमंद परिक्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंचौली, स्थानीय संघ– कुंभलगढ़ में राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के तहत विद्यालय में 'नो मास्क– नो एंट्री' अभियान की शुरुआत की। प्रधानाचार्या मीनाक्षी पानेरी ने बताया कि स्थानीय विद्यालय के शारीरिक शिक्षक व सहायक लीडर ट्रेनर स्काउट राकेश टांक के मार्गदर्शन में कोरोना महामारी के बढ़ते प्रकोप से बचाव के लिए राज्य सरकार की गाइडलाइन के अनुसार उक्त अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर प्रधानाचार्या ने सभी अध्यापक, अध्यापिका व स्काउट्स को मास्क लगाने व दूसरों को मास्क पहनने के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। सहायक लीडर ट्रेनर (स्काउट) राकेश टांक ने वर्तमान समय में बढ़ते संक्रमण और सरकार की एडवाइजरी को गंभीरता से समझाते हुए बताया कि मास्क जिंदगी का हिस्सा है, मास्क को हथियार बनाकर ही स्वस्थ रहा जा सकता है। कोरोना काल में संक्रमण से बचाव के लिए मास्क ही वैक्सीन है सभी सुरक्षित रह कर ही कोरोना से जंग जीत सकते हैं, यह हम सबकी जिम्मेदारी है। विद्यालय के मेन गेट और परिसर में नो मास्क– नो एंट्री के पोस्टर लगाने में गोविंद कुमार सैनी, मोहन जाखड़, सोहन लाल रेगर, सहायक लीडर ट्रेनर व शारीरिक शिक्षक राकेश टांक, सहायक स्काउटर दल्लाराम भील, गणेश लाल मेघवाल, गिरजा शंकर भील, भगवतीलाल आमेटा, पुष्पा शर्मा, राजकुमार मीणा, अण्दा राम भील, रूप लाल खटीक, स्काउट शंकर सिंह कुम्भावत, धुल चन्द्र भील, दिनेश भील, जवेरी लाल भील व रविना प्रजापत ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया।

नो मास्क नो एंट्री जनजागरण अभियान से आमजन को किया जागरूक

बीकानेर: राज्य सरकार के सामाजिक जागरूकता अभियान के तहत

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर के प्रधानाचार्य रूपेंद्रसिंह शेखावत के नेतृत्व में आमजन को कोविड–19 के खिलाफ जनजागरण अभियान नो मास्क नो एंट्री से जागरूक किया। कार्यक्रम अधिकारी मोहरसिंह सलावद ने सभी ग्रामीण जन, अभिभावक एवं छात्र घर से बाहर आवश्यक कार्य होने पर निकलें एवं मास्क का उपयोग अवश्य करें एवं खुद का एवं परिवार व गाँव का कोविड–19 के प्रभाव से बचाव करें। सलावद ने आमजन से कहा कि सरकार एवं प्रशासन इतने प्रयास कर रहे हैं इसलिए हम सबकी जिम्मेदारी बनती है कि हम निर्देशों की पालना करें एवं सुरक्षित रहें। आमजन को जागरूक करने वालों में प्रधानाचार्य रूपेंद्र सिंह शेखावत, व्याख्याता गोवर्धन लाल, कार्यक्रम अधिकारी मोहरसिंह सलावद, गीता कंवर, गीता राजपुरोहित, अडसी कंवर, रण छोड़ सिंह सोढ़ा, तेजपाल मेघवाल, बहादुरसिंह राठौड़, दयाराम, प्रेमसिंह, गणेशाराम आदि मौजूद रहे।

विद्यालय स्टाफ ने प्रधानाचार्य को सम्मानस्वरूप मोटरसाइकिल भेंट की

चूरू– बीदासर के शहीद राइफलमैन इन्द्रसिंह रा.उ.मा.वि बम्बू से यह शानदार मिसाल देखने को मिली। जहाँ विद्यालय स्टाफ द्वारा अपने प्रधानाचार्य सुभाष चन्द्र शीला को सम्मान में मोटरसाइकिल भेंट की। दरअसल बम्बू स्कूल शाला मैनेजमेंट में जिले के अग्रणी विद्यालयों में से एक है जहाँ के स्टाफ की कर्मण्यता, कुशलता व अनुशासन की मिसाल दी जाती है। प्रधानाचार्य सुभाषचंद्र के पदस्थापन से स्टाफ ने उनके साथ मिलकर इस विद्यालय को हर क्षेत्र जैसे इन्फ्रास्ट्रक्चर, कक्षा–कक्ष निर्माण, टिन शैड निर्माण, टांके निर्माण, कोविड–19 में क्वारन्टाइन सेंटर पर ड्यूटी, 80G सर्टिफिकेट, रंग–रोगन, उ.मा. परीक्षा टॉपर–92%, मा. परीक्षा टॉपर–91%, विद्यार्थी नामांकन (715), भामाशाह (स्टाफ सहयोग से 250 टाई बेल्ट्स, वाटर कूलर, 370 बच्चों को स्वेटर वितरण, 20 पंखे, स्टाफ द्वारा) तथा सरपंच व भामाशाह भंवरसिंह ज्याणी द्वारा व्यक्तिगत सहयोग (वाक्पीठ में सहयोग, RO, 400 बच्चों को टाई बेल्ट्स, म्यूजिक सेट), ब्लॉक स्तरीय वाक्पीठ आयोजन, बोर्ड परीक्षा केन्द्र आवंटन, शैक्षिक व सह–शैक्षिक नवाचार, प्रार्थना सभा आयोजन में नवाचार, वैकल्पिक ड्रेस कोड, सामान्य ज्ञान मासिक प्रश्नोत्तरी, NMMS छात्रवृत्ति में चयन, फुटबॉल व खो–खो में राज्य स्तरीय चयन, जल–संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त गाँव, डिजिटल लर्निंग आदि के सहयोग से विद्यालय को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। प्रधानाचार्य के महात्मा गाँधी विद्यालय बैरासर में स्थानान्तरण से स्टाफ मायूस था एवं वापसी हेतु प्रयास किए परन्तु ब्लॉक के एकमात्र अंग्रेजी माध्यम विद्यालय हेतु त्याग किया। विद्यालय को हर क्षेत्र में प्रतिष्ठित करने में व्याख्याता पूर्णाराम सेलवाल की प्रेरणा, सुमन, स्वनंदा महेन, वरिष्ठ अध्यापक सुबेसिंह, अनिता ढाका, अनिल कुमार, शुभकरण बिस्सु, सुशील कुमार, बजरंग लाल पी.टी.आई., अध्यापक नानूराम मेघवाल, राजकुमार यादव, रामकुमार, सतीश भाटी, नरेन्द्र कुमार मीणा, सुनील कुमार, सुरेन्द्र मीणा, मुकेश बालाण, जगदीप, रामनारायण ज्याणी, कुलदीप सिंहमार व सोहनलाल का बहुत ही सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य पूर्णाराम सेलवाल ने की और मंच का संचालन अध्यापक राजकुमार ने किया।

पर्यावरण संरक्षण हेतु विद्यालय में नवाचार

जोधपुर– पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने, विद्यालय परिवार को साफ–सुथरा रखने, परिसर को पॉलीथिन मुक्त करने तथा पेड़–पौधों की देखभाल के लिए स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल, फलोदी (जोधपुर) में बालकों का एक दल बनाया गया है। पेड़ों के रक्षार्थ अपना सिर कटा देने वाली वीरांगना 'अमृता देवी' के नाम पर इस दल का नामकरण 'अमृता देवी हरित दल' रखा गया है। इस दल के सभी सदस्य शिक्षण कालांशों के अतिरिक्त समय में पर्यावरण संरक्षण का कार्य करेंगे साथ ही भारत–सरकार व राज्य–सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों जैसे– 'स्वच्छ भारत अभियान', 'प्लास्टिक मुक्त भारत' इत्यादि में अपना सहयोग देंगे। इस दल के सदस्यों को विशेष टी–शर्ट बनाकर भेंट की गई, जो सप्ताह में एक बार शनिवार को पहनकर आएँगे और मध्याह्न पश्चात विद्यालय परिसर की साफ–सफाई पेड़–पौधों को पानी देना व अन्य कार्य करेंगे। महीने में एक बार 'अमावस्या' के दिन मीटिंग का आयोजन होगा जिसमें पूर्ण हुए एक माह के कार्यों का मूल्यांकन व आगामी माह के कार्यों का लक्ष्य निर्धारण किया जाएगा।

इस दल के सदस्य विद्यालय के छात्र और शिक्षक भी शामिल हो सकते हैं। ये पर्यावरण मित्र के रूप में कार्य करेंगे। साथ ही दल विद्यार्थियों के मित्र के रूप में भी कार्य करेंगे उन्हें पॉलीथिन पैक खाद्य सामग्री का उपयोग नहीं करने, प्लास्टिक के स्थान पर स्टील टिफिन का उपयोग करने, खाने को चमकीले एल्युमीनियम कागज में नहीं लपेटने हेतु प्रोत्साहित किया जाएगा। बिजली व पानी को व्यर्थ खर्च नहीं करने की आदत विकसित की जाएगी। उनके जन्मदिन पर एक पौधा लगाने अथवा किसी एक पौधे को गोद लेने की परंपरा शुरू करना तथा अन्य ऐसी कई आदतें विकसित करने

का प्रसार किया जाएगा जैसे जरूरत वाले बच्चों को शिक्षण सामग्री, पुराने कपड़े, खिलौने भेंट करना, गरीबों के लिए भलाई की दीवार शुरू करना इत्यादि। यदि सरकारी स्तर पर इस नवाचार को मान्यता मिल जाए जैसे पूर्व में N.S.S. जैसे कार्यक्रम चलते थे इसी प्रकार स्काउटिंग, रावर, एन.सी.सी. की तरह सह-शैक्षणिक गतिविधियों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है। स्थानीय स्तर पर एक योजना का प्रारूप तैयार किया गया है जिसके तहत यह नवाचार सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में स्वेच्छा से लागू करने का प्रयास किया जाएगा। समयानुसार विभिन्न विद्यालयों की प्रार्थना सभा या शनिवारीय सभा में उपस्थित होकर इस नवाचार के बारे में बताया जाएगा। बालकों में कार्य रुचि जाग्रत करने हेतु प्रत्येक विद्यालय में टॉप फाइव (सर्वश्रेष्ठ पाँच) का चयन करके पारितोषिक व प्रमाण पत्र दिया जाएगा तथा भामाशाह के माध्यम से अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने का भी प्रयास किया जाएगा।

वृक्षारोपण कार्यक्रम मनाया गया।

झालावाड़- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बेड़ला में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ग्राम पंचायत बर्डिया बिरजी के सरपंच प्रतिनिधि श्री धीरप सिंह द्वारा शुभारंभ किया गया। पौधारोपण के लिए गाँव के भामाशाहों एवं विद्यालय के समस्त स्टाफ द्वारा दिए गए आर्थिक सहयोग से 1300 वर्गफीट की जाली लगाई गई व 100 पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री मोहनलाल शर्मा वरिष्ठ अध्यापक व पर्यावरण प्रभारी श्री कुंजबिहारी निगम द्वारा किया गया। आभार प्रधानाचार्य श्री सत्यनारायण सुमन द्वारा किया गया।

शाला में अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया

टोंक- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लवादर, टोंक में अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया। इस अवसर पर 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' विषय पर शिक्षकों द्वारा प्रकाश डाला गया और वर्तमान में बेटियों के समक्ष आ रही चुनौतियों व उनका मुकाबला करने की प्रेरणा दी गई। राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भागीदारी पर प्रधानाचार्य श्री जयकुमार जैन ने प्रकाश डाला। अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने में शाला स्टाफ श्री नरेन्द्र सिंह हाड़ा (व्याख्याता), श्री मो. असलम व्याख्याता, श्री महेश गौतम व्याख्याता एवं स्टाफ सचिव श्री कन्हैयालाल जैने एवं अध्यापिका परवीन बानो, शारीरिक शिक्षक श्री अंकित जांगिड़ एवं श्रीमती सुमन यादव कनिष्ठ लिपिक का विशेष सराहनीय योगदान रहा। अंत में प्रधानाचार्य सर्वश्री जैन ने समस्त उपस्थित शिक्षिकाओं एवं बालिकाओं का सम्मान माला पहनाकर किया। उपर्युक्त विषय राज्य सरकार की गाइड लाइन की पालना करते हुए मनाया गया।

विद्यालय में छत का पंखा भेंट किया

जालोर-स्थानीय राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,लालपोल के शारीरिक शिक्षक दलपतसिंह आर्य की प्रेरणा से कारीगर का कार्य करने वाले भगाराम मेघवाल ने विद्यालय के लिए एक छत्त पंखा भेंट किया। संस्था प्रधान सुरेन्द्र सिंह परमार व संन्तोष माथुर ने बताया कि विद्यालय के ऑफिस के लिए पंखा भेंट करने वाले भगाराम ने एक पंखा देने की घोषणा की है। संस्थाप्रधान ने आभार जताया। इस मौके पर कृष्ण गोपाल व दलपतसिंह आर्य उपस्थित थे।

भामाशाह सम्मान समारोह एवं प्रतिभावान छात्रा सम्मान समारोह का आयोजन

प्रतापगढ़- दिनांक 26 अगस्त 2020 को राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रतापगढ़ में भामाशाह सम्मान समारोह एवं प्रतिभावान छात्रा सम्मान समारोह कैलाश चंद्र जोशी सेवानिवृत्त उपनिदेशक टीएडी. उदयपुर के मुख्य आतिथ्य एवं युगल बिहारी दाधीच मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़ की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि किशन लाल कोली जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (माध्यमिक) प्रतापगढ़, रामप्रसाद चर्मकार मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़, सुधीर बोरा अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़, दीपक श्रीवास्तव शाखा प्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया प्रतापगढ़, उत्सव जैन पूर्व पार्षद, राकेश पालीवाल पूर्व पार्षद एवं एसडीएमसी. सदस्य, उपेन्द्र शर्मा भामाशाह थे। स्वागत उद्बोधन दिलीप

कुमार मीणा ने किया। श्री कैलाश जी जोशी ने अपने उद्बोधन बताया कि विद्यालय बोर्ड परीक्षा परिणाम में निरंतर गुणात्मक एवं मात्रात्मक दृष्टि से उन्नति कर रहा है। श्री किशन लाल कोली जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (माध्यमिक) प्रतापगढ़ ने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने के लिए विद्यालय स्टाफ को बधाई दी। श्री सुधीर वोरा ने बालिका विद्यालय के भौतिक परिवेश में सकारात्मक परिवर्तन की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए स्वर्गीय प्रधानाचार्य श्रीमती विमला शर्मा को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यकम में अध्यक्ष श्री युगल बिहारी दाधीच ने श्रीमती विमला शर्मा के निधन पर शोक प्रकट करते हुए बताया कि उनकी कार्यशैली उत्कृष्ट श्रेणी की थी। वे विद्यालय और समाज के विकास के लिए लगातार प्रयासरत रहती थी। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन एवं स्वास्थ्य की ओर ध्यान न देकर विद्यालय विकास में निरंतर प्रयास किया।

विद्यालय में उत्कृष्ट बोर्ड परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वाली स्थानीय विद्यालय की छात्राओं को प्रतीकात्मक रूप से प्रतीक चिह्न देकर अतिथियों के द्वारा सम्मानित किया गया। वर्ष 2020 की बोर्ड परीक्षा में उच्च माध्यमिक कक्षा में कला वर्ग में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली स्थानीय विद्यालय की छात्रा दिशा सालवी 95.2 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। इसी प्रकार दिव्यांशी सोलंकी 94.00, प्रियांशी सालवी 93.80, लक्षिता दवे 90.20, पूजा तेली 89.60 एवं माध्यमिक परीक्षा 2020 में स्थानीय विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली भावना ग्वाला को 78.17 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर अतिथियों द्वारा प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। विद्यालय परिसर में स्थानीय विद्यालय की पूर्व प्रधानाचार्य श्रीमती विमला शर्मा की स्मृति में उनके पति श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा एवं पुत्र श्री उपेन्द्र शर्मा द्वारा राबाउमावि. प्रतापगढ़ के पूरे परिसर में सीसीटीवी का सेट लगवाकर भेंट करने पर उपेन्द्र शर्मा को माला पहनाकर शॉल ओढ़ाकर एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर सभी अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया एवं अतिथियों द्वारा बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित किया। उक्त सीसीटीवी कैमरा सेट लगवाने हेतु श्री दीपक पंचोली प्राध्यापक राबाउमावि. प्रतापगढ़ द्वारा श्रीमती विमला शर्मा के परिवार को प्रेरित किया गया। विद्यालय परिसर में उक्त सीसीटीवी लगवाने का व्यय लगभग 3,10,000 अक्षरे तीन लाख दस हजार रुपये भामाशाह श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा एवं श्री उपेन्द्र शर्मा द्वारा वहन किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं भामाशाह का आभार श्री दीपक पंचोली द्वारा व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री ऋषिकेश पालीवाल के द्वारा किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिवार के श्री दिलीप गुर्जर सिद्धेश्वर जोशी, मनोज कुमार, दीपक कुमावत, असलम खान, मशरूफ अहमद, अंबालाल कलाल, विक्रम सिंह, श्रीमती कल्पना शर्मा, ममता कुँवर, लविका शर्मा, श्यामा डूंगरिया, ममता जैन, सरोज व्यास, उषा दवे, प्रवीणा भाणावत, नाजिमा खान, तारामती गाँधी, संध्या, किरण, हेमा शर्मा, रामकन्या कुमावत, अंजली तेली, डाली कुमारी आदि उपस्थित रहे।

पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस की पूर्व संध्या पर प्रतिभाओं का किया सम्मान

बाड़मेर-नर्मदा देवी मोहन लाल सिंहल राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नेहरू कॉलोनी बालोतरा के परिसर में आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार ने प्रतिभाशाली बालिका भावना जी नगर एवं नव चयनित शारीरिक शिक्षिका सरोज गोदारा का शॉल ओढ़ाकर, संस्थाप्रधान दुदा राम पटेल, शिक्षिका राधा, सुंदर देवी, गंगा परिहार, ललिता ने माला पहनाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर परिहार ने कहा कि नव चयनित शारीरिक शिक्षिका सरोज गोदारा ने कबड्डी एवं कुश्ती में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेकर स्थान प्राप्त किया। वर्तमान में इस विद्यालय की बालिकाओं को खेल के प्रति रुचि जागृत करने एवं उन्हें खेल-खेल में शिक्षा की आयाम सिखाने का प्रयास करने के लिए सदा तत्पर रहने के साथ विद्यालय का नाम रोशन करने का आह्वान किया। बालिका भावना ने विद्यालय की शैक्षिक एवं सह शैक्षिक गतिविधियाँ में भाग लेने में अग्रणी भूमिका निभाने से दूसरी बालक बालिकाएँ भी प्रेरित होकर विद्यालय में सीखें ज्ञान को अपने जीवन में उतारें। प्रधानाध्यापक दुदाराम पटेल ने पुरस्कृत शिक्षक फोरम के जिलाध्यक्ष का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रतिभाओं को तराशने में विद्यालय स्टाफ सदैव प्रयासरत रहता है।

पीईईओ धार की वार्षिक पत्रिका 'नवधारा' का विमोचन

उदयपुर- पीईईओ धार पं. स. बड़गाँव जिला उदयपुर की वार्षिक पत्रिका नवधारा का विमोचन श्रीमान शिवजी गौड़ की अध्यक्षता में किया गया। डॉ. सत्यनारायण सुथार प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. धार ने बताया कि नवधारा वार्षिक पत्रिका में पीईईओ. धार के शिक्षकों, छात्र-छात्राओं की रचनाओं के साथ विद्यालय की वार्षिक गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है। बड़गाँव ब्लॉक में विद्यालय स्तर की अब तक ही यह प्रथम पत्रिका है। इस पत्रिका को बड़गाँव ब्लॉक के सभी विद्यालयों और उदयपुर जिले के सभी उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों तक समस्त ब्लॉक के सीबीईओ साहिबान के माध्यम से पहुँचाने का कार्य किया जाएगा। साथ ही विद्यालय को रोटरी क्लब उदयपुर द्वारा भेंट किया गया टॉयलेट ब्लॉक का लोकार्पण किया गया। श्री प्रदीप जी कुमावत को विद्यालय की तरफ से आभार पत्र भेंट किया गया जिसे श्री दिलीप मेहता द्वारा वाचन किया गया। इसी बीच विद्यालय में भामाशाहों को प्रेरित करने वाले शिक्षक-

शिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया, इनमें श्रीमती रेखा जॉन, सीता शर्मा, नीरज बत्रा, रेखा टाक शामिल हैं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. प्रदीप कुमावत निदेशक आलोक संस्थान, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री भरत जोशी जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक उदयपुर, श्री ओमप्रकाश आमेटा सीबीईओ बड़गाँव और श्री विनोद सनाढ्य एसीबीईओ बड़गाँव की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में पीईईओ धार के सभी संस्थाप्रधान और धार विद्यालय का स्टाफ मौजूद रहा। मंच संचालन रेखा जॉन अध्यापिका और आभार ज्ञापन बेला सोलंकी व्याख्याता द्वारा किया गया।

आपणी लाडो कार्यक्रम के अन्तर्गत मिला सम्बल

डूँगरपुर– आपणी लाडो कार्यक्रम के अन्तर्गत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नन्दौड़ में विद्यालय की 3 छात्राएँ गीता, बबीता, अनिता (परिवर्तित नाम) जो कि कोरोना काल में उपजे आर्थिक संकट से पढ़ाई छोड़कर जा रही थी जिसे संस्थाप्रधान श्री नानूलाल बुनकर ने त्वरित संज्ञान लेते हुए प्राध्यापक श्री धर्मेन्द्र कुमार भट्ट तथा श्री योगेश कुमार जोशी ने अभिभावकों से सम्पर्क कर उनका शैक्षणिक आर्थिक भार विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं द्वारा वहन करने का आश्वासन देते हुए विद्यालय से जोड़ने का पुनीत कार्य किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमान ब्लॉक शिक्षा अधिकारी भेमजी खांट ने की। मुख्य अतिथि श्री प्रकाशचन्द्र पण्ड्या प्राचार्य जैठाना तथा विशिष्ट अतिथि पी.टी.ए. अध्यक्ष श्री अशोक मेहता थे। विपरीत परिस्थितियों के कारण अध्ययन छोड़कर जा रही छात्राओं को विद्यालय से पुनः जोड़ने के कार्य को अतिथियों ने सराहनीय कार्य बताया। इस अवसर पर प्राध्यापक श्री शिवराम मोची एवं सर्वश्री मनोज पंचोली, ज्योति कलासुआ, डायालाल पाटीदार, निरंजना चौहान, लक्ष्मीनारायण डोडीयार, कल्पना पीताम्बर, नीलम जैन, कमलेश जोशी, रमेश पाटीदार, नारायण पुरी गोस्वामी, चेतना मेहता, उर्मिला पण्ड्या, जयश्री चौबीसा, पुष्पसिगांज, लक्ष्मी रोत तथा शक्ति सिंह आदि उपस्थित रहे।

प्रधानाचार्य के प्रयासों से हुआ विद्यालय रेलगाड़ी मय

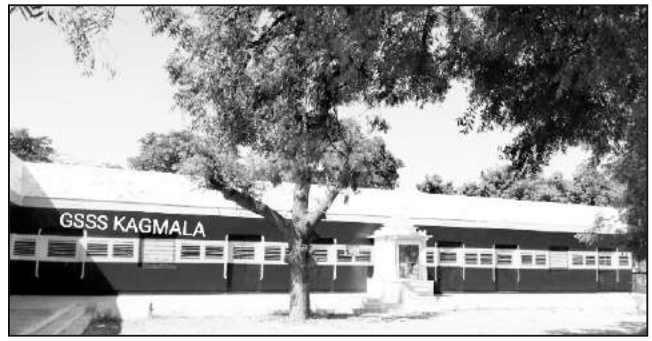

जालोर : रा.उ.मा.वि. कागमाला (रानीवाड़ा) के प्रधानाचार्य एवं भीनमाल निवासी, नेक, कर्मठ, राजकीय विद्यालयों में नवाचारों के अग्रदूत श्री नारायणलाल जीनगर, प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय, कागमाला (रानीवाड़ा) द्वारा कोरोना महामारी मे मिले खाली समय का बेहतरीन सदुपयोग कर विद्यालय कक्षा–कक्षों का सौंदर्यकरण कर रेलगाड़ी का रूप देकर सराहनीय, प्रशंसनीय काम किया है। इस नेक काम के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाओं के साथ शाला प्रांगण में उनका अभिनन्दन किया गया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

आवश्यक सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**

–वरिष्ठ संपादक

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

माई आइएएफ' एप के जरिए स्टूडेंट्स को मिली ऊँची उड़ान

जयपुर– इंडियन एयरफोर्स में कॅरियर बनाना यंगस्टर्स का सपना होता है, लेकिन उचित गाइडेंस और मौकों से वंचित स्टूडेंट्स आगे नहीं बढ़ पाते हैं। अब इंडियन एयरफोर्स ने कॅरियर और अपने इतिहास की झलक को सहेजे 'माई आइएएफ' लाँच की है। ये मोबाइल एप्लीकेशन पिछले महीने आई थी, वहीं सीबीएसई. ने एक सर्कुलर जारी कर स्कूल और स्टूडेंट्स दोनों का ध्यान इस एप की ओर दिलाया है। एप में वायुसेना में भर्ती से संबंधित हर आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गई है। एप में एयरफोर्स में भर्ती प्रक्रिया, ट्रेनिंग और सैलेरी सहित कई जानकारियाँ मिलेंगी। साथ ही वीर सपूतों की कहानियाँ और भारतीय वायुसेना के इतिहास की जानकारी भी शामिल है। एप के जरिए वायुसेना की लाइफ को देखने का मौका मिलेगा। वहीं साहसिक स्टोरी के साथ स्टूडेंट्स वर्चुअल उड़ान भी देख सकेंगे।

ज्यादा मास्क पहनने से फेफड़ों को नुकसान नहीं

नई दिल्ली– फेफड़े खराब होने के डर से अगर आप मास्क नहीं पहन रहे तो यह खबर आपके लिए है। ज्यादा देर तक मास्क पहनने से भी फेफड़ों पर कोई खास नकारात्मक असर नहीं होता। इतना ही नहीं, अगर आप मास्क का इस्तेमाल करते हैं तो आपको फेफड़ों से जुड़ी बीमारी समेत कई समस्याओं से राहत भी मिलती है। थोरेक्स मेडिकल जनरल में रिपोर्ट प्रकाशित एक स्टडी में यह खुलासा हुआ है। सियामी यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने स्वस्थ मनुष्यों में ऑक्सीजन और कार्बन डाई ऑक्साइड के स्तर में परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं का अध्ययन किया। इसमें मास्क पहनने से पहले क्रोनिक ऑब्सटु फ्टिव पल्मोनारो डिसीजन से ग्रसित लोगों को भी शामिल किया गया।

नई बैटरी में होगी छह गुना अधिक पावर, 5 गुना एनर्जी

कैलिफोर्निया: टेस्ला के संस्थापक एलन मस्क ने ऐसी तकनीक लाने की घोषणा की है जो टेस्ला बैटरी को अधिक किफायती और शक्तिशाली बना देगी। 'बैटरी डे' इवेंट में लाइव प्रस्तुति में मस्क ने नई बड़ी बेलनाकार बैटरी के बारे में बताया। दावा किया गया कि नई बैटरी 5 गुना अधिक एनर्जी, 6 गुना अधिक पावर और 16 फीसदी अधिक ड्राइविंग रेंज प्रदान करेगी। हालांकि, तकनीक को लागू होने में कुछ साल लगेंगे। कंपनी की खुद की 'टैबलेस' बैटरी बनाने की योजना है। इससे वाहनों की रेंज और पावर में सुधार होगा। नई बैटरियों का उत्पादन इन-हाउस किया जाएगा। मस्क ने कहा कि टेस्ला उत्तरी अमरीका में अपनी बैटरी के लिए एक नया कैथोड प्लांट बनाएगा, जो आपूर्ति शृंखला की लागत को घटाएगा।

दो घंटे में देगी रिपोर्ट, स्वदेशी आरटी-पीसीआर किट

बेंगलूरु– कोरोना जाँच के लिए वैज्ञानिकों ने पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से आरटी–पीसीआर डायग्नोस्टिक किट विकसित की है जो पारंपरिक आरटी–पीसीआर किट की तुलना में कम समय में अधिक सटीक परिणाम देती है। भारतीय विज्ञान संस्थान (आइआइएससी) के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित इस डायग्नोस्टिक किट को भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) ने अनुमोदित भी कर दिया है। अब आइसीएमआर अधिकृत कोविड–19 लैब्स में इसका उपयोग हो सकेगा। 'ग्लोबल–टीएमडायग्नोस्टिक किट' को आइआइएससी की ही एक स्टार्टअप कंपनी इक्वाइन बायोटेक ने तैयार किया है। इस किट का विकास करने वाले आइआइएससी में जैव रसायन विभाग के प्रोफेसर उत्पल टाटू ने 'पत्रिका' को बताया कि कोरोना जाँच के मामले में यह किट 100 फीसदी विशिष्टता के साथ सटीक परिणाम देने वाली है। इसका उपयोग काफी आसान होगा और वर्तमान आरटी–पीसीआर की तुलना में काफी किफायती भी।

जमीन और सौर ऊर्जा के समन्वय से तैयार हो सकेगी सस्ती बिजली

अहमदाबाद– भूतापीय ऊर्जा से बिजली पैदा करने के बाद अब पंडित दीनदयाल पेट्रोलियम यूनिवर्सिटी का भूतापीय उत्कृष्टता केन्द्र (सीईजीई) जमीन से निकलने वाले गर्म पानी के साथ सौर ऊर्जा का समन्वय करके बिजली पैदा करेगा। इसके लिए सोलर–जियो थर्मल हाइब्रिड मॉडल भी डिजाइन कर लिया गया है। इसके जरिए भी बिजली अहमदाबाद जिले के धोलेरा में स्थित स्वामीनारायण मंदिर के पास स्थित भूतापीय ऊर्जा कुएँ पर बने स्टेशन पर पैदा की जाएगी। यहाँ पहले से ही गर्म पानी से बिजली पैदा की जा रही है। जिले का धोलेरा शहर ही एक ऐसा स्थल होगा, जहाँ सौर ऊर्जा और भूतापीय ऊर्जा का समन्वय करके बिजली पैदा की जाएगी। पीडीपीयू के सीईजीई के प्रमुख प्रो. अरबिंद सिरकार के मार्गदर्शन में नम्रता बिष्ट, डॉ. कीर्ति यादव, अभिजीत निरंतरे ने यह मॉडल डिजाइन किया है।

विज्ञान में महिलाओं की कामयाबी का परचम

नई दिल्ली– वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) ने देश के सबसे बड़े विज्ञान पुरस्कार में इस बार तीन महिला वैज्ञानिकों को अवॉर्ड दिए हैं ये जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, इंजीनियरिंग, गणित, मेडिसिन और भौतिकी के क्षेत्र में दिए जाते हैं। इसमें ओडिशा की महिला वैज्ञानिक डॉ. ज्योतिर्मयी दाश को रसायन विज्ञान में वर्ष 2020 के शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इसके अलावा जीव विज्ञान में डॉ. वत्सला थिरुमलाई और मेडिकल साइंस में डॉ. बुथरा अतीक को यह पुरस्कार दिया गया है। डॉ. ज्योतिर्मयी ने आईआईटी कानपुर से पीएचडी. की है और इन्हें प्रतिष्ठित अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट फैलोशिप और मैरी क्यूरी फैलोशिप भी मिली थी। वहीं डॉ. वत्सला थिरुमलाई नेशनल सेंटर फॉर बायोलॉजिकल साइंसेज से जुड़ी हुई है। उसके अलावा मेडिकल साइंस में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए अवॉर्ड लेने वाली डॉ. बुशरा अतीक कानपुर के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से हैं।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। -व. संपादक

जोधपुर

रा.उ.मा.वि नारनाडी में श्री अशोक सिंह राजपुरोहित द्वारा 5,51,000 रुपये की लागत से जल मंदिर का निर्माण करवाया गया साथ ही 125 पौधों का रोपण कर सुन्दर वाटिका निर्माण किया गया।

चूरू

रा. कनोई बा.उ.मा.वि. सुजानगढ़ में श्री बजरंग लाल, श्री महावीर प्रसाद तापड़िया के ट्रस्ट 'सुप्रीम फाउण्डेशन' की तरफ से दो प्रयोगशालाओं (गृह विज्ञान, रसायन विज्ञान) का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 14 लाख रुपये।

डूँगरपुर

श्री रतन भाई पटेल रा.उ.मा.वि. साबली ब्लॉक बिछीवाड़ा को श्री नानचन्द गरसिया (से.नि. व.अ.) द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर निम्न सामग्री भेंट की। (1) दो विजीटर चेयर लागत 10,000 रुपये, (2) 9 विजीटर चेयर जिसकी लागत 18,000 रुपये, (3) एक अलमारी जिसकी लागत 12,000 रुपये, (4) एक अलमारी जिसकी लागत 11,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. नन्दौड़, सागवाड़ा** को विद्यालय विकास हेतु निम्न शिक्षकों से राशि इस प्रकार प्राप्त हुई- श्री डायालाल पाटीदार (व.शा.शि.) से 25,000 रुपये, श्रीमती जयश्री चौबीसा से 15,000 रुपये, श्रीमती चेतना मेहता (कनिष्ठ सहायक) से 11,000 रुपये, श्रीमती पुष्पा सेंगाडा से 5,000 रुपये, श्रीमती उर्मिला पण्डया से 5,000 रुपये, श्रीमती लक्ष्मीरोत से 5,000 रुपये, श्री दिव्या सुथार से 21,000 रुपये, श्री शिवराम मोची (व्याख्याता) से 5,100 रुपये, इस प्राप्त राशि से विद्यालय का रंग-रोगन, छात्र-छात्राओं हेतु T.T. टेबल, माइक सैट तथा विद्यालय की साज सजावट आदि कार्य पूरे कराए गए।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि. सनवाड़ को श्री थावरचन्द बापना से 5 कैम्पर पेयजल हेतु प्राप्त जिसकी लागत 3,000 रुपये, श्री चन्द्र प्रकाश दुग्गड़ से ऑटोमेटिक पियोन बेल प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, श्री बाबूलाल चेचाणी से विद्यार्थियों हेतु स्टेशनरी प्राप्त जिसकी लागत 1,100 रुपये, श्री सुरेश आचार्य द्वारा जल मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया गया जिसकी लागत 5,000 रुपये, श्रीमती पुष्पा जोशी से विद्यार्थियों हेतु स्टेशनरी प्राप्त जिसकी लागत 1,300 रुपये, श्री सुरेन्द्र हरिप्रसाद यादव से एक छत का पंखा प्राप्त जिसकी लागत 1,300 रुपये।

टोंक

रा.उ.मा.वि. लवादर को प्रधानाचार्य श्री जयकुमार जैन व समस्त स्थानीय शाला स्टाफ द्वारा एक 14 खाने वाली लॉकर सिस्टम सहित एक लोहे की अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 10,600 रुपये।

अलवर

रा.प्रा.वि. रामशाला, गढ़ी, पं.स. थानागाजी को श्री रमेश चन्द सैनी (मुनीम जी) से एक लेपटॉप H.P. का प्राप्त जिसकी लागत 31,400 रुपये, एक प्रिंटर H.P. का प्राप्त जिसकी लागत 18,599 रुपये।

राजसमंद

रा.उ.मा.वि. धानीन, पं.स. कुम्भलगढ़ में सोहन लाल चोरड़िया द्वारा विद्यालय मरम्मत व रंग रोगन का कार्य करवाया गया जिसकी लागत 5,00,000 रुपये, सत साहिब ग्रुफ-धानीन से विद्यालय में टेबल व कुर्सी भेंट जिसकी लागत 1,31,000 रुपये, श्री बाबू सिंह दसाणा-धानीन से विद्यालय में केमरे व L.E.D. लगाई जिसकी लागत 1,00,000 रुपये, श्री देवीलाल चोरड़िया से विद्यालय को सात लोहे की अलमारियाँ भेंट जिसकी लागत 70,000 रुपये, श्री ख्याली लाल तातेड़ धानीन द्वारा 60,000 रुपये की लागत से विद्यालय को 300 बूट मौजे व 30 कुर्सियाँ भेंट की, श्री महेन्द्र कुमार तातेड़ से 300 छात्र/छात्राओं को विद्यालय ड्रेस भेंट जिसकी लागत 50,000 रुपये, श्रीमती अनिता पालीवाल (अध्यापिका) से विद्यालय से स्टूल व बेंच भेंट विद्यालय को जिसकी लागत 41,500 रुपये, श्रीमती कान्ता पंवार (अध्यापिका) से विद्यालय में वाटर कूलर भेंट जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री नरेन्द्र तातेड़ धानीन से विद्यालय को T.T. टेबल भेंट जिसकी लागत 15,000 रुपये, श्री शंकरलाल जोशी (व्याख्याता) द्वारा 15,000 रुपये की लागत से प्रोजेक्टर भेंट, श्री केशुलाल सोनी धानीन से विद्यालय को पानी का पम्प सेट भेंट जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री किशनलाल तातेड़ धानीन से विद्यालय विकास हेतु 11,000 रुपये भेंट, श्री नाथूलाल सोनी से विद्यालय के छत पंखे भेंट जिसकी लागत 11,000 रुपये, समस्त ग्रामवासी द्वारा विद्यालय को फर्नीचर भेंट जिसकी लागत 51,000 रुपये।

अजमेर

रा.मा.वि. पालड़ी जवाजा को श्री अर्जुन सिंह (से.नि. सैनिक) से एक वाटर कूलर प्राप्त जिसकी लागत 22,400 रुपये, श्री प्रताप सिंह (से.नि. सैनिक) से ऑटोमेटिक बैल (घंटी) प्राप्त जिसकी लागत 14,500 रुपये, श्री राम सिंह (सरपंच) से 10 प्लास्टिक कुर्सियाँ प्राप्त जिसकी लागत 6,000 रुपये, विद्यालय स्टाफ द्वारा 10 प्लास्टिक की कुर्सियाँ प्राप्त जिसकी लागत 5,000 रुपये, भामाशाहों द्वारा 08 छत पंखे विद्यालय को भेंट, श्री किशन सिंह (अध्यापक) द्वारा विद्यालय में माँ सरस्वती की मूर्ति भेंट व मंदिर का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 20,000 रुपये।

सिरोही

रा.उ.मा.वि. भीमाना को श्री हेमेन्द्र सिंह देवड़ा (सरपंच भीमाना) द्वारा विद्यालय के छात्र-छात्राओं हेतु 25 सैट लोहे के टेबल-स्टूल बनवाकर भेंट की जिसकी लागत 25,000 रुपये, समस्त शाला स्टाफ द्वारा 25 सैट लोहे के टेबल-स्टूल विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 25,000 रुपये।

श्रीगंगानगर

महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय श्री विजयनगर को निम्न भामाशाहों ने वित्तीय सहयोग श्री संतोष सिंह कामरा (पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष श्री विजयनगर) से 2,10,000 रुपये, श्री महावीर प्रसाद मिढा (समाजसेवी, विजयनगर) से 2,00,000 रुपये की लागत से प्याऊ का निर्माण कराया गया, श्री राजाराम गुर्जर (समाजसेवी विजयनगर) से 1,21,000 रुपये की लागत से स्मार्ट क्लास रूम का निर्माण कराया गया, श्री किशन सिंह कामरा (समाजसेवी) से 1,21,000 रुपये से स्मार्ट क्लास रूम का निर्माण, सर्वश्री अशोक कुमार मिढा, प्रवीण नागपाल (समाजसेवी), दलीप विश्नोई, जयवीर सिंह मलिक से प्रत्येक से 1,00,000-1,00,000 रुपये सहयोग हेतु प्राप्त, सर्वश्री गुलशन मिढा, सुनील मिढा, शंकर लाल अग्रवाल प्रत्येक से 71,000-71,000 रुपये सहयोग हेतु प्राप्त, सर्वश्री डोगर दास, हरिचन्द मिढा, बीरबल चुघ, दीपक मिढा, महावीर लखोटिया, सोहन लाल नागपाल प्रत्येक से 51,000-51,000 रुपये सहयोग हेतु प्राप्त।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : नवम्बर, 2020 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

लॉकडाउन से पहले हमारे विद्यालय प्रांगण की झलकियाँ

चित्रवीथिका : नवम्बर, 2020

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह–2020, दिनांक 15 अक्टूबर 2020 को जयपुर में सम्पन्न हुआ, की झलकियाँ (यह समारोह वर्चुअली आयोजित किया गया।)

राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित शिक्षक सम्मान में ब्लॉक स्तर पर अध्यापिका श्रीमती रेखा राउमावि पहाड़ी और व्याख्याता श्री हरीश चौधरी राउमावि सोमका का सम्मान एसडीएम. साहब श्रीमान मनीष जी एवं सीबीईओ. श्रीमान नत्था सिंह करते हुए।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आडसर (लूणकरणसर) में सामुहिक रूप से शालाप्रांगण में कोरोना महामारी से बचाव व जागरूकता की शपथ लेते हुए प्रधानाचार्य श्री रामजीलाल घोड़ेला एवं समस्त शाला स्टॉफ।

संघवी हंसराज कानाजी मालगाँव वाला राउमावि. जीरावल, रेवदर में भामाशाह श्री कानाराम भूराजी चौधरी (हाल-दिल्ली) द्वारा विद्यालय को तीस हजार रुपए का इनवर्टर सेट मय डबल बैटरी शाला प्रांगण में भेंट करते हुए भामाशाह एवं शाला परिवार के सदस्य।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर के स्टॉफ ने शुक्रवार को विद्यालय सहित शिवनगर ग्राम में कोरोना से बचाव व जागरूकता के लिए बिना मास्क घर से बाहर नहीं निकलें के पोस्टर लगाए, पोस्टर के साथ प्रधानाचार्य रूपेंद्रसिंह शेखावत, व्याख्याता गोवर्धन लाल, वरिष्ठ अध्यापक मोहरसिंह मीना एवं अन्य साथी।